शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

https://epaper.shubhamsandesh.net

रांची, मंगलवार 11 नवंबर 2025 ● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 07, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 211 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	27.0	14.3
डालटनगंज	28.6	11.3
धनबाद	29.0	14.0

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

ब्रीफ न्यूज

पीएम ने कवि आंदे श्री के निधन पर शोक जताया

नई दिल्ली । पीएम नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को तेलंगाना के प्रखर कवि और विचारक आंदे श्री के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निधन से हमारे सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य में एक गहरा शून्य पैदा हो गया है. पीएम ने एक्स पोस्ट में कहा, आंदे श्री के निधन से हमारे सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य में एक गहरा शून्य पैदा हो गया है. उनके विचार तेलंगाना की आत्मा को प्रतिबिंबित करते थे. एक प्रखर कवि और विचारक होने के नाते, वे लोगों की आवाज़ थे.

अभिनेता धर्मेंद्र की बिगड़ी तबीयत, भर्ती

मुंबई। लाखों-करोड़ों दिलों पर राज करने वाले 60-70 के दशक के लोकप्रिय अभिनेता धर्मेंद्र की तबीयत बिगड़ गई है. उन्हें मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया है. धर्मेंद्र को उम्र संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है. उनके फैंस लगातार उनके जल्दी ठीक होने के लिए प्रार्थनाएं कर रहे हैं. उनके करीबी दोस्त अवतार गिल ने धर्मेंद्र की सेहत पर अपडेट देते हुए बताया है कि उन पर दवाइयों का असर भी नहीं हो रहा है.

रोहिंग्या समुदाय के 11 लोगों की मौत

क्वालालंपुर । थाईलैंड-मलेशिया सीमा के पास रोहिंग्या समुदाय के लोगों को ले जारी एक नाव के डूब जाने से लगभग 11 लोगों की मौत हो गई है. मलेशियाई अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी. उन्होंने बताया कि एक नाव में रोहिंग्या समुदाय के लगभग 70 लोग सवार थे, जबकि एक अन्य नाव में करीब 230 यात्री सवार थे. हालांकि दूसरी नाव के यात्रियों के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है.

अमेरिका में शटडाउन खत्म होने के संकेत

वाशिंगटन । अमेरिकी इतिहास के अब तक के सबसे लंबे सरकारी शटडाउन पर ट्रंप प्रशासन के लिए अच्छी खबर है. सीनेट के कई डेमोक्रेट्स ने व्हाइट हाउस से कुछ महत्वपूर्ण घोषणा होने पर सरकार के पक्ष में मतदान करने की इच्छा जताई है. वार्ता में शामिल एक व्यक्ति के अनुसार, यह इस बात का संकेत है कि शटडाउन से मंडराया संकट दूर होने के करीब है. सीएनएन चैनल की रिपोर्ट के अनुसार, इस समझौते में जनवरी तक धन के लिए नया अस्थायी उपाय शामिल होगा.

भोपाल में मॉडल की संदिग्ध हालात में मौत

भोपाल । मध्य प्रदेश के भोपाल में 21 साल की मॉडल खुशी अहिरवार की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया है. मृतका के परिजनों ने उसके बॉयफ्रेंड कासिम अहमद पर हत्या का आरोप लगाया है. फिलहाल पुलिस ने खुशी का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया है. परिवारजन शव को लेकर सागर जिले के मंडी बामोरा गांव चले गए हैं, जहां युवती का अंतिम संस्कार किया जाएगा. वहीं, आरोपी कासिम पुलिस हिरासत में है और उससे पूछताछ की जा रही है.

बिहार विस चुनाव : आज दूसरे चरण का मतदान, दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर

20 जिलों की 122 सीटों पर होगी वोटिंग

संवाददाता ।पटना

बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान आज होने जा रहा है. राज्य के 20 जिलों की 122 विधानसभा सीटों पर मतदाता अपने-अपने प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला करेंगे. पहले चरण के मतदान के बाद अब सभी की निगाहें इस चरण पर टिकी हैं, जिसे चुनाव का निर्णायक दौर माना जा रहा है. क्योंकि आज होनेवाली चुनाव से ही यह साफ हो जाएगा कि नीतीश की सत्ता बचेगी या तेजस्वी राज्य के नए सीएम बन पाएंगे.

एनडीए और महागठबंधन के बीच कांटे की टक्कर

दूसरे चरण में एनडीए के 122 और महागठबंधन के 126 प्रत्याशी मैदान में हैं. एनडीए की ओर से भाजपा के 53, जदयू के 44, लोजपा (आर) के 15, हम के छह और राष्ट्रीय लोक मोर्चा के चार उम्मीदवार किस्मत आजमा रहे हैं. वहीं, महागठबंधन की तरफ से राजद के 70, कांग्रेस के 37, वीआईपी के आठ, सीपीआई के चार, सीपीआई (एमएल) के छह और सीपीआई के एक प्रत्याशी मैदान में हैं. इसके अलावा जनसुराज पार्टी ने भी इस चरण में 120 प्रत्याशी उतारे हैं, जिससे मुकाबला कई सीटों पर त्रिकोणीय हो गया है.

इन दिग्गज नेताओं की प्रतिष्ठा लगी दांव पर

इस चरण में कई वरिष्ठ नेताओं और मंत्रियों की प्रतिष्ठा दांव पर है. एनडीए खेमे से पूर्व उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद, रेणु देवी, मंत्री विजेंद्र यादव, नीतीश मिश्रा, प्रेम कुमार, कृष्णनंदन पासवान, प्रमोद कुमार, शीला मंडल, लेशी सिंह और जयंत राज के राजनीतिक भविष्य का फैसला मतदाता करेंगे. वहीं विपक्षी खेमे में राजद के वरिष्ठ नेता उदय नारायण चौधरी, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम, रालोमो प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा की पत्नी स्नेहलता, कांग्रेस विधायक दल के नेता शकील अहमद खान और भाकपा माले के नेता महबूब आलम जैसे दिग्गजों की साख भी इसी मतदान से तय होगी.

तेजस्वी यादव बोले बदलाव निश्चित है

राजद नेता तेजस्वी यादव ने दूसरे चरण के मतदान से पहले एनडीए पर तीखा हमला बोला. उन्होंने कहा कि पहले चरण के बाद सत्ताधारी खेमे में गमगीन माहौल है और जनता इस बार बदलाव के मूड में है. तेजस्वी ने आरोप लगाया कि दो गुजराती बिहार को उपनिवेश बनाना चाहते हैं, लेकिन बिहार की जनता संविधान विरोधी ताकतों को करारा जवाब देगी. उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों से निष्पक्षता बरतने की अपील करते हुए कहा कि लोकतंत्र की डकैती रोकने के लिए बिहार तैयार है.

सम्राट का पलटवार : एनडीए की जीत तय

दूसरी ओर भाजपा के वरिष्ठ नेता और तारापुर से प्रत्याशी सम्राट चौधरी ने दावा किया कि जनता पूरी तरह एनडीए के साथ है और 11 नवंबर को होने वाले मतदान में गठबंधन को प्रचंड बहुमत मिलेगा. उन्होंने मतदाताओं से भारी संख्या में मतदान करने की अपील की और कहा कि "विकास, सुरक्षा और स्थिरता के लिए एनडीए की सरकार जरूरी है. चौधरी ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा, यह लोकतंत्र है, राजतंत्र नहीं. बिहार की जनता तय करेगी कि राजा कौन बनेगा, कोई परिवार नहीं.

घाटशिला उपचुनाव की सारी तैयारियां पूरी आज सुबह 7 से शाम 5 बजे तक मतदान

- सीसीटीवी व वेबकास्टिंग से होगी सख्त निगरानी : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी

शुभम संदेश ।रांची

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने बताया कि 45-घाटशिला विस उपचुनाव की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं. मतदान मंगलवार को सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक होगा. उन्होंने बताया कि सोमवार को सभी मतदान दलों को मतदान केंद्रों के लिए रवाना कर दिया गया. शाम तक सभी टीमों ने अपने-अपने मतदान केंद्रों पर पहुंचकर रिपोर्ट कर दी है. रवि कुमार ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था की गई है.

सभी मतदान केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, जिनसे वेबकास्टिंग के माध्यम से मतदान की रियल-टाइम निगरानी की जा रही है. यह निगरानी भारत निर्वाचन आयोग, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय, जिला निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय और आरओ कार्यालय से की जा रही है.

उन्होंने बताया कि घाटशिला उपचुनाव को शांतिपूर्ण और पारदर्शी ढंग से संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी की गई हैं. साथ ही उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि वे सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे के बीच अपने मतदान केंद्रों पर पहुंचकर मतदान करें और दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करें. इस अवसर पर संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुबोध कुमार, नोडल पदाधिकारी देव दास दत्ता सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे.

लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास कार में धमाका, कई वाहनों के उड़े परखच्चे, पूरे देश में हाई अलर्ट घोषित

ब्लास्ट में 10 लोगों की मौत, 24 घायल

एजेंसी ।नयी दिल्ली

- देशभर में हाई अलर्ट घोषित, दिल्ली से मुंबई, यूपी और गुरुग्राम तक सुरक्षा एजेंसियां सतर्क; आतंकी साजिश की आशंका से मचा हड़कंप

देश की राजधानी दिल्ली सोमवार की शाम एक भीषण धमाके से दहल उठी. लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास खड़ी एक कार में हाई इंटेंसिटी ब्लास्ट हुआ, जिससे आसपास की कई गाड़ियों में आग लग गई. इस धमाके में 10 लोगों की मौत हो गई, जबकि करीब 24 लोग घायल बताए जा रहे हैं. चश्मदीदों के मुताबिक, विस्फोट की आवाज इतनी तेज थी कि आसपास की इमारतों के शीशे तक टूट गए.

फायर ब्रिगेड और पुलिस की त्वरित कार्रवाई : सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया गया. दिल्ली पुलिस, एनएसजी और एनआईए की टीमें घटनास्थल पर पहुंचकर जांच में जुटी हैं. शुरुआती रिपोर्ट के अनुसार, यह हाई इंटेंसिटी ब्लास्ट था और मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है. पुलिस ने आसपास के इलाके को पूरी तरह सील कर दिया है और लाल किले तथा चांदनी चौक मार्केट को सुरक्षा कारणों से बंद कर दिया गया है.

देशभर में अलर्ट, मुंबई और यूपी में सख्त निगरानी : इस धमाके के बाद पूरे देश में सुरक्षा एजेंसियों की नींद उड़ गई है. मुंबई पुलिस ने शहर के सभी संवेदनशील इलाकों में नाकेबंदी और पेट्रोलिंग बढ़ा दी है. रेलवे स्टेशन, मॉल, धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है.

उधर, उत्तर प्रदेश सरकार ने भी हाई अलर्ट घोषित कर दिया है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस को सभी जिलों में कड़ी निगरानी और ड्रोन मॉनिटरिंग के निर्देश दिए हैं. नोएडा, गाजियाबाद और लखनऊ में भीड़भाड़ वाले इलाकों में गहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है. सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं.

नोएडा और गुरुग्राम में कड़ी चौकसी : दिल्ली से सटे नोएडा और गुरुग्राम में पुलिस ने सुरक्षा घेरा मजबूत कर दिया है. सेक्टर-18, मेट्रो स्टेशनों और बाजारों में संदिग्ध वाहनों और व्यक्तियों की तलाशी ली जा रही है. सीसीटीवी कैमरों से 24 घंटे निगरानी की जा रही है.

आतंकी साजिश के संकेत : सूत्रों के अनुसार, धमाके से पहले सुरक्षा एजेंसियों ने देशव्यापी अभियान चलाकर एक बड़ी आतंकी साजिश का खुलासा किया था. गुजरात, जम्मू-कश्मीर और हरियाणा में कई संदिग्ध आतंकियों की गिरफ्तारी के साथ हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए थे. जांच में सामने आया है कि कश्मीर के अनंतनाग मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर अदील अहमद राथर को भी गिरफ्तार किया गया है, जिस पर आतंकी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है. फिलहाल दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षा बढ़ा दी गई है, और एजेंसियां इस धमाके की कड़ी को हालिया आतंकी नेटवर्क से जोड़कर जांच कर रही हैं.

अमित शाह ने ली धमाके की जानकारी

इस पूरी घटना की जानकारी दिल्ली पुलिस के कमिश्नर सतीश गोलछा ने देश के गृह मंत्री अमित शाह को फोन पर दी है. गृह मंत्रालय की पूरी घटना पर नजर बनी हुई है. गृह मंत्रालय ने जांच के आदेश दे दिए हैं. वहीं प्रधानमंत्री ने अमित शाह से इस धमाके पर बात की है और घटना की जानकारी ली है.

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने किया अंतरराष्ट्रीय आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़

सात आतंकी गिरफ्तार, 3 टन आईईडी सामग्री बरामद

एजेंसी ।श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए अंतरराष्ट्रीय आतंकी नेटवर्क का पर्दाफाश किया है. यह नेटवर्क प्रतिबंधित संगठनों जैश-ए-मोहम्मद और अंसार गजवत-उल-हिंद से जुड़ा हुआ था. पुलिस ने कई राज्यों में संयुक्त अभियान चलाकर इस नेटवर्क से जुड़े सात प्रमुख आतंकियों को गिरफ्तार किया है. उनके कब्जे से भारी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद और करीब 2,900 किलो (तीन टन के करीब) विस्फोटक सामग्री बरामद की गई है.

कई राज्यों में हुई संयुक्त छापेमारी : जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इस अभियान में हरियाणा पुलिस और उत्तर प्रदेश पुलिस के साथ मिलकर श्रीनगर, अनंतनाग, गंदरबल, शोपियां, फरीदाबाद और सहारनपुर में तलाशी अभियान चलाया. तलाशी के दौरान आतंकियों के पास से दो पिस्तौल, दो एके-सीरीज राइफलें, एके-56, एके-क्रिंकोव राइफल, एक चाइनीज स्टार पिस्तौल और एक बेरेटा पिस्तौल बरामद की गईं. इसके अलावा आईईडी निर्माण में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक सर्किट, टाइमर, रिमोट कंट्रोल, तार, बैटरी, रासायनिक पदार्थ और धातु के टुकड़े भी जब्त किए गए.

जैश के पोस्टर से खुला नेटवर्क का सुराग : यह कार्रवाई 19 अक्टूबर को श्रीनगर के बनपोरा नौगाम क्षेत्र में जैश-ए-मोहम्मद के धमकी भरे पोस्टर मिलने के बाद शुरू की गई. इस मामले में नौगाम पुलिस स्टेशन में एफआईआर संख्या 162/2025 दर्ज की गई थी, जिसमें यूएपीए, शस्त्र अधिनियम और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धाराएं लगाई गईं. जांच के दौरान सुरक्षाबलों को एक संगठित 'व्हाइट कॉलर' आतंकी नेटवर्क के अस्तित्व का पता चला, जिसमें शिक्षित पेशेवर और छात्र शामिल थे जो कथित तौर पर पाकिस्तान और अन्य विदेशी आकाओं से संपर्क में थे.

धर्मार्थ कार्यों के नाम पर जुटाया जा रहा था धन : पुलिस जांच में खुलासा हुआ है कि यह नेटवर्क सामाजिक या धर्मार्थ कार्यों के नाम पर शिक्षण संस्थानों और पेशेवर संगठनों के माध्यम से धन जुटाता था. इस धन का इस्तेमाल हथियार और विस्फोटक खरीदने, रसद व्यवस्था करने के लिए किया जा रहा था.

बड़े हमले की साजिश नाकाम : अधिकारियों ने बताया कि बरामद किए गए 2,900 किलो विस्फोटक इस बात की ओर संकेत करते हैं कि आतंकी किसी बड़े हमले की तैयारी में थे. उन्होंने कहा कि जांच के सभी पहलुओं-फंडिंग, सप्लाई चैन और नेटवर्क कनेक्शन पर तेजी से काम किया जा रहा है, ताकि इस पूरे आतंकी तंत्र को जड़ से समाप्त किया जा सके.

सभी आतंकी जैश-ए-मोहम्मद और अंसार गजवत-उल-हिंद से जुड़े हुए हैं

बरामद हथियार

फरीदाबाद से एक और आतंकी गिरफ्तार

360 किलो अमोनियम नाइट्रेट सहित हथियार बरामद

एजेंसी ।फरीदाबाद

हरियाणा के फरीदाबाद जिले के धौज गांव से दिल्ली, हरियाणा एवं जम्मू-कश्मीर पुलिस के संयुक्त ऑपरेशन में डा. मुजम्मिल नामक एक आतंकवादी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ एवं हथियार बरामद किए गए हैं. पुलिस आयुक्त सत्येंद्र कुमार गुप्ता ने सोमवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि आतंकवादी डा. मुजम्मिल फरीदाबाद के ही धौज गांव स्थित अलफलाह यूनिवर्सिटी में पढ़ाता था. यह आतंकवादी 10 दिन पहले पकड़ा गया था. आतंकवादी से पूछताछ के बाद पुलिस ने उसकी निशानदेही पर जहां उसने कमरा किराए पर लिया था, वहां से 360 किलोग्राम रसायनिक पदार्थ बरामद किया है, जो अमोनियन नाइट्रेट बताया जा रहा है. इसके अलावा एक कैननकाप राइफल, पांच मैगजीन, एक पिस्टल, भारी मात्रा में कारतूस बरामद किए गए हैं. आठ बड़े सूट केस, चार छोटे सूट केस, बाल्टी, टाइमर बैटरी के साथ, रिमोट, वॉकी-टॉकी सेट, इलेक्ट्रिक वायर सहित अन्य सामान बरामद किया गया. पुलिस कमिश्नर ने पत्रकार वार्ता में बताया कि पिछले कई दिनों से यह जांच चल रही थी और 10 दिन पहले संयुक्त ऑपरेशन में गिरफ्तारी हुई. इसमें कुल दो आतकंवादी पकड़े गए, जिनमें एक डा. मुजम्मिल को फरीदाबाद पुलिस ने और आदिल अहमद को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने सहारनपुर से पकड़ा.

गिरफ्तार डॉक्टर मुजम्मिल

विस्फोटक बरामद

लखनऊ से महिला डॉक्टर शाहीन को किया गिरफ्तार

नयी दिल्ली । जम्मू-कश्मीर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में फैले एक बड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए सुरक्षा एजेंसियों ने लखनऊ की एक महिला डॉक्टर को गिरफ्तार किया है. इस मॉड्यूल से जुड़े कई लोगों की गिरफ्तारी के बाद पुलिस को भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार मिले हैं. गिरफ्तार महिला डॉक्टर की कार से एके-47 राइफल भी बरामद की गई है.

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 : बदलते बिहार में जनमत ने दिखाई नई दिशा

विकास की राजनीति ने तोड़ा जातीय समीकरणों का किला

शुभम संदेश डेस्क

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 राज्य की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हो रहा है. कभी जातिगत गणित की प्रयोगशाला कहे जाने वाले बिहार में अब मतदाताओं की प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं. इस बार का रण विकास, सुशासन, महिला भागीदारी और रोजगार जैसे ठोस मुद्दों पर केंद्रित दिख रहा है. एनडीए जहां अपने पुराने साथियों के साथ नई ऊर्जा के साथ मैदान में उतरा है, वहीं महागठबंधन के भीतर की खींचतान और तीसरे मोर्चे 'जन सुराज' की एंट्री ने समीकरणों को नया मोड़ दे दिया है.

जात नहीं, जनमत की नई दिशा : बिहार की राजनीति में अब तक चुनावी जीत-हार का पैमाना जातीय संतुलन रहा है, लेकिन 2025 का चुनाव उस परंपरा को तोड़ता दिख रहा है. ईबीसी (36%), ओबीसी (27%) और दलित (20%) अब भी निर्णायक भूमिका में हैं, लेकिन इस बार महिला और युवा मतदाता नए गेम चेंजर बनकर उभरे हैं. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महिला आरक्षण नीति और छात्रा प्रोत्साहन योजनाओं ने बड़ी संख्या में महिलाओं को एनडीए के पक्ष में सक्रिय किया है.

भरोसे की राजनीति : पिछले चुनावों में जहां वादे ही प्रमुख थे, वहीं इस बार सरकार की योजनाओं के सीधे लाभार्थियों तक पहुंचने का असर दिख रहा है. महिला पेंशन, छात्रवृत्ति, वृद्धावस्था पेंशन और कृषि राहत योजनाओं ने लोगों में भरोसा जगाया है. यही कारण है कि भरोसे की राजनीति इस चुनाव की सबसे बड़ी ताकत बन गई है.

प्रचार का नया स्वरूप : इस बार चुनावी माहौल में लाउडस्पीकर से ज्यादा मोबाइल की गूंज सुनाई दे रही है. पार्टियों ने डिजिटल प्रचार पर पूरा जोर दिया है. भाजपा, जदयू और राजद—तीनों ने सोशल मीडिया सेल को जिलास्तर पर एक्टिव किया है. अब कार्यकर्ता पर्चे बांटने के बजाय व्हाट्सऐप ग्रुप, इंस्टाग्राम रील और लाइव वीडियो से मतदाताओं तक पहुंच रहे हैं. राजनीतिक पंडितों का कहना है कि इस चुनाव में डिजिटल कनेक्ट बूथ स्तर के प्रचार जितना ही अहम हो गया है.

मतदान व्यवहार में बड़ा बदलाव : पहले चरण के मतदान में बिहार ने 65.08 प्रतिशत की रिकॉर्ड भागीदारी दर्ज की है, जो राज्य के इतिहास में अब तक का सबसे ऊंचा आंकड़ा है. उल्लेखनीय है कि महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही. ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की लंबी कतारें दिखीं, जबकि शहरी क्षेत्रों में युवा वोटरों का जोश देखने को मिला. चुनाव आयोग ने मतदाता सूची से 65 लाख फर्जी या निष्क्रिय नाम हटाए, जिससे कई सीटों पर पुराने जातीय समीकरणों में बदलाव आया है.

जातीय राजनीति फीकी, विकास केंद्र में : राजनीतिक विश्लेषक चन्द्रमा तिवारी का मानना है कि यह बिहार का पहला चुनाव है जिसमें जातीय पहचान से ज्यादा प्रशासनिक रिपोर्ट कार्ड चर्चा में है. जनता अब यह पूछ रही है- "स्कूल में शिक्षक हैं या नहीं, अस्पताल में दवा मिलती है या नहीं." समाजशास्त्री रंगनाथ तिवारी कहते हैं कि महिला वोटर अब मौन नहीं हैं, वे 'सेक्रेट वोटर' बन चुकी हैं और कई सीटों पर नतीजे पलट सकती हैं.

योगी ने की घोषणा

यूपी के सभी स्कूलों में वंदेमातरम का गायन हर दिन होगा अनिवार्य

लखनऊ/गोरखपुर । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को गोरखपुर में एकता पदयात्रा के दौरान प्रदेश भर के स्कूलों के लिए बड़ा एलान किया है. मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी के सभी स्कूलों में 'वंदे मातरम्' का नियमित व अनिवार्य गायन सुनिश्चित किया जाएगा. योगी ने कहा कि राष्ट्र से बढ़कर कुछ भी नहीं, और 'वंदे मातरम्' हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय भावना का प्रतीक है. वंदे मातरम का विरोध करने का कोई मतलब नहीं है. राष्ट्र से बढ़कर कुछ भी नहीं है. कुछ लोगों के लिए मत और मजहब ऊपर है. उन्होंने याद दिलाया कि 'वंदे मातरम्' के 150 साल पूरे हो चुके हैं और इसे बदलने का कोई प्रयास सफल नहीं होगा.

पटना में बड़ा हादसा

घर की छत गिरने से एक ही परिवार के 5 लोगों की मौत

संवाददाता ।पटना

पटना जिले के दानापुर दियारा अंतर्गत अकीलपुर थाना क्षेत्र के मानस पंचायत स्थित मानस नया पानापुर गांव में घर की छत गिरने से एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गई. स्थानीय लोगों कहना है कि घर के सभी लोग सो रहे थे, अचानक छत भरभरा कर गिर गई. इसमें तीन बच्चे समेत पांच लोगों की मौत हो गई. इधर, छत गिरने की आवाज सुनते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और तुरंत पुलिस को जानकारी दी. पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से कड़ी मशक्कत के बाद शवों को बाहर निकाला और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया.

मरने वालों की पहचान बबलू (36) उसकी पत्नी रोशन खातून (32) बेटी रुखसार (12) चांदनी (2) और बेटे चांद (10) के रूप में हुई. घटना के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है. इधर, स्थानीय लोगों कहना है कि कुछ साल पहले ही बबलू को यह मकान आवास योजना के तहत मिला था. बबलू आर्थिक तंगी के कारण मकान की मरम्मत नहीं करवा पा रहा था.

झारखंड अनुसूचित जनजाति शिक्षण उत्थान कार्यक्रम : जेईई व नीट परीक्षाओं की निःशुल्क आवासीय कोचिंग के लिए www.jharkhandshikshanutthan.com पर जाकर आवेदन करें

शुभम संदेश। रांची

झारखंड सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक और पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के माध्यम से "झारखंड अनुसूचित जनजाति शिक्षण उत्थान कार्यक्रम" प्रारंभ किया जा रहा है. योजना का उद्देश्य राज्य के मेधावी एवं प्रतिभाशाली अनुसूचित जनजाति (एसी) वर्ग के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं जेईई (इंजीनियरिंग) और नीट (मेडिकल) की तैयारी हेतु विश्वस्तरीय और पूर्णतः निःशुल्क कोचिंग सुविधा उपलब्ध कराना है. यह योजना झारखंड सरकार की एक दूरदर्शी पहल है, जिसका लक्ष्य है कि राज्य के जनजातीय विद्यार्थी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें और डॉक्टर और इंजीनियर बनने के अपने सपनों को साकार करें.

झारखंड सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के माध्यम से "झारखंड अनुसूचित जनजाति शिक्षण उत्थान कार्यक्रम" प्रारंभ किया जा रहा है. यह जानकारी परियोजना निदेशक, समेकित विकास जनजाति अभिकरण रांची सह अध्यक्ष संचालन समिति अनुसूचित जनजाति शिक्षण उत्थान कार्यक्रम झारखंड सरकार, रांची संजय कुमार भगत ने दी. बताया कि इस योजना का उद्देश्य राज्य के मेधावी एवं प्रतिभाशाली अनुसूचित जनजाति (एसी) वर्ग के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं जेईई (इंजीनियरिंग) तथा नीट (मेडिकल) की तैयारी हेतु विश्वस्तरीय एवं पूर्णतः निःशुल्क कोचिंग सुविधा उपलब्ध कराना है.

आवश्यक दस्तावेज़ : निशुल्क कोचिंग के लिए आवेदन करते समय विद्यार्थियों को अनुसूचित जनजाति का जाति प्रमाण पत्र, अंकतालिका, आधार कार्ड, पासपोर्ट आकार का फोटो देना जरूरी है.

कैसे करें आवेदन : आवेदन की प्रक्रिया : इच्छुक एवं पात्र विद्यार्थी ऑनलाइन या ऑफ़लाइन दोनों माध्यमों से आवेदन कर सकते हैं. ऑनलाइन आवेदन www.jharkhandshikshanutthan.com पर जाकर कर सकते हैं.आवश्यक विवरण एवं दस्तावेज अपलोड कर फॉर्म सबमिट करें.

ऑफ़लाइन आवेदन : आवेदन फॉर्म वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा विभागीय कार्यालयों / नजदीकी आईटीडीए या जिला कल्याण कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है. फॉर्म को सही जानकारी एवं आवश्यक दस्तावेज़ों के साथ संबंधित जिला कल्याण कार्यालय या आईटीडीए कार्यालय में जमा किया जा सकता है.

चयन प्रक्रिया : दस्तावेज़ सत्यापन एवं मेरिट/स्क्रीनिंग टेस्ट के आधार पर पात्र विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा. चयनित विद्यार्थियों को पोर्टल या विभागीय सूचना माध्यम से कोचिंग आरंभ तिथि एवं रिपोर्टिंग निर्देश प्रदान किए जाएंगे.

आवेदन करने की अंतिम तिथि : 19 नवम्बर 2025 शाम 5 बजे तक आवेदन जमा करने की तिथि निर्धारित की गई है. अधिक जानकारी के लिए विद्यार्थी www.jharkhandshikshanutthan.com वेबसाइट पर उपलब्ध दिशानिर्देश पढ़ सकते हैं या 9251664830 पर संपर्क कर सकते हैं. विद्यार्थियों की सुविधा के लिए क्यूआर कोड दिया गया है, जिसे अपने मोबाइल से स्कैन करके भी विद्यार्थी सीधे वेबसाइट पर पहुंच सकते है.

300 विद्यार्थियों को आवासीय कोचिंग की सुविधा

इस योजना के अंतर्गत कुल 300 विद्यार्थियों को हिंदपीढ़ी, रांची स्थित मल्टीपर्पस हॉल-कम-ट्रेनिंग सेंटर में आवासीय कोचिंग सुविधा प्रदान की जा रही है.कार्यक्रम का संचालन मोशन एजुकेशन, कोटा, जो झारखंड सरकार द्वारा चयनित संस्था है के सहयोग से किया जा रहा है.

सुविधाएं पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं : चयनित विद्यार्थियों को कई तरह की सुविधाएं पूर्णतः निःशुल्क प्रदान की जाती हैं. इसके तहत विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा उच्चस्तरीय कोचिंग कराई जाती है. आवासीय सुविधा (लड़के/लड़कियों के लिए अलग-अलग छात्रावास) की सुविधा भी निःशुल्क ही उपलब्ध करायी जाती है. चयनित विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री एवं ई-कॉन्टेंट युक्त टैबलेट मुहाया कराया जाता है, साथ ही पुस्तकालय एवं डिजिटल अध्ययन सुविधा भी उपलब्ध करायी जाती है.

पात्रता के लिए क्या-क्या हैं मापदंड : विद्यार्थी झारखंड राज्य के अनुसूचित जनजाति (एसटी) वर्ग से संबंधित हों, साथी ही झारखंड का स्थायी निवासी हो. विद्यार्थी के माता-पिता नियमित सरकारी सेवा में न हों .जो विद्यार्थी अन्य समान सरकारी योजनाओं के अंतर्गत कोचिंग का लाभ ले रहे हैं, वे पात्र नहीं होंगे.

कांग्रेस ने उजागर की वोट चोरी की साजिश

राहुल गांधी ने पेश किए फर्जी मतदाताओं के सबूत, झारखंड में 16 लाख हस्ताक्षर जुटाए

शुभम संदेश। रांची

कांग्रेस पार्टी ने देश के सामने वोट चोरी की साजिश को उजागर करते हुए आरोप लगाया है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) लोकतंत्र को कमजोर करने की दिशा में काम कर रही है. राहुल गांधी ने पूरे सबूतों के साथ जाली मतदाताओं, फर्जी पते, जोड़े गए फर्जी नाम और हटाए गए वास्तविक मतदाताओं की सूची जनता के बीच प्रस्तुत की है.प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू ने बताया कि हरियाणा में कुल दो करोड़ मतदाताओं में से लगभग 25 लाख फर्जी मतदाता पाए गए हैं. उन्होंने कहा कि मतदान का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है, जो लोकतंत्र की नींव को मजबूत करता है, परंतु भाजपा इसे वोट चोरी के जरिये हाईजैक करने की कोशिश कर रही है.

राजू ने बताया कि झारखंड में मतदाता जागरूकता बढ़ाने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया गया, जिसमें लगभग 16 लाख नागरिकों ने भाग लिया. इस अभियान का अभियान का मुख्य उद्देश्य चुनाव सुधार हेतु भारत निर्वाचन आयोग से पांच मांगों पर कार्रवाई करने को लेकर है. इसमें प्रमुख रूप से स्पष्ट मतदाता सूची फोटो सहित देना, ताकि इससे मतदाता,उसके आवास,मतदाता का संपूर्ण विवरण पता चल सके, वोटर लिस्ट को स्कैन किया जा सके. लेकिन चुनाव आयोग ने इस प्रक्रिया को बंद कर दिया, इसका प्रमुख उद्देश्य भाजपा को मौका देने के लिए है, ताकि केंद्रित तरीके से फर्जी मतदाताओं को जोड़ने व कांग्रेस समर्थित मतदाताओं को हटाने और एक ही व्यक्ति का अनेक जगहों पर नाम जोड़ना है. चुनाव आयोग हटाए या जोड़े गए मतदाताओं की सूची समय पर प्रकाशित करे, ताकि राजनीतिक दल या उम्मीदवार पूरी छानबीन कर मतदाताओं का अधिकारों की सुरक्षा कर सकें. बिहार में लाखों मतदाताओं को एसआइआर के तहत मतदाता सूची से बाहर किया गया, लेकिन उनकी आपत्तियों को दर्ज करने की कोई प्रक्रिया नहीं है. इस प्रक्रिया में उचित सुधार की आवश्यकता है और मतदाता सूची का प्रकाशन चुनाव के अंतिम क्षणों में करने की बजाय पहले करना चाहिए. प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने बताया कि "वोट चोर गद्दी छोड़" अभियान 15 सितंबर से 15 अक्टूबर तक चलाया गया था, जिसे व्यापक जनसमर्थन के कारण 10 दिन और बढ़ाया गया. त्योहारों के बावजूद यह अभियान सफल रहा और झारखंड में अपेक्षा से अधिक हस्ताक्षर संग्रहित किए गए. उन्होंने कहा कि सांगठनिक कारणों से लक्ष्य पूरा नहीं हो सका अन्यथा संख्या और अधिक होती. संवाददाता सम्मेलन में सह प्रभारी सीरीबेला प्रसाद, कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव, उपनेता राजेश कच्छप, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, विधायक ममता देवी व सुरेश बैठा, पूर्व राज्यसभा सांसद प्रदीप कुमार बलमुचु, प्रदेश कांग्रेस महासचिव राकेश सिन्हा, सतीश पॉल मुंजनी, सोनाल शांति सहित कई वरिष्ठ नेता उपस्थित थे.

एक नजर

कोयला तस्करी में पुलिस-उग्रवादी गठजोड़, ऊपर तक पहुंच रही है अवैध कमाई : बाबूलाल मरांडी

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने राज्य में बढ़ती कोयला तस्करी को लेकर झारखंड सरकार पर तीखा हमला बोला है.मरांडी ने आरोप लगाया कि राज्य के पुलिस अधिकारी और उग्रवादी संगठन मिलकर कोयले की अवैध तस्करी को अंजाम दे रहे हैं. उन्होंने कहा कि झारखंड में कोयले का यह "काला खेल" अब सिर्फ धनबाद, बोकारो और रामगढ़ तक सीमित नहीं है, बल्कि पलामू और लातेहार जैसे जिलों तक फैल चुका है. मरांडी के अनुसार, प्रतिदिन हजारों टन कोयला पलामू के रास्ते बिहार के डेहरी और उत्तर प्रदेश के बनारस तक पहुंचाया जा रहा है.उन्होंने दावा किया कि इस अवैध कारोबार से होने वाली करीब 15 करोड़ रुपये प्रतिमाह की कमाई का बंटवारा उग्रवादी संगठनों और पुलिस अधिकारियों के बीच होता है. मरांडी ने सवाल उठाया कि अगर पूरे राज्य में चल रही कोयला तस्करी की कुल काली कमाई का अनुमान लगाया जाए, तो यह आंकड़ा रोज़ाना करोड़ों रुपये तक पहुंच सकता है.उन्होंने कहा, "शायद झारखंड ही ऐसा राज्य है जहां अपराधी, पुलिस और सत्ता का गठजोड़ मिलकर राज्य के संसाधनों को खुलेआम लूट रहा है. न जाने यह सरकार राज्य को और कौन-कौन से दिन दिखाएगी.

रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन को मिली अनुमति, 17 से तिरुपति बालाजी मंदिर के करेंगे दर्शन

रांची। रांची के पूर्व उपायुक्त (डीसी) छवि रंजन को राज्य से बाहर जाने की अनुमति मिल गई है। सोमवार को रांची पीएमएलए (प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) कोर्ट ने उनकी याचिका स्वीकार करते हुए उन्हें तमिलनाडु के तिरुपति बालाजी मंदिर जाने की अनुमति प्रदान की.छवि रंजन ने कोर्ट में याचिका दायर कर 17 नवंबर से 21 नवंबर तक तमिलनाडु यात्रा की अनुमति मांगी थी. कोर्ट ने यह अनुमति कुछ शर्तों के साथ दी है.दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें इस शर्त पर जमानत दी है कि वे ट्रायल अवधि के दौरान केस से जुड़े गवाहों को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करेंगे और अदालत की अनुमति के बिना झारखंड से बाहर नहीं जाएंगे. इन्हीं शर्तों का पालन करते हुए उन्होंने यात्रा के लिए कोर्ट से अनुमति प्राप्त की है.

एक्सएलआरआई के सभी छात्रों को मिला समर इंटर्नशिप प्लेसमेंट

रांची/जमशेदपुर।। एक्सएलआरआइ ने एक बार फिर अपनी उत्कृष्ट प्लेसमेंट परंपरा को कायम रखते हुए समर इंटर्नशिप प्लेसमेंट (एसआईपी) 2025-27 में शत-प्रतिशत सफलता हासिल की है. इस वर्ष संस्थान के कुल 583 विद्यार्थियों को देश और विदेश की 114 प्रतिष्ठित कंपनियों ने कुल 584 ऑफर दिए हैं. इनमें से 28 कंपनियां पहली बार एक्सएलआरआइ की प्लेसमेंट प्रक्रिया में शामिल हुईं. सर्वाधिक स्टाइपेंड 3.5 लाख रुपये प्रति माह का ऑफर जेपी मॉर्गन ने दिया, जबकि औसत स्टाइपेंड 1.6 लाख रुपये और मीडियन स्टाइपेंड 1.55 लाख रुपये रहा. संस्थान की ओर से सोमवार को विज्ञप्ति जारी कर बताया गया कि 38 प्रतिशत विद्यार्थियों को दो लाख रुपये प्रति माह से अधिक और 81 प्रतिशत विद्यार्थियों को एक लाख रुपये प्रति माह से अधिक का स्टाइपेंड मिला. शीर्ष 5 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत स्टाइपेंड 2.49 लाख रुपये प्रतिमाह दर्ज किया गया. बड़ी संख्या में छात्रों को कंसल्टिंग, फाइनेंस, मार्केटिंग, जनरल मैनेजमेंट, ऑपरेशंस, एनालिटिक्स और एचआर जैसे विविध क्षेत्रों में अवसर प्राप्त हुए. शीर्ष रिक्रूटर्स में आदित्य बिड़ला समूह, एक्सेंचर स्ट्रैटेजी, अमेज़ॉन, अमेरिकन एक्सप्रेस, बजाज ऑटो और बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप शामिल रहे.

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री ने रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ को भेजा पत्र

राज्य सरकार के स्तर पर लंबित है राढू बहुउद्देशीय जलाशय योजना

शुभम संदेश। रांची

रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने सितम्बर में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर. पाटिल से मुलाकात कर, रांची के सिल्ली प्रखंड के राढू बहुउद्देशीय जलाशय योजना (जो 1980 में अस्तित्व में आई थी) की स्थिति से अवगत कराया था. इस योजना पर विशेष ध्यान देते हुए, इसे आरंभ कराने का आग्रह किया था. इस आलोक में केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल ने रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ को पत्र लिखा है. अपने पत्र में पाटिल ने कहा है कि ऐसी सिंचाई परियोजनाओं पर राज्य सरकार का विशेष योगदान होता है. केंद्र सरकार तकनीकी सहायता और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है. केंद्र स्तर पर इस पर यथोचित कार्यवाही की जा चुकी है. इसके पुनः शुभारंभ करने के लिए राज्य स्तर पर डीपीआर व अन्य मूल्यांकन के कार्य लंबित हैं. राज्य सरकार द्वारा पहल करने के बाद ही इस पर आगे की कार्यवाही की जा सकती है.

किसानों को होगा लाभ, जलसंकट का समाधान होगा

रक्षा राज्य मंत्री ने सीएम को लिखा पत्र, विशेष हस्तक्षेप का आग्रह

केंद्रीय मंत्री के जवाब आने के बाद रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखा है. अपने पत्र में सेठ ने कहा है कि यह सिंचाई परियोजना क्षेत्र की जनता के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है. सबसे बड़ी बात है कि इस परियोजना के लागू होने से किसी प्रकार का कोई विस्थापन नहीं होगा और सिल्ली व राहे क्षेत्र में जल संकट का समाधान भी हो जाएगा. क्षेत्र के किसानों को सिंचाई का लाभ मिलेगा. रोजगार के कई नए अवसर भी सृजित होंगे. सेठ ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया है कि परियोजना पर विशेष ध्यान देते हुए इसे आरंभ करने की दिशा में हस्तक्षेप करने की कृपा करें.

परियोजना से कोई विस्थापन नहीं, सिल्ली -राहे प्रखंड के सैकड़ों गांवों को लाभ होगा

स्वर्णरेखा नदी की सहायक राढू नदी पर आधारित यह परियोजना क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगी. इस परियोजना में बांध का निर्माण, पाइपलाइन सिंचाई प्रणाली, पर्याप्त सिंचाई व्यवस्था, जल विद्युत उत्पादन, पेयजल आपूर्ति एवं औद्योगिक उपयोग हेतु जल की व्यवस्था की जानी है. परियोजना का महत्वपूर्ण और सकारात्मक पक्ष यह है कि इससे कोई विस्थापन नहीं होगा. इसके साथ ही इस योजना के संचालित होने से सिल्ली एवं राहे प्रखंड के सैकड़ों गांव को दीर्घकालिक लाभ भी प्राप्त होगा. वर्तमान समय में इस योजना को प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत एआईबीपी घटक के अंतर्गत शामिल किया गया है, जिसमें 60% केंद्रांश का प्रावधान है.

मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम की तैयारियां शुरू : सभी जिलों के उप निर्वाचन पदाधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

पदाधिकारी फील्ड विजिट कर मतदाता सूची के मैपिंग की समस्याओं का निरीक्षण व निराकरण करें : के रवि कुमार

शुभम संदेश। रांची

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने कहा है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राज्य में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम की तैयारियों के लिए निर्देश मिला है. उन्होंने कहा कि पदाधिकारी आगामी एसआईआर में सुविधा के लिए वर्तमान मतदाता सूची का 2003 के मतदाता सूची से अधिक से अधिक मैपिंग करना सुनिश्चित करें. जितने अधिक मतदाताओं की 2003 की मतदाता सूची से पैरेंटल मैपिंग हो जाती है, उन्हें इन्यूम्यूरेशन फॉर्म भरने में आसानी हो सकेगी. वे सोमवार को निर्वाचन सदन से ऑनलाइन माध्यम से सभी जिलों के उप निर्वाचन पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे.

किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा है कि निर्वाचन से जुड़े कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जा सकती है. यदि निर्वाचन के कार्य में कोई बीएलओ आनाकानी करते हैं, तो उनकी रिपोर्ट विभाग को भेजें एवं निलंबन की प्रक्रिया करते हुए नए बीएलओ नियुक्त करें. कहा है कि सभी स्तर के पदाधिकारियों को निर्वाचन हेतु आवंटित कार्य को करना अनिवार्य है, इसमें किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जा सकती है.

मतदाता सूची की मैपिंग की बिंदुवार समीक्षा : सीईओ ने समीक्षा के क्रम में सभी जिलों की मतदाता सूची की मैपिंग की बिंदुवार समीक्षा की. समीक्षा के क्रम में जमीनी स्तर पर आ रही परेशानियों को समाप्त करने हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिए. उन्होंने सभी पदाधिकारियों को फील्ड विजिट कर मतदाता सूची मैपिंग की समस्याओं का निरीक्षण करते हुए उसका समाधान करने के कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए. इस अवसर पर उप निर्वाचन पदाधिकारी धीरज कुमार ठाकुर द्वारा मतदान केंद्रों के युक्तिकरण हेतु पीपीटी के माध्यम से सभी पदाधिकारियों को जानकारी उपलब्ध कराई गई.

मौके पर संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुबोध कुमार, नोडल पदाधिकारी देवदास दत्ता, उप निर्वाचन पदाधिकारी धीरज ठाकुर, अवर निर्वाचन पदाधिकारी सुनील कुमार सहित मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के पदाधिकारी उपस्थित थे.

एसआईआर में सुविधा के लिए वर्तमान मतदाता सूची का 2003 की मतदाता सूची से अधिक से अधिक मैपिंग करना सुनिश्चित करें

क्रिकेट खेलो झारखंड अंतर्गत राज्य स्तरीय क्रिकेट की खुली चयन प्रक्रिया 12 नवंबर को

रांची के साउथ रेलवे कॉलोनी मैदान में सुबह 8 बजे से चयन प्रक्रिया

- भाग लेने वाले खिलाड़ियों की जन्मतिथि 01 जनवरी 2007 या उसके बाद की होनी चाहिए

शुभम संदेश। रांची

स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखंड सरकार के अधीन झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के तत्वावधान में "खेलो झारखंड" कार्यक्रम अंतर्गत राज्य स्तरीय अंडर-19 बालक एवं बालिका स्कूली क्रिकेट खुली चयन प्रक्रिया का आयोजन मंगलवार 12 नवंबर को साउथ रेलवे कॉलोनी मैदान, चुटिया, रांची में सुबह 8 बजे से किया जाएगा. राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन ए. सोरेंग ने बताया कि इस चयन ट्रायल के माध्यम से चयनित खिलाड़ियों के लिए 21 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाएगा. प्रशिक्षण शिविर के दौरान अंतिम झारखंड राज्य अंडर-19 क्रिकेट टीम का गठन किया जाएगा, जो आगामी राष्ट्रीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता (एसडीएफआई) में राज्य का प्रतिनिधित्व करेगी. अंडर-19 बालक वर्ग की प्रतियोगिता पांच से नौ दिसंबर 2025 तक रोहतक (हरियाणा) में और अंडर-19 बालिका वर्ग की प्रतियोगिता एक जनवरी से 6 जनवरी 2026 तक मध्य प्रदेश में होगी.

राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी ने बताया कि इस ट्रायल का मुख्य उद्देश्य विद्यालय स्तर पर खेल प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करना है, ताकि झारखंड के विद्यार्थी खेल क्षेत्र में अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर सकें और आगे चलकर देश का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम बनें. विभाग का लक्ष्य है कि विद्यालयों के माध्यम से खेलों की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए, जिससे विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास हो सके.

- रजिस्ट्रेशन का समय सुबह 7 से 8 बजे तक निर्धारित
- सफेद यूनिफॉर्म और स्पोर्ट्स शू पहनकर आना अनिवार्य

ट्रायल में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की जन्मतिथि 01 जनवरी 2007 या उसके बाद की होनी चाहिए. इस ट्रायल में राज्य के सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं. ट्रायल हेतु एलिजिबिलिटी फॉर्म में खिलाड़ी का फोटो में प्रधानाध्यापक या प्रभारी का हस्ताक्षर अनिवार्य है. एलिजिबिलिटी फॉर्म जिला शिक्षा पदाधिकारी के कार्यालय या जिला क्रिकेट संघ से प्राप्त किया जा सकता है.

खिलाड़ियों को ट्रायल के दिन अपने साथ आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, पिछले वर्ष का अंक पत्र एवं बोनाफाइड प्रमाण पत्र अनिवार्य रूप से लाना है. ट्रायल हेतु रिपोर्टिंग एवं रजिस्ट्रेशन का समय सुबह 7 से 8 बजे तक निर्धारित किया गया है. इसके बाद किसी भी खिलाड़ी का रजिस्ट्रेशन स्वीकार नहीं किया जाएगा. ट्रायल लेदर बॉल से लिया जाएगा, अतः खिलाड़ियों को अपना पूरा क्रिकेट किट साथ लाना आवश्यक है.सभी खिलाड़ियों को ट्रायल के लिए सफेद यूनिफॉर्म (व्हाइट ड्रेस) और स्पोर्ट्स शू पहनकर आना अनिवार्य है.

मुख्यमंत्री की नजरों में जो बैल है, वह लाखों जनता का चुना हुआ जनप्रतिनिधि है

बैल के सिंग की मार झेलने को तैयार रहे राज्य की हेमंत सरकार: आदित्य साहू

शुभम संदेश। घाटशिला/रांची

झारखंड प्रदेश भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष सांसद आदित्य साहू ने सोमवार को मुख्यमंत्री के बैल वाले बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी. साहू ने कहा कि बैल गांव,गरीब,किसान की पहचान है. करोड़ों लोगों के पेट भरने में सहयोगी है. लेकिन बहुत ऐसे लोग होते हैं, जो बैल से काम लेने के बाद उसके महत्व को भूल जाते हैं. मालिक होने का अहंकार सिर चढ़कर बोलने लगता है.साहू ने कहा कि गांव,गरीब ,किसान जनता के लिए बैल ही उपयोगी है, इसलिए आज जनता उसी बैल के साथ खड़ी है.

कार्यकारी अध्यक्ष साहू ने कहा कि लेकिन आज बैल गुस्से में है, आक्रोशित है और जनता उसी के साथ खड़ी है.कहा कि मुख्यमंत्री जिसको बैल बोलकर अपमानित करते हैं, वह राज्य का पूर्व मुख्यमंत्री है, आदिवासी समाज का अगुआ हैं, लाखों जनता के लंबे समय से जन प्रतिनिधि हैं. साहू ने कहा कि बैल के अपमान का बदला जनता लेने को तैयार है. अब हेमंत सरकार को बैल के सिंग की मार झेलने को तैयार रहना चाहिए.

लूट और झूठ से ऊब चुकी है राज्य की जनता

साहू ने कहा कि जनता लूट और झूठ से ऊब चुकी है. आम आदमी परेशान है. स्वास्थ्य,शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है. बालू, पत्थर,खान खनिज की लूट मची है. युवा शक्ति हताश और निराश है. महिलाएं भयभीत हैं. कहा कि राज्य की बेटियां अब विद्यालयों में भी असुरक्षित हो गई हैं. ऐसी हालत से राज्य को उबारने के लिए जनता कमर कस कर तैयार हो चुकी है.

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

रांची, मंगलवार 11 नवंबर 2025 I मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 07, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 211 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

झारखंड मंत्रिमंडल की बैठक 12 नवंबर को, प्रशासनिक प्रस्तावों पर हो सकती है चर्चा

रांची। झारखंड सरकार की मंत्रिपरिषद की बैठक बुधवार 12 नवंबर को अपराह्न 3 बजे से झारखंड मंत्रालय, प्रोजेक्ट भवन स्थित मंत्रिपरिषद कक्ष में होगी. इस संबंध में मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग ने आधिकारिक सूचना जारी कर दी है. बैठक में कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श और निर्णय लिए जाने की संभावना है. इनमें राज्य की विकास योजनाओं की समीक्षा, विभागवार कार्यों की प्रगति, नई नीतियों की स्वीकृति और प्रशासनिक नियुक्तियों से संबंधित प्रस्ताव प्रमुख रूप से शामिल हो सकते हैं.इसके अतिरिक्त, राज्य में चल रही कल्याणकारी योजनाओं, आगामी बजट सत्र की तैयारियों और कानून-व्यवस्था की स्थिति पर भी चर्चा होने की उम्मीद है.

सड़क किनारे खून से सना कपड़ा और बंदूक मिलने से फैली सनसनी

सिमडेगा। सिमडेगा के ठेठईटांगर थाना क्षेत्र में सड़क किनारे खून से सना कपड़ा और उसमें लिपटी बंदूक मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई. बंदूक सिमडेगा-ओडिशा बॉर्डर के बोड़ाखाड़ा के पास मिली, तो स्थानीय लोगों ने यह सूचना तुरंत पुलिस को दी. पुलिस मौके पर पहुंची और खून से सने कपड़े में लिपटी बंदूक को अपने कब्जे में ले लिया. दोनों को जब्त कर कोर्ट में पेश कर दिया गया. पुलिस ने बताया कि कपड़े को फोरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि खून इंसानी है या किसी जानवर का.प्राथमिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि कपड़े में खून उसी व्यक्ति का हो सकता है, जिसकी हत्या इस बंदूक से की गई हो. पुलिस ने सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए जांच शुरू कर दी है और बंदूक के मालिक का पता लगाने में भी जुटी हुई है.

जमशेदपुर में हथियारबंद बदमाशों ने ठेकेदार के ऑफिस से 10 लाख लूटे

जमशेदपुर। जमशेदपुर के बिरसानगर थाना क्षेत्र में सोमवार दोपहर एक बड़ी लूट की घटना सामने आई. टाटा कमिंस और टाटा मोटर्स के ठेकेदार एपी सिंह के ऑफिस में दोपहर 2 बजे तीन हथियारबंद अपराधियों ने हमला किया और 10 लाख रुपए की रकम लूटकर फरार हो गए. सूचना के अनुसार, यह रकम लेबर पेमेंट के लिए ऑफिस में रखी गई थी. उसी समय बाइक पर सवार तीन बदमाश कार्यालय पहुंचे और वहां मौजूद दो स्टाफ को बंदूक की नोक पर धमकाते हुए कैश बैग छीना. लूट के दौरान बदमाशों ने हवाई फायरिंग भी की, जिससे आसपास के लोग डर गए और इलाके में दहशत फैल गई.घटना की सूचना मिलने के बाद बिरसानगर थाना पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी. पुलिस अधिकारी आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रहे हैं और अपराधियों की पहचान में जुटे है. पुलिस ने कहा कि आरोपियों को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा और घटना की जांच लगातार जारी है.स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर दहशत का माहौल है.

सस्ती मांगुर मछलियों के चक्कर में थाई मांगुर की होती है खरीदारी

देसी या थाई...जायके ने सेहत की नैया डुबाई

रिजवान शम्स

जागरुकता ही बचाव

धनबाद (शुभम संदेश)। कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों को बांटने वाली थाईलैंड की मांगुर मछली के खिलाफ आपके प्रिय दैनिक अखबार शुभम संदेश मुहिम जारी है. इस खतरनाक मछली के तस्करों की हर जानकारी प्रिय पाठकों को दी जा रही है. इस मछली होने वाले नुकसानों से लेकर इस काले धंधे के साम्राज्य के छोटे मोहरे से लेकर बड़े शातिरों को बेनकाब किया जा रहा है. इस कारोबार को रोकने वाले हाथों में ही क्यों और कितने की हथकड़ी बंधी है, इसका भी भंडाफोड़ किया गया. आज की किस्त जागरूकता पर आधारित होगी. तो फिर चलिए, करते हैं इस खतरनाक मछली से खुद का बचाव.

देश-विदेश के वैज्ञानिकों ने इस मछली को कैंसर के वाहक के रूप में प्रमाणित किया है. न सिर्फ कैंसर बल्कि लीवर और किडनी जैसे महत्वपूर्ण अंगों को भी इस मछली का सेवन स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त कर सकता है और इसका सेवन करने वालों को किडनी और लीवर की लाइलाज समस्या से सामना हो सकता है. ऐसे में इस खतरनाक मछली के प्रति जागरूकता ही बचाव है. जी हां, सीधे तौर पर आप इस मछली का सेवन नहीं करें, क्योंकि स्वाद के चक्कर में जान गंवाने की नौबत आ सकती है.

इस मछली की बिक्री लेकर एक और तरीका ये भी है कि देसी मांगुर और थाई मांगुर को मिक्स कर तस्कर खुले बाजार में बेच रहे हैं और मुनाफा कमा रहे हैं. ऐसे में यह पकड़ पाना काफी मुश्किल है कि कौन देसी है और कौन थाई. क्योंकि जब थाई मांगुर छोटे साइज में होते हैं, तब ही इन्हें बिक्री के लिए निकाल लिया जाता है और यही कारण है कि इस साइज में देसी और थाई के बीच फर्क करना मुश्किल है. तस्करों को रोकना है कि तो आप देसी और थाई दोनों में कोई भी मछली नहीं खरीदें, यकीनी तौर पर तस्करों का यह तरीका कुछ दिनों में फेल हो जाएगा.

लीवर कैंसर के जोखिम को बढ़ाती है थाई मांगुर

इस खतरनाक मछली में जमा मर्करी तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम), किडनी और लीवर को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त करती है. इससे सिरदर्द, थकान, कांपना, स्मृति हानि और लंबे समय में न्यूरोलॉजिकल विकार हो सकते हैं. यह मछली कैंसरकारी मानी जाती है, खासकर लीवर कैंसर का जोखिम बढ़ाती है. इसके अलावा, इसमें फॉर्मेलिडहाइड जैसे संरक्षक पदार्थ पाए जाते हैं, जो कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाते हैं.

यह मछली आर्गुलोसिस जैसे परजीवियों को ले जाती है, जो त्वचा, गलफड़ों और आंतों को प्रभावित कर सूजन, अल्सर और पाचन संबंधी समस्याएं पैदा करते हैं.

भारत, अमेरिका समेत कई देशों प्रतिबंध : इस मछली के स्वास्थ्य जोखिमों पर मुख्य रूप से भारत में रिसर्च हुई है. भारतीय अध्ययनों जैसे पूर्वी भारत के कार्प मछलियों पर फॉर्मेलिडहाइड के प्रभाव, इसके विषाक्तता और कैंसर जोखिम को उजागर किया है. यह मछली भारत में 2000 से पूरी तरह प्रतिबंधित है. क्योंकि यह स्थानीय मछली प्रजातियों को नष्ट करती है. इसके अलावा यह अमेरिका के कई राज्यों में प्रतिबंधित है, अलबामा, कैलिफोर्निया, फ्लोरिडा, हवाई, टेक्सास आदि, जहां आयात, पालन या बिक्री पर पाबंदी है. फेडरल स्तर पर भी यूएस लेसी एक्ट के तहत इसे वाइल्ड लाइफ के लिए भी खतरनाक माना गया है. अन्य देशों जैसे ऑस्ट्रेलिया में भी इसे आक्रामक प्रजाति के रूप में प्रतिबंधित किया गया है.

नगर निकाय चुनाव पर झारखंड हाईकोर्ट सख्त

24 नवंबर तक निश्चित तिथि बताने का निर्देश

शुभम संदेश।रांची

झारखंड में नगर निगम और नगर निकायों के चुनाव नहीं कराए जाने को लेकर दायर याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट ने सोमवार को कड़ी टिप्पणी की और राज्य निर्वाचन आयोग को 24 नवंबर तक चुनाव की निश्चित तिथि बताने का निर्देश दिया. जस्टिस आनंदा सेन की अदालत ने सुनवाई के दौरान स्पष्ट कहा कि आयोग को अगली सुनवाई तक चुनाव कराने की समय-सारिणी प्रस्तुत करनी होगी.सुनवाई के दौरान महाधिवक्ता राजीव रंजन ने अदालत को बताया कि राज्य में कराए गए ट्रिपल टेस्ट की रिपोर्ट आयोग को सौंप दी गई है. उन्होंने कहा कि आयोग ने कुछ बिंदुओं, जैसे सीटों के आरक्षण और जनसंख्या सूची से संबंधित जानकारी मांगी है, जिसे जल्द उपलब्ध कराया जाएगा. इसके बाद ही चुनाव की अधिसूचना जारी की जा सकेगी.

वहीं, राज्य निर्वाचन आयोग के अधिवक्ता सुमित गाड़ोदिया ने अदालत को अवगत कराया कि अभी तक राज्य सरकार ने सीटों के आरक्षण की अंतिम अनुशंसा आयोग को नहीं भेजी है. उन्होंने कहा कि यह अनुशंसा मिलने के बाद ही आयोग चुनाव की तैयारियों में जुटेगा, जिसके लिए लगभग तीन माह का समय आवश्यक होगा.

अदालत ने इस स्थिति को देखते हुए सुनवाई 24 नवंबर तक के लिए स्थगित की और स्पष्ट निर्देश दिए कि अगली सुनवाई तक आयोग को चुनाव की निश्चित तिथि और योजना प्रस्तुत करनी होगी. प्रार्थी रौशनी खलखो और रीना कुमारी की ओर से अधिवक्ता विनोद कुमार सिंह ने अदालत में कहा कि पहले दिए गए आदेश का पालन नहीं किया गया. उन्होंने हाईकोर्ट से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि नगर निगम और नगर निकाय चुनाव समय पर कराए जाएं.

गौरतलब है कि झारखंड में जून 2020 से अब तक 12 शहरी निकायों में चुनाव नहीं हुए हैं. कई नगर निगम बिना निर्वाचित प्रतिनिधियों के ही संचालित हो रहे हैं. राज्य में पिछला चुनाव 27 अप्रैल 2023 को हुआ था. इससे पहले दायर याचिकाओं (संख्या 1923/2023 और 2290/2023) पर 4 जनवरी 2024 को हाईकोर्ट ने आदेश पारित करते हुए तीन सप्ताह के भीतर नगर निकाय चुनाव कराने का निर्देश दिया था. लेकिन इस आदेश के बावजूद चुनाव नहीं होने पर प्रार्थियों ने अवमानना याचिका दायर की.

हजारीबाग भूमि घोटाला

एसीबी ने आईएएस विनय चौबे को रिमांड पर लेने के लिए अदालत में आवेदन दिया

रांची । मुख्यमंत्री के सचिव रहे आईएएस अधिकारी विनय चौबे को

अब एसीबी रिमांड पर लेगी. रिमांड के लिए एसीबी ने अदालत में आवेदन दायर किया है. विनय चौबे पहले शराब घोटाला और उसके बाद हजारीबाग के खासमहाल जमीन घोटाले में जेल में रह चुके हैं.एसीबी ने जमीन घोटाले में प्रारंभिक जांच (पीई) के बाद एफआईआर दर्ज की थी. जांच के दौरान उन्हें इस घोटाले में संलिप्त पाया गया और ठोस सबूत भी मिले हैं. इसके आधार पर एसीबी ने अदालत से विनय चौबे को रिमांड पर लेने का अनुरोध किया है. मंगलवार को अदालत में आवेदन पर सुनवाई होने की संभावना है. सूत्रों के अनुसार, विनय चौबे के करीबी कारोबारी विनय सिंह, तत्कालीन सीओ शैलेश कुमार और दलाल विजय सिंह पहले ही जेल में हैं. एसीबी ने इस मामले में अब तक 60 से अधिक लोगों को नामजद किया है, जिनमें हजारीबाग के विधायक प्रदीप प्रसाद, विनय सिंह की पत्नी स्निग्धा सिंह और अन्य प्रमुख शामिल हैं. जांच में विनय चौबे की संलिप्तता और उनके खिलाफ ठोस सबूत सामने आने के बाद उनकी मुश्किलें और बढ़ गई हैं.

सारंडा : 16 नवंबर को आर्थिक नाकेबंदी

चाईबासा। सारंडा वन क्षेत्र को वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी घोषित करने के निर्णय के खिलाफ स्थानीय लोग सड़कों पर उतरने की तैयारी में हैं. सारंडा बचाओ समिति ने इस निर्णय का जोरदार विरोध करते हुए 16 नवंबर को आर्थिक नाकेबंदी की घोषणा की है.पश्चिम सिंहभूम के छोटानागरा के जमकुंडिया नयाबाजार में आयोजित प्रतिनिधि सभा में आंदोलन की रणनीति तय की गई. सभा की अध्यक्षता झारखंड आंदोलनकारी बुधराम लागुरी ने की.

एक भी ढेला खनिज बाहर नहीं जाने दिया जाएगा : आंदोलनकारी बुधराम लागुरी ने कहा कि यदि सरकार सारंडा को सैंक्चुअरी घोषित करने का निर्णय वापस नहीं लेती, तो रेल और सड़क मार्ग से एक भी ढेला खनिज बाहर नहीं जाने दिया जाएगा.

घाटशिला उपचुनाव में झामुमो को मिलेगा प्रचंड जनादेश

भाजपा नेता चंपाई के चेहरे पर दिख रही हताशा : सुप्रियो

शुभम संदेश।रांची

झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने घाटशिला उपचुनाव को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला है. उन्होंने कहा कि भाजपा नेता चंपाई सोरेन के चेहरे पर साफ हताशा दिखाई दे रही है, क्योंकि घाटशिला की जनता एक बार फिर झामुमो पर भरोसा जताने जा रही है. भट्टाचार्य ने दावा किया कि 14 नवंबर को झामुमो को प्रचंड जनादेश मिलेगा और पार्टी विजय का प्रमाण पत्र प्राप्त करेगी. रांची में मीडिया से बातचीत के दौरान सुप्रियो ने कहा कि यह चुनाव केवल एक प्रत्याशी का नहीं, बल्कि झारखंड के अस्तित्व, आदिवासी अस्मिता और राज्य के

विकास की दिशा तय करने वाला है. उन्होंने कहा कि घाटशिला के मतदाता पिछली बार की तरह इस बार भी झामुमो को अवसर देने जा रहे हैं. भाजपा पर निशाना साधते हुए भट्टाचार्य ने कहा कि विपक्ष के सभी उम्मीदवार हताश हैं और आपस में पछता रहे हैं कि चुनाव क्यों लड़ रहे हैं, खासकर भाजपा के नेता.

सुप्रियो ने कहा कि घाटशिला की जनता इस चुनाव में झारखंड आंदोलन के प्रतीक नेता शिबू सोरेन और रामदास सोरेन को श्रद्धांजलि देने जा रही है. उन्होंने जोर देकर कहा कि झामुमो सरकार ने इस क्षेत्र में जनजातीय विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेज और आईटीआई-पॉलीटेक्निक जैसे शैक्षणिक संस्थानों की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं. खनन क्षेत्र होने के कारण माइनिंग इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी शुरू करने की योजना है.भट्टाचार्य ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार के आने के बाद घाटशिला का एचसीएल कारखाना बंद कर दिया गया, जिससे करीब ढाई लाख लोग बेरोजगार हो गए. उन्होंने आश्वासन दिया कि बंद खदानें और कारखाने पुनः चालू कराए जाएंगे.

भाषा और स्थानीयता के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि भाजपा ने घाटशिला और आसपास के इलाकों में बांग्ला भाषियों को 'बाहरी' और 'बांग्लादेशी' बताकर सांप्रदायिक राजनीति की. जनता इस बार ऐसे एजेंडे के खिलाफ बड़ा जनादेश देने जा रही है. भट्टाचार्य ने भाजपा प्रत्याशी को बाहरी बताते हुए कहा कि झामुमो प्रत्याशी रामदास दा घाटशिला के खतियानी निवासी हैं और स्थानीय लोगों के बीच गहरी जड़ें रखते थे. चंपाई सोरेन पर कटाक्ष करते हुए सुप्रियो ने कहा कि वह पहले झारखंडी अस्मिता के प्रतीक थे, लेकिन अब खुद से विरोधाभास में हैं और सम्मान का अर्थ भूल चुके हैं.

हजारीबाग पुलिस की बड़ी कार्रवाई

42.5 लाख की अफीम बरामद, चार तस्कर गिरफ्तार, जेल भेजे गए

शुभम संदेश।हजारीबग

हजारीबाग जिले की मुफस्सिल थाना पुलिस ने नशे के कारोबार पर बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 8.2 किलोग्राम अवैध अफीम बरामद की है, जिसकी बाजार कीमत लगभग 42.5 लाख रुपये आंकी गई है. पुलिस ने मौके से चार अफीम तस्करों को गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार तस्करों में सचिन कुमार (18, दारियातु, थाना - चतरा), राकेश कुमार मेहता (20, पबरा, थाना-कटकमसांडी, जिला – हजारीबाग), नन्कु ठाकुर (24, सतौर, थाना – चतरा) व अनिल दांगी (45 दारियातु, थाना – चतरा) शामिल है. तस्करों के पास से अफीम – 8.2 किलोग्राम के साथ चार पीस बैग और चार मोबाइल पुलिस ने जब्त कर लिया है.

हजारीबाग पुलिस अधीक्षक को शनिवार रात लगभग 11:45 बजे गुप्त सूचना मिली थी कि एनएच-33 पर मुकुंदगंज स्थित टोयोटा शोरूम के पास कुछ लोग अफीम की बड़ी डील करने वाले हैं. सूचना मिलते ही अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई. टीम ने तत्काल छापेमारी करते हुए बताए गए स्थान पर चार संदिग्धों को देखा. पुलिस को देखकर सभी भागने लगे, लेकिन जवानों ने तत्परता दिखाते हुए उन्हें दौड़ाकर पकड़ लिया. तलाशी में चारों के बैग से अफीम बरामद हुई. प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे चतरा से अफीम लाकर हरियाणा बेचने जा रहे थे. पुलिस ने बताया कि इस मामले में मुफस्सिल थाना कांड संख्या 187/25, दिनांक 09.11.2025 के तहत धारा 17(सी)/21(सी)/29 एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर सभी आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया.

रमा खलखो झारखंड प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष नियुक्त

रांची। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने रमा खलखो को झारखंड प्रदेश महिला कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया है. सोमवार शाम इससे संबंदित पत्र उन्होंने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय भेजा. झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा व संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल व राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष अलका लांबा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने सशक्त, जुझारू और जमीन से जुड़ी महिला नेत्री को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है.

प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने रमा खलखो को शुभकामनाएं देते हुए कि उनके नेतृत्व में झारखंड महिला कांग्रेस और भी अधिक मजबूती के साथ कार्य करेगी और प्रदेश की महिलाओं की आवाज बुलंद कर संगठन को नई दिशा, नई ऊर्जा और नया विस्तार देगी. रमा खलखो का नेतृत्व महिलाओं के संघर्ष, स्वाभिमान

और अधिकारों की मजबूत आवाज बनेगा. लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के साथ-साथ भाजपा की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ महिला कांग्रेस अब और भी प्रखरता से सड़क से सदन तक संघर्ष करेगी. प्रदेश कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं महिला कांग्रेस की टीम ने रमा खलखो को बधाई देते हुए पूर्ण समर्थन व सहयोग का भरोसा दिया. बधाई देने वाले में आलोक कुमार दुबे, लालकिशोर नाथ शाहदेव, रविंद्र सिंह राकेश सिन्हा, सतीश पौल मुंजनी, अमूल्य नीरज खलखो, सोनल शांति, डॉ राकेश किरण महतो, कुमार राजा, गजेंद्र सिंह, अभिलाष साहू, राजन वर्मा, विनय सिन्हा दीपू, कमल ठाकुर शामिल थे.

पहली पत्नी के रहते दूसरी शादी अवैध: झारखंड हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया

स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत विवाह के बाद धार्मिक कानून नहीं चलेगा

शुभम संदेस।रांची/ धनबाद

झारखंड हाईकोर्ट ने एक ऐतिहासिक और अहम निर्णय में स्पष्ट कर दिया है कि स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत विवाह करने के बाद कोई व्यक्ति धार्मिक या निजी कानून का हवाला देकर दूसरी शादी नहीं कर सकता. यह फैसला धनबाद के पैथॉलॉजिस्ट मोहम्मद अकील आलम के मामले में सुनाया गया, जिन्होंने अपनी पहली पत्नी के जीवित रहते दूसरी शादी की थी.अकील आलम ने 4 अगस्त 2015 को स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी की थी. कुछ

महीनों बाद उनकी पत्नी घर छोड़कर देवघर चली गईं. अकील ने दावा किया कि पत्नी बिना कारण चली गईं और कई बार बुलाने पर भी वापस नहीं लौटीं. इसके बाद उन्होंने देवघर फैमिली कोर्ट में वैवाहिक अधिकारों की बहाली की याचिका दायर की.

याचिका की सुनवाई के दौरान पत्नी ने अदालत में आरोप लगाया कि अकील पहले से शादीशुदा थे और उनकी पहली पत्नी से दो बेटियां भी हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अकील ने उनके पिता से संपत्ति अपने नाम करने का दबाव बनाया और इनकार करने पर उनके साथ मारपीट की गई. मामले की जांच में अकील ने खुद स्वीकार किया कि उनकी पहली पत्नी जीवित हैं और विवाह के समय इस तथ्य को छिपाया गया. देवघर फैमिली कोर्ट ने दूसरी शादी को अवैध घोषित कर दिया. इसके खिलाफ अकील ने झारखंड हाईकोर्ट में अपील की.झारखंड हाईकोर्ट की जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस राजेश कुमार की खंडपीठ ने फैमिली कोर्ट का फैसला बरकरार रखते हुए कहा कि स्पेशल मैरिज एक्ट की धारा 4(ए) के अनुसार, विवाह तभी वैध है, जब शादी के समय पति या पत्नी में से कोई पहले से जीवित जीवनसाथी न हो, कोर्ट ने स्पष्ट किया कि स्पेशल मैरिज एक्ट एक 'नॉन ऑब्स्टांटे क्लॉज' के तहत बना कानून है, जो किसी भी निजी या धार्मिक कानून से ऊपर है.

पत्नी को आया गुस्सा तो पति पर कुत्ते से हमला करवा दिया, जख्मी हालत में अस्पताल में भर्ती

पत्नी और ससुराल पक्ष से परेशान युवक ने पुलिस से लगाई मदद की गुहार

शुभम संदेश।हजारीबाग

हजारीबाग जिले के मटवारी स्थित कृष्णापुरी कॉलोनी में एक हैरान कर देने वाली घटना सामने आई है, जहां पत्नी ने अपने पालतू कुत्ते से पति पर हमला करवा दिया. कुत्ते के हमले में युवक बुरी तरह घायल हो गया और फिलहाल अस्पताल में भर्ती है. उसकी हालत नाजुक बताई जा रही है.जानकारी के अनुसार जख्मी युवक रोहित कुमार जैन (35 वर्ष) हजारीबाग के बड़ा बाजार स्थित जैन धर्मशाला निवासी हैं. उन्होंने अपनी पत्नी रूपा अग्रवाल और ससुराल पक्ष पर गंभीर आरोप लगाए हैं. रोहित ने पुलिस को बताया कि उनकी शादी जनवरी 2024 में हुई थी, लेकिन

शादी के कुछ समय बाद से ही पत्नी और उसके परिवार वाले उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने लगे.

रोहित का आरोप है कि रविवार झगड़े के दौरान रूपा ने अपने पालतू जर्मन शेफर्ड कुत्ते को उस पर हमला करने के लिए उकसाया. कथित रूप से कुत्ते ने उन पर झपटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया. परिवार के अन्य सदस्यों ने बड़ी मुश्किल से रोहित को कुत्ते से छुड़ाया और अस्पताल में भर्ती कराया. डॉक्टरों ने बताया कि उसके शरीर पर कई गहरे जख्म हैं और स्थिति अभी भी चिंताजनक बनी हुई है. घटना के बाद से रूपा और उसके परिवार के व्यवहार को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं. थाना प्रभारी निशांत केरकेट्टा ने बताया कि रोहित जैन के बयान के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है. पुलिस ने मौके का निरीक्षण कर साक्ष्य एकत्र किए हैं और दोनों पक्षों से पूछताछ जारी है. अधिकारियों ने कहा है कि जांच पूरी होने के बाद ही आगे की कार्रवाई तय की जाएगी.

ससुराल पक्ष से जान का खतरा

रोहित ने कहा कि ससुराल पक्ष उन्हें लगातार धमकी दे रहा है और उन्हें जान का खतरा है. उन्होंने पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की मांग की है. इस घटना पर थाना प्रभारी निशांत केरकेट्टा ने बताया कि पीड़ित का आवेदन प्राप्त हुआ है. मामले की जांच की जा रही है और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी. वहीं, पीड़ित के पिता मनोज जैन ने कहा कि पत्नी द्वारा इस तरह का हमला करवाना अमानवीय है और कानून को इस पर सख्त रुख अपनाना चाहिए.

झारखंड स्थापना दिवस और बिरसा मुंडा जयंती

राजधानी रांची सजेगी उत्सव की रंगीन छटा से

25 वर्षों की विकास यात्रा और जनजातीय गौरव के साथ मोरहाबादी में होगा मुख्य समारोह का आयोजन

शुभम संदेश। रांची

15 नवंबर. झारखंड के इतिहास का यह दिन राज्यवासियों के लिए विशेष महत्व रखता है. 15 नवंबर न केवल भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के रूप में मनाया जाता है, बल्कि इसी दिन साल 2000 में झारखंड राज्य की स्थापना भी हुई थी. इस साल राज्य स्थापना के 25 वर्ष पूरे हो रहे हैं, जिसे लेकर राजधानी रांची में व्यापक तैयारी चल रही है.

राजधानी के हर कोने को इस ऐतिहासिक अवसर पर ए सजाने का कार्य युद्धस्तर पर किया जा रहा है. मुख्य समारोह मोरहाबादी मैदान में आयोजित होगा, जहां राज्य सरकार की ओर से कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई है. समारोह में राज्यपाल, मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य अतिथि शामिल होंगे. इस आयोजन में राज्य के विभिन्न विभाग अपनी उपलब्धियों और योजनाओं की झलक प्रस्तुत करेंगे, ताकि 25 सालों की विकास यात्रा को प्रदर्शित किया जा सके.

मोरहाबादी मैदान को रंग-बिरंगी लाइटों, फूलों और झंडियों से सजाने का काम जोरशोर से चल रहा है. यहां विभिन्न थीम पवेलियन तैयार किए जा रहे हैं, जिनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग और खेल विभाग अपनी-अपनी उपलब्धियों को आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करेंगे. यह आयोजन न केवल विकास की कहानी बताएगा, बल्कि राज्य की विविध संस्कृति और परंपराओं को भी उजागर करेगा.

बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनजातीय अस्मिता और अधिकारों की लड़ाई लड़ी थी

बिरसा मुंडा, जिन्हें धरती आबा के नाम से जाना जाता है, ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनजातीय अस्मिता और अधिकारों की लड़ाई लड़ी थी. उनकी जन्म जयंती और राज्य स्थापना दिवस का यह संगम झारखंडवासियों के लिए विशेष भावनात्मक अवसर बन जाता है. जैसे-जैसे 15 नवंबर नजदीक आ रहा है, राजधानी का हर कोना 'जय झारखंड' के नारों और सांस्कृतिक गीतों से गूंज रहा है. बिरसा मुंडा के आदर्शों और झारखंड की गौरवगाथा को याद करते हुए पूरा राज्य इस दिन को नई ऊर्जा और संकल्प के साथ मनाने की तैयारी में जुटा है.

रांची की सड़कों और सरकारी भवनों में भी उत्सव का माहौल देखने को मिल रहा है. बिरसा मुंडा की तस्वीरें, राज्य की सांस्कृतिक धरोहर और जनजातीय जीवन को दर्शाने वाली वॉल पेंटिंग तैयार की जा रही हैं. बिजली विभाग ने रात में शहर को रोशनी से जगमगाने की व्यवस्था की है, जबकि उद्यान विभाग ने सड़कों के किनारे पेड़-पौधों को सजाकर शहर को और जीवंत बना दिया है.

स्थापना दिवस को लेकर स्थानीय लोग भी उत्साहित हैं. विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाएं अपने स्तर पर कार्यक्रम आयोजित कर रही हैं. शहर के स्कूलों में बिरसा मुंडा के जीवन और झारखंड के संघर्ष पर आधारित विशेष सभाएं रखी जा रही हैं, ताकि नई पीढ़ी अपने इतिहास और नायकों के योगदान को जान सके.

यह स्थापना दिवस न केवल राज्य के विकास की कहानी बताता है, बल्कि झारखंडवासियों के सांस्कृतिक गौरव और जनजातीय पहचान को भी जीवंत करता है. इस 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूरे राज्य में उत्सव और गर्व का माहौल है, जो झारखंडवासियों के लिए एक यादगार अनुभव साबित होगा.

झारखंड स्वास्थ्य सेवा

चिकित्सा पदाधिकारियों की औपबंधिक वरीयता सूची विभाग ने जारी की

रांची। झारखंड स्वास्थ्य विभाग ने गैर शैक्षणिक झारखंड स्वास्थ्य सेवा के 1984 चिकित्सा पदाधिकारियों की औपबंधिक वरीयता सूची जारी कर दी है. यह सूची झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की अनुशंसा के आधार पर तैयार की गई है और इसमें विज्ञापन संख्या 07/2021 तथा 19/2023 के तहत नियुक्त सभी चिकित्सा पदाधिकारी शामिल हैं. जारी आदेश में कहा गया है कि सूची में किसी भी प्रकार की आपत्ति होने पर संबंधित व्यक्ति साक्ष्यों के साथ 30 नवंबर तक विभाग को सूचित कर सकते हैं. विभाग की ओर से स्पष्ट किया गया है कि सूची का उद्देश्य पदाधिकारियों की औपबंधिक क्रमबद्ध स्थिति को सुनिश्चित करना है और भविष्य में पदोन्नति व अन्य प्रशासनिक कार्यों में इसका उपयोग किया जाएगा. झारखंड लोक सेवा आयोग की अनुशंसा पर तैयार इस सूची से स्वास्थ्य सेवा विभाग के प्रशासनिक ढांचे में पारदर्शिता और सुव्यवस्था बढ़ाने की उम्मीद जताई जा रही है.

बीआईटी मेसरा की एनएसएस इकाई ने रक्तदान शिविर का किया आयोजन

रांची। बीआईटी मेसरा की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई की ओर से एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया. इसका उद्घाटन अधिष्ठाता (संकाय कल्याण) डॉ. अशोक शरण ने किया. उन्होंने कहा कि रक्तदान एक महादान कार्य है. हम सभी को इस पुण्य कार्य में सहयोग करना चाहिए, साथ ही दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करना चाहिए.इस कार्यक्रम के दौरान अधिष्ठाता, छात्र कल्याण एवं एनएसएस के अध्यक्ष डॉ. भास्कर कर्ण ने कहा कि रक्तदान एक महान कार्य है-यह न केवल किसी की जान बचाता है, बल्कि मानवता की सबसे बड़ी सेवा भी है.कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ओपी पांडेय ने कहा कि रक्तदान मानवता का अनमोल उपहार है. रक्तदान कर के किसी के अमूल्य जीवन को बचाया जा सकता है.इस कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव, डॉ. संजीत कुमार, डॉ. संजीव तिवारी, डॉ. अभिजीत नाग, डॉ. परितोष मेहता, डॉ. अमित तिवारी और डॉ. अमित शरण सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे.

हरमू रोड में 8 हजार वर्गफीट में नव-निर्मित मारवाड़ी भवन बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन

समाज सेवा में मारवाड़ी समाज का योगदान अतुलनीय : संजय सेठ

शुभम संदेश। रांची

हरमू रोड में लगभग 8000 वर्ग फीट में निर्मित पूर्णतः वातानुकूलित अत्याधुनिक मारवाड़ी भवन बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन सोमवार को हुआ. केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय से, सांसद महुआ माजी, , देवकी नंदन नारसरिया और भागचंद पोद्दार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर एवं दीप प्रज्वलित कर सभागार का उद्घाटन किया. मौके पर संजय सेठ ने कहा कि मारवाड़ी समाज सदैव जनकल्याण के कार्यों में अग्रणी रहा है. समाज सेवा में इनके योगदान को अतुलनीय बताया. राज्यसभा सांसद महुआ मांझी ने कहा कि सामाजिक कार्यों के क्रियान्वयन की सीख हमें मारवाड़ी समाज से लेनी चाहिए. उन्होंने कहा कि यह समाज सदैव सेवा और सहयोग की भावना से कार्य करता आया है.

निर्माण समिति के संयोजक ओमप्रकाश अग्रवाल ने बताया कि सभागार सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है.झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष

समाज सेवा में सर्वोपरि है मारवाड़ी समाज : महुआ माजी

सुरेश चंद्र अग्रवाल एवं मनोज चौधरी ने कहा कि समाज हमेशा से जनकल्याण कार्यों में अग्रणी रहा है. मुक्ति धाम, स्वर्ग द्वार एवं मोक्ष धाम गैस आधारित शवदाह गृह इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं. ललित पोद्दार ने बताया कि शहर में चार स्थानों पर अन्नपूर्णा सेवा का संचालन समाज द्वारा किया जा रहा है.

कार्यक्रम का संचालन पवन शर्मा ने किया. प्रातःकाल पंडित श्याम सुंदर भारद्वाज ने विद्वान आचार्यों के साथ पूजन कार्य संपन्न कराया.अतिथियों का सम्मान अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया गया. शाम 7 बजे से हनुमान मंडल, श्याम मंडल,श्री श्याम मित्र मंडल, श्री श्याम संघ, रानी सती मंडल आदि संस्थाओं द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई, जिसमें मुकेश काबरा, पवन शर्मा, जुगल दारगढ़, मनीष सोनी ने भाग लिया.

कार्यक्रम को सफल बनाने में मनोज चौधरी, रमन बोड़ा, भागचन्द पोद्दार, ओमप्रकाश अग्रवाल, सुरेश चंद्र अग्रवाल, ललित पोद्दार, राजेंद्र केडिया,आनंद जालान,पवन पोद्दार, अशोक नारसरिया, निर्मल बुधिया, कमलेश संचेती, विनोद जैन, सज्जन पाड़िया, कौशल राजगढ़िया, किशन पोद्दार, अनिल कुमार अग्रवाल,अजय डिडवानिया, प्रमोद बगड़िया,निर्भय शंकर हरित, विजय खोवाल, नरेश चौधरी, अशोक लाठ, कमल शर्मा, अमित जालान, पदमचंद गोधा, कमलेश शर्मा, गौरव अग्रवाल, विकास अग्रवाल सहित सैकड़ों सदस्यों का योगदान रहा.

कार्यक्रम में गोवर्धन गाड़ोदिया, विनय सरावगी, विश्वनाथ नारसरिया, ओम प्रकाश प्रणव अरुण बुधिया, कमल केडिया, प्रदीप राजगढ़िया, जुगल किशोर मारू, किशन साबू, प्रदीप बाकलीवाल, नरेंद्र गंगवाल, अशोक पुरोहित, रमेश चंद्र शर्मा, अमरचंद बेगानी, बिमल दस्सानी, प्रमोद अग्रवाल, नंद किशोर पाटोदिया, श्रवण अग्रवाल, चंद्र प्रकाश बागला, रतन जालान, मनोज जालान समेत अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे.

एक नजर

प्रधानमंत्री से राज्यपाल संतोष गंगवार ने की मुलाकात

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नयी दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की और राज्य के विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की. उक्त अवसर पर उन्हें अपने सुपुत्र के "विवाह एवं आशीर्वाद समारोह" का निमंत्रण देते हुए शामिल होने का आग्रह किया.

श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट, पुंदाग की बैठक में समाज सेवा को लेकर कई निर्णय

रांची। श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट के कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक सोमवार को ट्रस्ट के अध्यक्ष डूंगरमल अग्रवाल की अध्यक्षता में श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर परिसर में संपन्न हुई. बैठक में मंदिर, अपना घर आश्रम, गौशाला सहित विभिन्न कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गयी. साथ ही भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तय की गयी. बैठक में निर्णय लिया गया कि मंदिर में वृहद स्तर पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा . तय किया गया किट्रस्ट द्वारा जन सेवा के तहत इस माह में कंबल, टीशर्ट, गर्म कपड़े एवं अन्य खाद्य सामग्रियों का वितरण किया जाएगा. ट्रस्ट द्वारा मीडिया सम्मान समारोह का भी आयोजन किया जाएगा. शीघ्र ही श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर में दर्शन हेतु राज्यपाल, मुख्यमंत्री सहित अन्य मंत्रियों, सांसदों-विधायकों को आमंत्रित किया जाएगा.बैठक में उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, निर्मल जालान, विजय कुमार अग्रवाल,पूरणमल सर्राफ, शिव भगवान अग्रवाल, संजय सर्राफ, मधुसूदन जाजोदिया, सुरेश अग्रवाल, विशाल जालान, विष्णु सोनी, सुरेश भगत, मनीष सोनी,अमर बाजोरिया आदि उपस्थित थे. उक्त जानकारी ट्रस्ट के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने दी.

चैंबर के पदाधिकारियों ने एयरपोर्ट निदेशक को दिए सुझाव, सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन मिला

रांची। फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज (एफजेसीसीआई) की बैठक सोमवार को बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के निदेशक विनोद कुमार के साथ हुई. बैठक में पार्किंग एवं एग्जिट सिस्टम में सुधार, फास्टैग प्रणाली को पुनः प्रारंभ करने, सर्दियों में फ्लाइट रद्द होने से बचाने के लिए सीएटी-III तकनीक लगाने और नई घरेलू उड़ानों (जयपुर, गोवा, रायपुर, वाराणसी, गुवाहाटी, सूरत आदि) एवं अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की शुरुआत पर सकारात्मक चर्चा हुई. एयरपोर्ट निदेशक ने चैंबर के सभी सुझावों पर सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया है. एयरपोर्ट निदेशक से मिलनेवालों में चैंबर के पूर्व अध्यक्ष किशोर मंत्री, प्रवीण लोहिया, राम बांगड़, नवजोत सिंह अलंग सहित कई अन्य सदस्य शामिल थे.

नामकुम में रांची पुलिस की बड़ी कार्रवाई

25 लाख की अवैध विदेशी शराब जब्त

शुभम संदेस। रांची

राजधानी रांची में अवैध कारोबार पर नकेल कसने के लिए रांची पुलिस लगातार अभियान चला रही है. इसी कड़ी में बीती देर रात नामकुम थाना पुलिस को बड़ी सफलता मिली. एसएसपी राकेश रंजन को गुप्त सूचना मिली थी कि एक कंटेनर में भारी मात्रा में विदेशी शराब लोड कर रांची होते हुए बिहार की ओर भेजी जा रही है. सूचना मिलते ही पुलिस की विशेष टीम गठित की गई और नामकुम थाना क्षेत्र के रामपुर चौक के पास वाहनों की जांच शुरू की गई. इसी दौरान एक संदिग्ध कंटेनर को रोककर जब तलाशी ली गई, तो उसके अंदर बड़ी मात्रा में विदेशी शराब बरामद हुई. पुलिस के अनुसार, यह खेप पंजाब से बिहार भेजी जा रही थी. बरामद शराब की बाजार में कीमत करीब 25 लाख रुपये आंकी गयी है.फिलहाल पुलिस की मौजूदगी में मजिस्ट्रेट के सामने शराब की गिनती की जा रही है. एसएसपी ने बताया कि राजधानी में अवैध शराब और अन्य गैरकानूनी कारोबार के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा.

राज्यभर की 600 जन शिकायतों के निपटारे के लिए डीजीपी ने बनाई उच्चस्तरीय समिति

शुभम संदेश। रांची

झारखंड की पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) तदाशा मिश्रा ने राज्यभर में प्राप्त जन शिकायतों के त्वरित और पारदर्शी निपटारे के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है. अब तक पुलिस मुख्यालय को विभिन्न जिलों से लगभग 500 से 600 शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनका जल्द समाधान इस समिति की प्रमुख जिम्मेदारी होगी. इस समिति की अध्यक्षता एडीजी (अभियान) टी कंडाशामी करेंगे, जबकि सदस्य के

रूप में आईजी (अपील एवं अनुशासन) असीम विक्रांत मिंज, आईजी (मानवाधिकार) क्रांति कुमार गड़िदेशी और कार्मिक डीआईजी सुरेन्द्र कुमार झा को शामिल किया गया है. समिति नियमित रूप से शिकायतों की समीक्षा कर उनके निपटारे की प्रगति रिपोर्ट पुलिस मुख्यालय को सौंपेगी. डीजीपी मिश्रा ने कहा कि आम नागरिकों की शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई से जनता का पुलिस पर विश्वास और मजबूत होगा. उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि हर शिकायत को गंभीरता से लेकर त्वरित और निष्पक्ष कार्रवाई सुनिश्चित करें. इस पहल से न केवल शिकायतों के समाधान की प्रक्रिया तेज होगी, बल्कि जनता और पुलिस के बीच भरोसे एवं संवाद का सेतु भी और सुदृढ़ होगा.

श्री राणी सती दादी जी की मंगसीर बदी नवमी 13 नवंबर को

दादी जी को साहस, निष्ठा, त्याग और आशीर्वाद की देवी माना जाता है

संजय सर्राफ

श्री राणी सती दादी जी का मंगसीर बदी नवमी गुरुवार 13 नवंबर को मनाया जाएगा. यह तिथि श्री राणी सती दादी जी का जन्मोत्सव एवं प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाता है. झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय संयुक्त महामंत्री सह प्रवक्ता संजय सर्राफ ने बताया कि मारवाड़ी समाज विशेष समर्पण के साथ दादी जी का पर्व मनाता है. दादी जी की सभी मंदिरों में मंगसीर नवमी का महोत्सव चार दिनों तक बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया जाता है. राणी सती दादी जी, जिन्हें नारायणी देवी के नाम से भी जाना जाता है, संस्कृति और धर्म में साहस, त्याग और निष्ठा का प्रतीक मानी जाती हैं. उनकी कथा प्रेरणादायक और मार्मिक है, जो उनकी अमर गाथा को सजीव करती है. मंगसीर बदी नवमी का दिन उनके बलिदान और उनकी दिव्य शक्ति को स्मरण करने के लिए विशेष महत्व रखता है. यह कथा महाभारत काल से जुड़ी है.

ऐसा माना जाता है कि नारायणी देवी का पूर्वजन्म वीर अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के रूप में हुआ था. महाभारत के युद्ध में जब अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुए, तब उत्तरा ने उनके साथ सती होने की इच्छा व्यक्त की. भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें सती होने से रोका और कहा कि भविष्य में उन्हें यह पुण्य कर्म करने का अवसर मिलेगा. उत्तरा ने पुनर्जन्म लिया और नारायणी के रूप में जन्म लिया. उनका विवाह झुंझुनू (राजस्थान) के निवासी ठाकुर तांवर जी से हुआ. नारायणी देवी और तांवर जी का दांपत्य जीवन प्रेम और निष्ठा से परिपूर्ण था. यह पर्व प्रेम, निष्ठा और धर्म के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक था. उन्होंने भगवान से यह वरदान मांगा कि भविष्य में वे सभी श्रद्धालु भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करेंगी. मंगसीर बदी नवमी का दिन उनके बलिदान और त्याग को समर्पित है. इस दिन झुंझुनू स्थित राणी सती मंदिर सहित पूरे देश के दादी के मंदिरों में विशाल महोत्सव का आयोजन होता है, जिसमें राजस्थानी महिलाओं, पुरुषों द्वारा मंदिरों में राणी सती दादी जी की विशेष पूजा की जाती है.

मंदिरों में झांकियां और शृंगार दादी जी की प्रतिमा का विशेष श्रृंगार कर भव्य झांकी सजाई जाती है. दिन भर भजन-कीर्तन, मंगल पाठ और धार्मिक अनुष्ठान होते हैं. भक्तों के लिए विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है. महिलाओं द्वारा चुनरी-मेहंदी, सुघा सुहाग की कामना की जाती है. इस दिन सुहागिनें विशेष रूप से भाग लेती हैं, क्योंकि इसे अपने सुहाग की रक्षा, परिवार की मंगल कामना और कुलदेवी की आराधना का अवसर माना जाता है. आज यह पर्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक उत्सव बन गया है, जहां विभिन्न नगरों मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति देखने को मिलती है. यह आयोजन मारवाड़ी समाज के लिए अपनी पहचान आस्था तथा संयुक्त पूजा- व्रत के माध्यम से एकता का प्रतीक बन गया है. सती दादी जी का सम्मान समारोह न केवल उनकीअदम्य निष्ठा, भक्ति और त्याग की स्मृति प्रस्तुत करता है, बल्कि यह हमें धर्म, संस्कार और परिवार कल्याण के उन मूल्यों को याद भी दिलाता है.उनके भक्त जीवन के कठिन समय में उनका आह्वान करते हैं. ऐसा विश्वास है कि उनकी पूजा से परिवार में सुख, शांति और समृद्धि आती है. राणी सती दादी जी की कथा हमें यह सिखाती है कि प्रेम और निष्ठा जीवन के मूलभूत मूल्य हैं. मंगसीर बदी नवमी का दिन उनके त्याग और शक्ति को स्मरण करने के लिए मनाया जाता है.

रांची के गुजराती पटेल भवन, पीस रोड लालपुर में होगा अखंड सवा लाख श्री हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन

शुभम संदेश। रांची

श्री बालाजी महाराज की असीम कृपा और ब्रह्मलीन गुरुवर गोपीराम जी जोशी के आशीर्वाद व प्रेरणा से श्री नरसिंह बांध बालाजी धाम बर्नपुर के पावन सान्निध्य एवं परम श्रद्धेय संतोष भाईजी के दिव्य मार्गदर्शन में अखंड सवा लाख श्रीहनुमान चालीसा पाठ का आयोजन निश्चित हुआ है. यह भव्य धार्मिक आयोजन गुजराती पटेल भवन, पीस रोड, लालपुर, रांची (बीआईटी लालपुर एक्सेंशन सेंटर के बगल वाले रोड) में संपन्न होगा.

14 से हर शाम.होगी श्रीराम की कथा

आयोजन समिति से जुड़े अनिल अग्रवाल, राजेश लाडिया, पवन अग्रवाल, संदीप गोयल ने बताया श्रीहनुमान चालीसा पाठ का शुभारंभ गुरुवार 13 नवंबर को होगा और पूर्णाहुति गुरुवार 20 नवंबर को की जाएगी. पाठ

के शुभारंभ के दिन 31 जोड़ों द्वारा सामूहिक पूजन के साथ श्री हनुमान चालीसा पाठ आरंभ किया जाएगा. वहीं, 14 नवंबर से प्रतिदिन संध्या 5 से 7 बजे तक अयोध्याधाम से पधारे गुरुवर दिलीप दास (त्यागी) द्वारा राम कथा का वाचन किया जाएगा.

यह आयोजन भक्ति, श्रद्धा और आनंद से परिपूर्ण रहेगा और सभी भक्तों के लिए निःशुल्क एवं खुला है. आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं से सपरिवार उपस्थित होकर श्री हनुमान जी महाराज की कृपा प्राप्त करने का अनुरोध किया है. पाठ का आयोजन श्री नरसिंह बांध बालाजी धाम, रांची शाखा के सहयोग से किया जा रहा है. रांची शाखा से जुड़े आयोजन समिति के अनिल अग्रवाल, राजेश लाडिया, पवन अग्रवाल, संदीप गोयल, विनोद कुमार पांडेय आयोजन को सफल बनाने में जुटे हैं.

रांची शाखा से जुड़ी आयोजन समिति के अनिल अग्रवाल, राजेश लाडिया, पवन अग्रवाल, संदीप गोयल, विनोद कुमार पांडेय ने बताया कि मंगलवार 18 नवंबर को अपराह्न 3 बजे से श्री राणी सती दादी जी का मंगल पाठ होगा. बुधवार 19 नवंबर को अपराह्न 3 बजे सामूहिक श्रीसुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा. पाठ करने के इच्छुक लोगों के लिए विशेष कार्ड की व्यवस्था की गयी है, जो आयोजन समिति के सदस्यों से प्राप्त किए जा सकते हैं.

पत्रकार को धमकी कार्रवाई की मांग तेज

बरवाडीह (लातेहार) । राजकीय मध्य विद्यालय बभंडीह में मिड-डे मील योजना में घोर अनियमितता का मामला सामने आया है. बच्चों को महीनों से अंडा नहीं मिला, केवल पिछले शुक्रवार को औपचारिकता के लिए परोसा गया. जब एक पत्रकार ने बच्चों से सच्चाई जानी, तो प्रधानाध्यापक रामनाथ राम भड़क गए और झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दी. घटना के बाद ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया. मामले पर सांसद प्रतिनिधि दीपक राज ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि बच्चों के हक का अन्न हड़पना गंभीर अपराध है और सच्चाई दिखाने वाले को धमकाना शर्मनाक. उन्होंने उपायुक्त से तत्काल जांच और कार्रवाई की मांग की. ग्रामीणों ने भी विद्यालय में व्याप्त मिड-डे मील घोटाले की उच्चस्तरीय जांच की मांग की है. अब निगाहें जिला प्रशासन पर हैं कि वह इस प्रकरण में क्या कदम उठाता है.

सतबरवा क्षेत्र में अचानक तेज पानी के दबाव के कारण नहर का किनारा भरभरा कर टूट गया

मलय नहर टूटने से डेढ़ सौ एकड़ धान की फसल बर्बाद

शुभम संदेश । सतबरवा

सतबरवा क्षेत्र में मलय नहर के टूटने से सोमवार की सुबह करीब डेढ़ सौ एकड़ में लगी धान की पकी फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई. यह टूट नहर के चेन संख्या 18 सतबहिनी के पास इमरजेंसी फाटक से लगभग 100 फीट नीचे सुबह 6 बजे हुआ. अचानक तेज़ पानी के दबाव के कारण नहर का किनारा भरभराकर टूट पड़ा और नहर का सारा पानी सीधे मलय नदी में उतर गया. किसान सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि अचानक तेज आवाज सुनाई दी और देखते-देखते नहर का बांध बह गया. पानी के तेज बहाव से नदी के किनारे-पट्टी में खड़ी पकी धान की फसल डूब कर नष्ट हो गई. सुरेन्द्र ने कहा कि उनकी खुद की लगभग दो एकड़ फसल इस घटना में बर्बाद हो गई. इस घटना से प्रभावित किसानों की संख्या लगभग 100 है, जिनमें विजय सिंह, जय सिंह, गुलाब सिंह, खेलावन सिंह, गिरजा सिंह और श्यामलाल सिंह शामिल हैं. मत्स्य समिति के सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि इस समय मलय डैम का फाटक ठीक से बंद नहीं हो रहा है, जिससे लगातार पानी का बहाव नहर में बना हुआ था. सिंचाई विभाग की टीम ने फाटक को बंद करने का प्रयास किया, लेकिन पानी का दबाव अधिक होने के कारण वह सफल नहीं हो सका. विभागीय कर्मियों ने कहा कि जब पानी का दबाव कम होगा, तभी फाटक बंद करने की संभावना रहेगी. मलय डैम से आसपास के लगभग 105 गांवों के खेतों में सिंचाई होती है. किसानों का कहना है कि फाटक बंद न होने की स्थिति में रबी सीजन में सिंचाई गंभीर रूप से प्रभावित होगी. उन्होंने प्रशासन से तुरंत मरम्मती कार्य शुरू कराने और क्षतिपूर्ति तय करने की मांग की है. किसानों की चिंता यह भी है कि यदि समय पर नहर की मरम्मत नहीं हुई तो आने वाले सीजन में फसलों की नुकसान की संभावना बढ़ जाएगी. स्थानीय लोगों ने कहा कि प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में इस प्रकार की आपदा से निपटने के लिए पर्याप्त सुरक्षा और नहर का नियमित रखरखाव किया जाए. सिंचाई विभाग ने आश्वासन दिया है कि फाटक जल्द से जल्द बंद कर मरम्मत कार्य शुरू किया जाएगा और प्रभावित किसानों को आवश्यक राहत उपलब्ध कराई जाएगी.

शौर्य दिवस समारोह और अन्य कार्यक्रमों के आयोजन का निर्णय

शुभम संदेश । मेदिनीनगर

स्थानीय गीता भवन में आयोजित बैठक में विश्व हिंदू परिषद के जिला उपाध्यक्ष अजीत पाठक की अध्यक्षता में आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई. बैठक में प्रांत सेवा टोली सदस्य दामोदर मिश्र ने बताया कि 11 से 16 नवंबर तक सभी प्रखंडों में प्रखंड बैठकें आयोजित की जाएंगी. 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस, 24-25 नवंबर को गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस और 01 से 07 दिसंबर तक गीता जयंती पर शौर्य दिवस समारोहपूर्वक मनाया जाएगा. इसके तहत जिला और प्रखंडों में शौर्य यात्रा निकाली जाएगी. बजरंग दल के जिला संयोजक संदीप प्रसाद गुप्ता ने बताया कि 09 से 16 नवंबर तक नशा मुक्ति अभियान, 26 दिसंबर को बाल दिवस, तथा 23-31 दिसंबर तक धर्म रक्षा दिवस आयोजित होंगे. जिला मंत्री अमित तिवारी ने बताया कि निष्क्रिय कार्यकर्ताओं की जगह नए लोगों को दायित्व दिए जाएंगे और प्रखंड समिति का पुनर्गठन शीघ्र किया जाएगा. बैठक में धर्म परिवर्तन रोकने हेतु चंगाई सभा का विरोध करते हुए प्रशासन से बार-बार अनुरोध करने की बात भी उठाई गई. बैठक में जिला संगठन मंत्री, सह संयोजक, प्रखंड अध्यक्ष एवं अन्य कई कार्यकर्ता उपस्थित थे.

लातेहार में स्थापना दिवस पर आज रन फॉर झारखंड

लातेहार । झारखंड राज्य स्थापना दिवस–2025 के अवसर पर "झारखंड @25" थीम पर "रन फॉर झारखंड" का आयोजन 11 नवम्बर को किया जाएगा. यह दौड़ जिला खेल स्टेडियम मैदान, लातेहार से शुरू होकर बाईपास रोड, चटानी चौक होते हुए पंचमुखी हनुमान मंदिर तक जाएगी और पुनः स्टेडियम में समाप्त होगी. कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 08:00 बजे होगा, जबकि रजिस्ट्रेशन सुबह 6 बजे से किया जाएगा. इस दौड़ में जिले के विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, कर्मचारी, आवासीय क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षु खिलाड़ी, एनएसएस और एनकेवाई के वॉलंटियर्स, विद्यालयों के छात्र-छात्राएं और आम नागरिक भाग लेंगे. लगभग 300 से 400 प्रतिभागियों के दौड़ में शामिल होने की संभावना है. जिला प्रशासन द्वारा दौड़ के सफल आयोजन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की जा रही हैं. इस कार्यक्रम के माध्यम से राज्य की 25 वर्षों की गौरवशाली उपलब्धियों को याद करते हुए एकता, ऊर्जा और उत्साह का संदेश दिया जाएगा. नगरवासियों से अधिक से अधिक भागीदारी करने की अपील की गई है.

रांकी कला में विद्यालय भवन निर्माण में अनियमितता का आरोप

शुभंम संदेश । लातेहार

जिले के मनिका प्रखंड के रांकी कला गांव में राजकीय कृत मध्य विद्यालय का तीन कमरे वाला भवन कार्यकारी एजेंसी एनआरइपी, लातेहार द्वारा निर्माणाधीन है. स्थानीय ग्रामीणों ने निर्माण कार्य में व्यापक अनियमितताओं का आरोप लगाया है. ग्रामीणों का कहना है कि संवेदक ने निर्माण में घटिया सामग्रियों का उपयोग किया और किसी मानक का पालन नहीं किया. रामलाल तिवारी ने बताया कि भवन में लाल पेटी ईंटें कम गुणवत्ता की इस्तेमाल की जा रही हैं और डोर लेवल में केवल दो 8 एमएम की सरिया डालकर ढलाई कर दी गई. इसके चलते भवन की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं. ग्रामीणों की शिकायत पर जिला सांसद प्रतिनिधि छोटू राजा भी निर्माण स्थल पर पहुंचे और कार्य की गुणवत्ता को चिंताजनक बताया. उन्होंने संवेदक को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि भवन घटिया बना तो भविष्य में बच्चों के लिए दुर्घटना का कारण बन सकता है. अभियंता ने बताया कि ग्रामीणों से शिकायत मिलने पर संवेदक को आगाह किया गया और रिंग बांध कर चार छड़ डालकर ढलाई करने का निर्देश दिया गया. कहा कि निर्माण कार्य की नियमित जांच की जाएगी और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे. लोगों का कहना है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए गुणवत्तापूर्ण निर्माण अनिवार्य है और संबंधित अधिकारियों द्वारा सतर्कता दिखाई जाए तो ही भवन सुरक्षित रूप से तैयार हो सकता है.

डीसी ने की शिक्षा विभाग की समीक्षात्मक बैठक, कहा

बीआरपी और सीआरपी सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करें

शुभम संदेश । लातेहार

उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में शिक्षा विभाग की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिले में शिक्षा से संबंधित विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रगति का विस्तृत मूल्यांकन किया गया. बैठक में पीएम पोषण योजना की प्रगति की समीक्षा के दौरान स्कूलों में पोषाहार वितरण और मध्याह्न भोजन की शत-प्रतिशत उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए बीआरपी, सीआरपी और शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए.

सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारियों को अपने क्षेत्रों के विद्यालयों का निरीक्षण कर विद्यार्थियों की उपस्थिति, शौचालय, पेयजल सुविधा और अन्य आवश्यक बिंदुओं की समीक्षा करने और सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया. समीक्षा में विद्यालयों में पोशाक वितरण, छात्रवृत्ति भुगतान की स्थिति, मध्याह्न भोजन योजना की गुणवत्ता और समय पर संचालन, साथ ही विद्यालयों में पोषण वाटिका के निर्माण और रख-रखाव की स्थिति पर भी विस्तृत चर्चा की गई.

उपायुक्त ने निर्देश दिया कि छात्रों को समय पर पोशाक और छात्रवृत्ति उपलब्ध कराई जाए तथा मध्याह्न भोजन योजना की नियमित मॉनिटरिंग की जाए. उन्होंने कहा कि पोषण वाटिका बच्चों में कुपोषण दूर करने और स्वास्थ्यवर्धक भोजन उपलब्ध कराने में सहायक है, जिसे सभी विद्यालयों में प्रभावी ढंग से लागू किया जाए. इसके अलावा बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जांच कराना और उन्हें आयरन की गोली देना अनिवार्य करने का भी निर्देश दिया गया.

समीक्षा के दौरान विद्यालयों में छात्र-छात्राओं का शत-प्रतिशत नामांकन, मध्याह्न भोजन, पोशाक और छात्रवृत्ति समेत अन्य बिंदुओं पर प्रखंडवार विस्तृत मूल्यांकन किया गया और आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए. बैठक में जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रिंस कुमार, क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी ऋषिकेश कुमार, संबंधित पदाधिकारी, एडीपीओ, एपीओ और सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे. उपायुक्त ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए कि बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य से जुड़े सभी कार्यक्रमों का प्रभावी और नियमित क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, ताकि जिले के सभी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सेवाएं प्रदान की जा सकें.

सभी बैंक अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करें

लातेहार । उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति (डीएलसीसी) की द्वितीय तिमाही बैठक आयोजित की गई. बैठक में मुख्य रूप से वार्षिक ऋण योजना 2025-2026 की बैंकों की उपलब्धियों और सीडी रेशियों पर चर्चा की गई. उपायुक्त ने सभी बैंक शाखाओं को निर्देश दिया कि वे सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, किसान क्रेडिट कार्ड, सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण, प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेन्डर्स आत्मनिर्भर निधि और स्वयं सहायता समूहों को ऋण उपलब्ध कराने में लक्ष्य के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित करें. साथ ही उन्होंने एलडीएम को ऋण स्वीकृति में प्राथमिकता देने और लापरवाही न बरतने के निर्देश दिए. बैठक में उप विकास आयुक्त सैय्यद रियाज अहमद, रिजर्व बैंक के जिला अधिकारी आखंडल सोरेन, जिला बैंक प्रबंधक नरेंद्र श्रीवास्तव, नाबार्ड के जेआर सोरेन और जिले के विभिन्न बैंक शाखा प्रबंधक उपस्थित थे.

लेप्रोसी रोगी खोज अभियान 2025 का शुभारंभ

शुभम संदेश । लातेहार

नये कुष्ठ रोगियों की प्रारंभिक पहचान और समय पर इलाज सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लेप्रोसी रोगी खोज अभियान 2025 का शुभारंभ सोमवार को सदर अस्पताल के सभागार में किया गया. इस अवसर पर सिविल सर्जन डॉ. राजमोहन खलखो, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अलका हेंमब्रम, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी शोभना टोप्पो एवं सदर अस्पताल उपाधीक्षक डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की. डॉ. राजमोहन खलखो ने बताया कि यह अभियान 10 नवंबर से 26 नवंबर तक जिले भर में चलेगा. उन्होंने कहा कि लेप्रोसी रोग का समय पर उपचार करने पर मरीज को दिव्यांग होने से बचाया जा सकता है. प्रारंभिक अवस्था में केवल छह महीने तक दवा लेने पर रोग पूरी तरह ठीक हो जाता है, जबकि देर से पता चलने पर 12 महीने की दवा आवश्यक होती है, पर मरीज पूरी तरह ठीक हो जाते हैं. उपाधीक्षक डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद ने कहा कि आपसी सहयोग से ही लेप्रोसी को जिले से पूरी तरह समाप्त किया जा सकता है. जागरूकता बढ़ाने और रोगियों को इलाज के लिए प्रोत्साहित करने पर अभियान की सफलता निर्भर है. अभियान में 1193 महिला और पुरुष स्वास्थ्यकर्मी और 154 सुपरवाइजर शामिल हैं. वर्तमान में जिले में इलाजरत कुष्ठ रोगियों की संख्या 245 है.

अजगर ने हिरण को निगला, ग्रामीण हुए हैरान

शुभम संदेश । उंटारी रोड, पलामू

उंटारी रोड प्रखंड क्षेत्र के मुरमा कलां जंगल में एक हैरान करने वाला दृश्य देखने को मिला, जब एक विशालकाय अजगर ने जिंदा हिरण को निगल लिया. यह नजारा स्थानीय चरवाहों और ग्रामीणों के लिए चौंकाने वाला था. स्थानीय लोग सौरभ सिंह, निरंजन ठाकुर, सोनू ठाकुर, जयप्रकाश ठाकुर और रतीश इनोद राज सहित मौके पर पहुंचे और भीड़ जुट गई. भीड़ का शोर सुनकर अजगर ने हिरण को छोड़ दिया और झाड़ियों की ओर रेंगते हुए जंगल में छिप गया. ग्रामीणों ने बताया कि ऐसा दृश्य उन्होंने पहले कभी नहीं देखा. वन विभाग को सूचना दे दी गई है ताकि जंगल में सुरक्षा बढ़ाई जा सके और वन्यजीवों पर निगरानी रखी जा सके.

चुनाव से पहले पलामू में विशेष जांच अभियान

मेदिनीनगर । बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर पलामू पुलिस ने सीमा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने और अवैध गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए विशेष चेकिंग अभियान शुरू किया है. इस अभियान के तहत वाहनों, यात्रियों और संदिग्ध व्यक्तियों की विस्तृत जांच की जा रही है ताकि अवैध शराब, नकद राशि, हथियार या अन्य प्रतिबंधित सामग्रियों की आवाजाही रोकी जा सके. पुलिस की गश्ती पिपरा, हरिहरगंज, हैदरनगर, जपला, मनातू, देवरी ओपी, नौडीहा ओपी और नौडीहा थाना क्षेत्रों में सघन रूप से की जा रही है. पलामू एसपी रिष्मा रमेशन के निर्देश पर यह जांच अभियान दिन-रात जारी है. प्रत्येक थाना प्रभारी को सतर्कता बढ़ाने और नाकाबंदी एवं गश्ती को और मजबूत करने का निर्देश दिया गया है. पुलिस ने कहा कि इस अभियान से चुनावी समय में किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि को रोका जा सकेगा और कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिलेगी.

रन फॉर झारखंड से जिले में स्थापना दिवस कार्यक्रमों का शुभारंभ

मेदिनीनगर । झारखंड राज्य स्थापना दिवस के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर इस वर्ष "झारखंड @25" थीम के अंतर्गत जिले में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं. इसी कड़ी में 11 नवंबर को "रन फॉर झारखंड" कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा. दौड़ सुबह 8 बजे पलामू समाहरणालय से जिला एथलेटिक्स स्टेडियम तक आयोजित होगी, जिसमें उपायुक्त हरी झंडी दिखाकर प्रतिभागियों को रवाना करेंगी. दौड़ में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए जाएंगे. जिला प्रशासन ने आयोजन की सफलता और सुचारू संचालन के लिए विशेष तैयारी की है. उपायुक्त समीरा एस ने आमजनों से अधिक से अधिक भागीदारी की अपील की है. इस कार्यक्रम में क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्रों के प्रशिक्षु खिलाड़ी, पूर्व खिलाड़ी, एनवाईके वॉलिंटियर्स, विद्यालय, महाविद्यालय, स्वयंसेवी संस्थाएं, एनएसएस और विभिन्न सामाजिक संगठन भी भाग लेंगे.

एक नजर

महुआडांड़ में घर में आग लगने से 50 हजार से अधिक का सामान जलकर खाक हुआ

महुआडांड़ (लातेहार) । प्रखंड अंतर्गत बड़ाइक टोली निवासी अनिल कुमार बड़ाइक के घर में रविवार की रात लगभग 10:30 बजे अचानक आग लग गई. परिवार के सभी सदस्य सो रहे थे, तभी उनके भाई ने आग का लपेट उठते देखा. सभी ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन घर का सारा सामान, धान, चावल और अन्य जरूरत की सामग्री पूरी तरह जलकर खाक हो गई. आग लगने का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है. अनिल कुमार बड़ाइक मजदूरी करके जीवन यापन करते हैं और इस घटना से परिवार गंभीर चिंतित है. उन्होंने अंचल अधिकारी को लिखित आवेदन देकर मुआवजे की मांग की है, ताकि उनके जीवन यापन की स्थिति सामान्य हो सके.

पत्रकार मनोज कुमार सिंह की पत्नी का निधन

पांडु (पलामू) । पांडु दैनिक समाचार पत्र के स्थानीय पत्रकार मनोज कुमार सिंह (करमडीह) की पत्नी का आरएमएस रांची में इलाज के दौरान आज सुबह 7:00 बजे निधन हो गया. इस दुखद घटना ने स्थानीय समाज और पत्रकारों में गहरा शोक उत्पन्न कर दिया. मृत्यु की सूचना मिलने पर स्थानीय पत्रकारों के साथ-साथ मुखिया संघ की अध्यक्षा प्रियंका कुमारी, पांडु प्रमुख नीतू सिंह, समाजसेवी निशीथ सिंह बिट्टू, जिला परिषद सदस्य, क्षेत्रीय विधायक नरेश प्रसाद सिंह, भाजपा प्रदेश मंत्री मनोज सिंह, प्रखंड विकास पदाधिकारी रणवीर कुमार, थाना प्रभारी विगेश कुमार राय और स्थानीय ग्रामीणों ने परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की. समाज के लोग इस कठिन समय में मनोज कुमार सिंह और उनके परिवार के साथ खड़े होने की बात कहकर उन्हें सांत्वना प्रदान कर रहे हैं.

30 अवैध सखुआ चौखट बरामद, पिता-पुत्र गिरफ्तार

लातेहार । सदर थाना क्षेत्र में वन विभाग ने रविवार रात बड़ी कार्रवाई करते हुए सखुआ प्रजाति की 29 अवैध चौखट बरामद की. बाजार में इनकी अनुमानित कीमत 50 हजार रुपए आंकी गई है. छापेमारी बंदी रेलवे स्टेशन के पास की गई, जहाँ एक पीकअप वाहन (जेएच-01 एफएल-4944) को रोका गया. वाहन की तलाशी में लकड़ी के दस्तावेज़ नहीं पाए गए. इस अवैध कारोबार में शामिल पिता-पुत्र संजय शर्मा और भोला शर्मा को गिरफ्तार किया गया है. दोनों शिवपुरी, लातेहार के निवासी हैं. वाहन चालक आशीष गुप्ता मौके से फरार हो गया. वन प्रमंडल पदाधिकारी की सूचना पर वन विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम ने कार्रवाई की. इस अभियान में रेंजर नंद कुमार महतो, प्रभारी वनपाल पिंटू कुमार, वनरक्षी पवनदीप बेक, सूरज कुमार सिन्हा, जय जयेंद्र कुमार और बिरंजन कुमार शामिल थे. वन विभाग ने अवैध लकड़ी की तस्करी रोकने और जिम्मेदारों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है.

स्थापना दिवस पर 12 से 28 नवंबर तक पलामू में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर

मेदिनीनगर । झारखंड राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर पलामू में 12 से 28 नवंबर तक स्वैच्छिक रक्तदान महाअभियान का आयोजन किया जा रहा है. स्वास्थ्य विभाग और पलामू उपायुक्त समीरा एस. के निर्देश पर सिविल सर्जन डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने विभिन्न प्रखंडों और संस्थानों में शिविरों की तिथियां और स्थान निर्धारित कर दिए हैं. उपायुक्त ने लोगों से अपील की है कि अधिक-से-अधिक संख्या में रक्तदान कर मानव सेवा में योगदान दें और पलामू में नया रिकॉर्ड बनाएं. रक्तदान शिविरों का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंदों के लिए सुरक्षित रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करना है. शिविर 12 व 13 नवंबर को चैनपुर, 14 नवंबर लेस्लीगंज, 15 नवंबर मनातू, 16 नवंबर विश्रामपुर, 17-18 नवंबर छतरपुर, 19-21 नवंबर हुसैनाबाद, 22 नवंबर हरिहरगंज, 23 नवंबर पांकी, 24 नवंबर पाटन और 25-28 नवंबर सदर अस्पताल/मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज में आयोजित होंगे. सभी चिकित्सा पदाधिकारियों को बीडीओ से समन्वय कर आयोजन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं.

बिजली, पानी और सड़क की मांग को लेकर ग्रामीणों ने की आमसभा

बरवाडीह (लातेहार)। लात पंचायत भवन परिसर में सोमवार को बिजली, पानी और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी को लेकर ग्रामीणों ने आमसभा का आयोजन किया. सभा की अध्यक्षता पूर्व मुखिया जगसहाय सिंह ने की. लात पंचायत में कुल 13 गांव हैं, जिनमें से 12 गांव आज भी बिजली जैसी मूलभूत सुविधा से वंचित हैं. ग्रामीणों ने बताया कि ढिबरी के सहारे अंधेरे में जीवन यापन करना मजबूरी बन गई है. पंचायत प्रखंड मुख्यालय से 35-40 किलोमीटर दूर होने के बावजूद यहां पक्की सड़क और बिजली कनेक्शन नहीं है. सभा में उपस्थित ग्रामीणों ने सर्वसम्मति से तय किया कि 11 नवंबर को एक प्रतिनिधिमंडल जिला मुख्यालय जाकर बिजली विभाग के अधिकारियों को ज्ञापन सौंपेगा. ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि समय सीमा में समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो वे बिजली विभाग कार्यालय में तालाबंदी करेंगे. इस मौके पर ग्राम प्रधान अशोक यादव, नेमा सिंह, उद्यनाथ सिंह, इन्द्रनाथ कोरवा, मनिता देवी, ललिता देवी, महेश सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे.

डॉ आर शरण संस्था की ओर से परहिया टोला में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन हुआ

चंदवा (लातेहार) । प्रखंड के कामता पंचायत के चटुआग ग्राम के आदिम जनजाति बहुल परहिया (पीवीटीजी) टोला में डॉ. रमेश शरण (पूर्व कुलपति, विनोबा भावे विश्वविद्यालय) की स्मृति में आर. शरण संस्था के तत्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर में लगभग 110 ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच की गई, जिनमें 80 से अधिक परहिया समुदाय के सदस्य शामिल थे. जांच में वजन, रक्त, हिमोग्लोबिन, मधुमेह, बीपी, जुखाम, बुखार, खांसी, मलेरिया आदि की जांच की गई. कई मरीजों में टीबी, कुष्ठ और लिवर रोग जैसी गंभीर बीमारियां पाई गईं, जिन्हें तत्काल चिकित्सकीय परामर्श और आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराई गईं. शिविर में यह भी पाया गया कि पीवीटीजी समुदाय में कुपोषण गंभीर है, महिलाओं में एनीमिया और वृद्धों में हड्डियों की कमजोरी व त्वचा रोग आम हैं. शिविर में सेवानिवृत्त चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अमरनाथ प्रसाद, सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद, बीडीएस बालूमाथ स्वास्थ्य केंद्र की डॉ. अलीशा टोप्पो समेत अन्य चिकित्सक और तकनीशियन ने अपनी सेवाएं दीं.

लातेहार में रोजगार मेला आयोजित, 24 पदों पर चयन

लातेहार । जिला नियोजन कार्यालय, लातेहार के द्वारा सोमवार को जिला स्टेडियम परिसर में एकदिवसीय रोजगार भर्ती शिविर का आयोजन किया गया. इसका उद्घाटन जिला नियोजन पदाधिकारी संतोष कुमार ने किया. उन्होंने कहा कि इस शिविर का उद्देश्य झारखंड राज्य के युवाओं और युवतियों को निजी क्षेत्र की कंपनियों, प्रतिष्ठानों और संस्थानों में रोजगार के अवसर प्रदान करना है. श्री कुमार ने जिला नियोजन कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली विभिन्न सुविधाओं के बारे में जानकारी दी. उन्होंने सक्षम झारखंड कौशल विकास योजना और बिरसा योजना पर भी प्रकाश डालते हुए युवाओं से विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण लेने का आग्रह किया. इस रोजगार मेले में इंडिगो सिक्योरिटी फोर्स, उत्कर्ष स्मॉल फाइनांस बैंक, गोयम ग्रुप प्राइवेट लिमिटेड और एयरटेल पेमेंट बैंक, रांची के माध्यम से 24 पदों पर उम्मीदवारों का चयन किया गया, जबकि 27 अभ्यर्थियों को शॉर्टलिस्ट किया गया. कुल 145 युवाओं ने इस शिविर में भाग लिया. शिविर में नियोजनालय कार्यालय के प्रवीण भाष्कार तिर्की, यूएनडीपी सुभाष कुमार और लक्ष्मीकांत तिवारी सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे.

कार्यक्रम संतों की परंपरा और हमारा समाज विषयक 86वीं सांस्कृतिक पाठशाला

संत वहीं जो समाज को जोड़ें और सत्य का मार्ग दिखाएं

शुभम संदेश । मेदिनीनगर

सत्य बोलने की शक्ति रखने वाले ही सच्चे संत कहलाते हैं और उनका कार्य समाज को बिना किसी भेदभाव के जोड़ना होता है. यह बातें प्रो. के डी झा ने इप्टा द्वारा आयोजित "संतों की परंपरा और हमारा समाज" विषयक 86वीं सांस्कृतिक पाठशाला में कही. उन्होंने बताया कि साधु और संत में सूक्ष्म अंतर है—साधु साधक होता है, ऋषि ऋचाओं का लेखक और संत वह होता है जो सत्य मार्ग पर चलते हुए ईश्वर से साक्षात्कार का मार्ग दिखाता है. प्रस्तुत कार्यक्रम की अध्यक्षता पंकज श्रीवास्तव और कमल चंद किसपोटा ने की. विषय प्रवेश कराते हुए प्रेम प्रकाश ने कबीर, तुलसी, नानक, रहीम, मीरा सहित अनेक संतों का स्मरण कर समाज में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि संतों की वाणी समाज याद करता है, लेकिन जीवन में अपनाने से हिचकिचाता है. संवाद में शिक्षक गोविंद प्रसाद ने बताया कि संतों की वाणी और समाज के व्यवहार में अंतर है. अच्छे लाल प्रजापति ने कहा कि संतों की परंपरा तब शुरू हुई जब समाज में जाति, धर्म और संप्रदाय की भावना चरम पर थी. संतों ने इन सीमाओं से ऊपर उठकर आपसी सद्भाव और एकता का संदेश दिया. ललन प्रजापति ने कहा कि संतों की वाणी के अनुरूप जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए. इप्टा के कार्यकारी अध्यक्ष सुरेश सिंह ने कहा कि आधुनिक युग में कई संत राजनीति में प्रवेश कर चुनाव लड़ रहे हैं, जबकि मूल संत परंपरा समाज को जोड़ने और सत्य का मार्ग दिखाने की थी. वरिष्ठ पत्रकार मिथिलेश कुमार ने कहा कि आज संतों की वाणी की मनमानी व्याख्या कर परंपरा को प्रदूषित किया जा रहा है. अजीत कुमार और संजीव कुमार संजू ने भी अपने विचार रखे.

अंत में कमल चंद किसपोटा ने कहा कि सच्चा संत वही होगा जो व्यक्ति को प्रकृति और वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है. पंकज श्रीवास्तव ने कहा कि संतों ने भगवान को मूर्ति के रूप में नहीं, बल्कि उनके गुण और आचरण के रूप में आत्मसात करने की शिक्षा दी. कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन इप्टा जिला सचिव रवि शंकर ने किया और नाटक पुस्तक का वितरण किया गया.

डोमचांच में अधेड़ का शव बरामद, बेटे ने हत्या की आशंका जताई

डोमचांच (कोडरमा) । थाना क्षेत्र अंतर्गत रमेश प्रसाद यादव डिग्री कॉलेज रोड में सोमवार को 55 वर्षीय राज कुमार राज का शव बरामद हुआ. मृतक पांडेयबागी (डोमचांच) निवासी थे. उनके पुत्र प्रिंस राज ने बताया कि पिता सुबह करीब 10 बजे स्कूटी लेकर घर से निकले थे और प्रायः ब्लॉक क्षेत्र में लोगों का काम करवाते थे. प्रिंस ने कहा कि उनके पिता किसी बीमारी से पीड़ित नहीं थे, इसलिए स्वाभाविक मौत की संभावना नहीं है. उन्होंने हत्या की आशंका जताई है. थाना प्रभारी अभिमन्यु कुमार ने बताया कि शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है. पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारण स्पष्ट होंगे. फिलहाल मामले की जांच जारी है और पुलिस संभावित हत्या के पहलुओं पर जांच कर रही है.

अबुआ झारखंड सरकार में भी मसूरीतारी, परसातरी और गिधनिया गांवों तक सड़क नहीं बन पाई

दुखी ग्रामीणों ने खुद बनाई एक किलोमीटर लंबी सड़क

शुभम संदेश ।विष्णुगढ़

प्रखंड के गोविंदपुर पंचायत अंतर्गत चितरामो गांव के मसूरीतरी टोला के ग्रामीणों ने सरकारी उदासीनता से तंग आकर अपने बलबूते करीब एक किलोमीटर लंबी सड़क तैयार कर दी. कुदाल और गैता लेकर किए गए इस श्रमदान कार्य की अध्यक्षता सोहन हेमब्रोम ने की. उन्होंने बताया कि 78 वर्षों के नए भारत और 25 वर्षों के अबुआ झारखंड सरकार में भी मसूरीतारी, परसातरी और गिधनिया गांवों तक सड़क नहीं बन पाई. हर चुनाव में आश्वासन तो मिलता है, पर सड़क नहीं. मजबूर होकर ग्रामीणों ने स्वयं सड़क निर्माण शुरू किया.

ग्रामीणों ने बताया कि बरसात के दिनों में इस इलाके में पैदल चलना भी कठिन हो जाता है. सड़क की अनुपस्थिति से डिलेवरी मरीजों और सर्पदंश पीड़ितों की जानें भी जा चुकी हैं. साथ ही, विवाह योग्य युवक-युवतियों के रिश्ते भी सड़क सुविधा न होने के कारण टूट जाते हैं. इस समस्या के समाधान हेतु ग्रामीणों ने प्रशासन और सरकार से शीघ्र पक्की सड़क निर्माण की मांग की.

इस श्रमदान कार्य में सोमर सोरेन, अर्जुन मरांडी, धनीराम मरांडी, महेश मरांडी, मेहीलाल टुडू, सरजू हेमब्रोम, अनिल हेमब्रोम, फेनीराम मुर्मू, बड़की देवी, अनीता देवी, प्रीति देवी, तालो हेमब्रोम, रुपमनी देवी, फूलमुनी देवी, मालती देवी सहित सैकड़ों महिला-पुरुष उपस्थित थे. उन्होंने अपनी मेहनत और आत्मनिर्भरता से दिखाया कि यदि सरकार और प्रशासन उदासीन हों, तो भी ग्रामीण स्वयं अपने लिए बदलाव ला सकते हैं. ग्रामीणों ने कहा कि यह सड़क उनके जीवन की सुविधा और सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक थी. उनका यह प्रयास गांववासियों में आत्मनिर्भरता, एकजुटता और सामूहिक मेहनत की प्रेरणा देता है. प्रशासन को चाहिए कि वह इस पहल को देखते हुए पक्की सड़क का निर्माण शीघ्र पूरा कराएं, ताकि ग्रामीणों की समस्या स्थायी रूप से हल हो सके. इस तरह, मसूरीतरी टोला के ग्रामीणों ने सरकार की बेरुखी के बीच भी समाज में बदलाव लाने की मिसाल पेश की है.

पीवीयूएनएल यूनिट-1 का सफल संचालन, झारखंड को मिलेगी 85% बिजली: सांसद मनीष जायसवाल

रामगढ़ । हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने रामगढ़ स्थित शिवम इन होटल में आयोजित प्रेस वार्ता में पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (पीवीयूएनएल) की यूनिट-1 के वाणिज्यिक संचालन को झारखंड के लिए ऐतिहासिक बताया. उन्होंने कहा कि यह प्लांट तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास के दूरदर्शी सोच का परिणाम है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सहयोग से यह योजना धरातल पर उतरी. सांसद ने बताया कि इस प्लांट से उत्पन्न बिजली का 85% झारखंड राज्य को मिलेगा, जबकि केवल 15% अन्य राज्यों को जाएगा. अन्य पावर प्लांटों में आम तौर पर राज्य को मात्र 25% बिजली मिलती है. यह आधुनिक ड्राई ऐश टेक्नोलॉजी वाला प्लांट है, जिसमें कम पानी की खपत होगी और प्रदूषण रहित बिजली उत्पादन सुनिश्चित होगा. अगले साल दिसंबर तक सभी यूनिटें चालू होने पर यह प्लांट देश को 4000 मेगावाट बिजली उपलब्ध कराएगा. सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि उन्होंने भी बतौर झारखंड विधानसभा सदस्य परियोजना के क्रियान्वयन में सहयोग किया.

झारखंड स्थापना दिवस पर जिले में होंगे कार्यक्रम

हजारीबाग । झारखंड राज्य के 25वें स्थापना दिवस एवं भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में हजारीबाग जिला प्रशासन द्वारा "रजत जयंती समारोह" का भव्य आयोजन किया जा रहा है. इस अवसर पर जिले भर में विभिन्न सांस्कृतिक, खेल और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे. उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने बताया कि राज्य स्थापना की 25 वर्षों की गौरवगाथा, संस्कृति और विकास को साझा करने के लिए जिला मुख्यालय और प्रखंड मुख्यालय तक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे. 11 नवम्बर को सुबह 07:00 बजे जिला मुख्यालय से डी.टी.ओ. ऑफिस से झंडा चौक तक रन फॉर झारखंड का आयोजन होगा. 12 नवम्बर को सुबह 10:00 बजे बड़ा अखाड़ा से ग्वालटोली चौक, पंच मंदिर, झंडा चौक तक स्ट्रीट डांस का आयोजन किया जाएगा. 13 नवम्बर को सुबह 07:00 बजे साइक्लोथॉन कैनरी हिल से झील तक आयोजित किया जाएगा. 14 नवम्बर को दोपहर 12:00 बजे कर्जन ग्राउंड में जतरा मेला का आयोजन होगा. मुख्य कार्यक्रम 15 नवम्बर को दोपहर 12:00 बजे विवेकानंद सभागार, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग में आयोजित किया जाएगा. जिला प्रशासन ने सभी कार्यक्रमों की तैयारी पूरी कर ली है.

कस्तूरबा में सुरक्षा चूक पर डीसी ने की कार्रवाई

चतरा । शुभम संदेश दैनिक अखबार की खबर का असर देखने को मिला है. कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय प्रतापपुर से दो छात्राओं के लापता होने के गंभीर मामले में चतरा के उपायुक्त कीर्तिश्री ने कड़ी कार्रवाई की है. सोमवार को उपायुक्त ने विद्यालय का औचक निरीक्षण किया और सुरक्षा में चूक पाए जाने पर दोनों नाइट गार्डों को तत्काल निलंबित कर दिया. इसके साथ ही उन्हें एक वर्ष तक किसी भी पदस्थापन से वर्जित रखने का आदेश दिया गया. ज्ञात हो कि बीते दिनों भित्हा गांव की ये दोनों बच्चियां रात भर गायब रहीं, जिन्हें प्रतापपुर पुलिस ने सुबह जंगल से सुरक्षित बरामद किया. इस मामले को शुभम संदेश ने प्रमुखता से उजागर किया था, जिसके बाद प्रशासन ने सख़्ती दिखाई. उपायुक्त ने केवल सुरक्षा ही नहीं बल्कि विद्यालय की अन्य व्यवस्थाओं पर भी ध्यान दिया. आईसीटी रूम, विज्ञान प्रयोगशाला, जिम रूम, स्मार्ट क्लास रूम और रसोईघर का निरीक्षण किया. छात्राओं से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं को सुना. वार्डन सरिता कुमारी, सुषमा कुमारी और अनिता कुमारी को सुरक्षा, स्वच्छता और निगरानी व्यवस्था को बेहतर बनाने के सख्त निर्देश दिए गए. इसके अलावा, विद्यालय में चल रही जलापूर्ति समस्या के शीघ्र समाधान का भी आश्वासन दिया गया. यह कार्रवाई दर्शाती है कि मीडिया की खबरें प्रशासनिक स्तर पर प्रभाव डाल सकती हैं और सुरक्षा एवं सुविधाओं में सुधार की दिशा में कदम उठाए जा सकते हैं.

शुभम संदेश
खबर का असर

हजारीबाग सदर अस्पताल में जल्द होगी रोटी बैंक की स्थापना

सभी जरूरतमंदों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाएगा

शुभम संदेश ।हजारीबाग

रांची रोटी बैंक के संस्थापक विजय पाठक ने समाजसेवी एवं जदयू नेता राकेश गुप्ता का अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया. इस अवसर पर दोनों के बीच हजारीबाग सदर अस्पताल में रोटी बैंक की जल्द स्थापना को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा हुई. रोटी बैंक के माध्यम से सैकड़ों जरूरतमंद मरीजों और उनके परिजनों को निशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे अस्पताल आने वाले लोग भूख से परेशान नहीं होंगे.

राकेश गुप्ता ने कहा कि रोटी बैंक जैसा कार्य समाज में मानवता और सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है. उन्होंने बताया कि रांची रिम्स में पिछले 6 वर्षों से रोटी बैंक संचालित है, जिसमें 500 से अधिक जरूरतमंदों को प्रतिदिन निशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाता है. हजारीबाग सदर अस्पताल में इस व्यवस्था के शुरू होने से भी सैकड़ों जरूरतमंद मरीजों और उनके परिजनों को भोजन सुविधा प्राप्त होगी. उन्होंने इसे समाज में मानवता की सच्ची सेवा और प्रेरणा का कार्य बताया.

इस अवसर पर रांची रोटी बैंक के सदस्यगण एवं अन्य समाजसेवी उपस्थित थे. उन्होंने राकेश गुप्ता के सामाजिक कार्यों की सराहना की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की. आयुष पाठक, नीरज सिन्हा सहित कई गणमान्य लोग भी मौजूद थे. विजय पाठक ने कहा कि रोटी बैंक का उद्देश्य केवल भूख मिटाना नहीं, बल्कि समाज में सेवा और मानवता का संदेश फैलाना भी है. राकेश गुप्ता ने बताया कि इस पहल से अस्पताल में आने वाले मरीजों को न केवल पोषण मिलेगा, बल्कि मानसिक राहत भी मिलेगी. यह कदम स्थानीय प्रशासन, समाजसेवी संस्थाओं और नागरिकों को मिलकर समाज के कमजोर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा देगा.

हजारीबाग में रोटी बैंक की स्थापना से स्वास्थ्य संस्थानों में मरीजों और उनके परिवारों के लिए भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित होगी. यह पहल मानव सेवा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है और समाज में दूसरों की मदद करने की भावना को बढ़ावा देगी.

मेघातरी चेक पोस्ट पर अवैध अंग्रेजी शराब बरामद, चालक गिरफ्तार

शुभम संदेश ।कोडरमा

झारखंड-बिहार सीमा पर अवस्थित मेघातरी मिरर चेक पोस्ट पर सघन वाहन जांच के दौरान भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब बरामद की गई. पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह को गुप्त सूचना मिली कि एक ट्रक पर अवैध शराब लदी हुई है, जो बिहार की ओर जा रहा है. पुलिस ने ट्रक पंजीयन संख्या बी0आर0 56जी0-4297 को रोककर तलाशी ली, जिसमें कुल 279 पेटी शराब बरामद हुई. बरामद शराब में इम्पेरियल ब्लू 52 पेटी (468 लीटर), रॉयल स्टेज 98 पेटी (882 लीटर), रॉयल चैलेंज 46 पेटी (414 लीटर) और आइकॉनिक व्हाइट 73 पेटी (657 लीटर) शामिल हैं. कुल शराब की मात्रा 2421 लीटर और अनुमानित मूल्य 16,50,000/- रुपए है. ट्रक चालक शिशुरंजन उर्फ सोनु (24 वर्ष), पिता उपेन्द्र प्रसाद, साकिन मानपूर, थाना सारे, जिला नालंदा (बिहार) को गिरफ्तार किया गया. वह शराब के परिवहन के लिए आवश्यक कागजात प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा. पुलिस ने ट्रक और शराब को जब्त कर कोडरमा थाना में अवैध शराब तस्करी के तहत मामला दर्ज किया. इस कार्रवाई में विकास पासवान, पुनि-सह-थाना प्रभारी, कोडरमा थाना, सशस्त्र बल और मेघातरी चेक पोस्ट पर प्रतिनियुक्त पुलिस बल शामिल थे. पुलिस ने मामले में अन्य आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के लिए छापामारी शुरू कर दी है.

अवैध शराब पर सघन कार्रवाई , 450 लीटर महुआ चुलाई शराब जब्त, 12000 किग्रा किन्वित जावा नष्ट

चौपारण \हजारीबाग । उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह के आदेश पर सहायक आयुक्त उत्पाद, हजारीबाग के निर्देशन में जिले में अवैध शराब निर्माण एवं तस्करी के खिलाफ विशेष अभियान चलाया गया. इसके तहत चोरदाहा चेक पोस्ट के उत्पाद कर्मियों ने बिहार सीमा के नजदीकी भगहर पंचायत के ग्राम भगहर झरना ठाकुरटोला में छापेमारी की. छापेमारी में अवैध महुआ शराब भट्टियाँ पाई गईं और उन्हें ध्वस्त किया गया. लगभग 12000 किग्रा किन्वित जावा और शराब निर्माण की अन्य सामग्रियाँ नष्ट की गईं. इसके साथ ही तैयार 450 लीटर महुआ चुलाई शराब जब्त की गई. संलिप्त अभियुक्तों की पहचान की जा रही है और उनके खिलाफ सुसंगत धाराओं में अभियोग दर्ज किया गया है. इस अभियान में अवर निरीक्षक उत्पाद सुमितेश कुमार, सहायक अवर निरीक्षक सैयद बशीरुद्दीन, एंटोनी बागे, उत्पाद आरक्षी अनूप कुमार सिंह और सशस्त्र गृहरक्षा वाहिनी के जवान शामिल थे. सहायक आयुक्त ने बताया कि चुनाव के मद्देनजर अवैध शराब पर विशेष छापेमारी अभियान निरंतर जारी रहेगा.

बीडीओ के मार्गदर्शन में प्रशिक्षुओं ने मरकच्चो गांव का किया भ्रमण

मरकच्चो (कोडरमा) । लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी के 100वें फाउंडेशन फॉर्थ ऑफिसर ट्रेनीज़ के छह प्रशिक्षुओं ने मरकच्चो प्रखंड के ग्राम पंचायत मरकच्चो उत्तरी का भ्रमण किया. कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को प्रखंड कार्यालय से हुआ. प्रशिक्षुओं का पंचायत सचिवालय में आरती, सांस्कृतिक मुकुट और फूल मालाओं से स्वागत किया गया. प्रशिक्षुओं ने प्रज्ञा केंद्र, मनरेगा ग्राम रोजगार सेवक कक्ष का निरिक्षण किया.

चोरी का सफल उद्भेदन आरोपी व जेवरात बरामद

हजारीबाग । शहर के बड़ा बाजार ओपी क्षेत्र में हुई बड़ी चोरी का पुलिस ने सफल उद्भेदन किया. चोरी की घटना 5 नवंबर को चतरा बस स्टैण्ड के पास वादी सरादार रणवीर सिंह के घर हुई थी, जिसमें लगभग 40 लाख रुपए मूल्य के सोना और चाँदी के आभूषण चोरी हो गए थे. पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी शाखा की मदद से आरोपी पुरूषोतम कुमार यादव उर्फ फक्कू को गिरफ्तार किया. पूछताछ में उसने चोरी की घटना और अपने द्वारा चोरी किए गए आभूषण कुछ बेचने तथा कुछ अपने घर छुपाने की बात स्वीकार की.

कार्यक्रमों की तैयारी को लेकर डीसी की बैठक

कोडरमा । झारखंड स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में "झारखंड @25" थीम पर जिले में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन की तैयारी को लेकर उपायुक्त श्री ऋतुराज की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित की गई. बैठक में उपायुक्त ने सभी विभागों को स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा तैयार करने का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि झारखंड के 25 वर्षों की गौरवशाली यात्रा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन उत्साह और अनुशासन के साथ किया जाए. उपायुक्त ने आंगनबाड़ी केंद्रों में बाल विकास, पोषण और महिला सशक्तिकरण से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने का निर्देश दिया. जिला खेल पदाधिकारी को "रन फॉर झारखंड" कार्यक्रम की तैयारी करने और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन सुनिश्चित करने के लिए कहा गया.

जागरुकता अवर निरीक्षक ने क्षेत्र के पेट्रोल पंपों में पोस्टर चिपकाकर लोगों को किया जागरूक

रजरप्पा थाना पुलिस ने नो हेलमेट- नो फ्यूल नियम लागू किया

शुभम संदेश ।रामगढ़

रजरप्पा थाना प्रभारी कृष्ण कुमार के निर्देश पर सोमवार से थाना क्षेत्र में ₹नो हेलमेट, नो फ्यूल₹ नियम को लागू कर दिया गया. इसके तहत बिना हेलमेट पहने दोपहिया सवारों को क्षेत्र के पेट्रोल पम्पों पर पेट्रोल नहीं मिलेगा. इस अभियान का उद्देश्य सड़क सुरक्षा को सुनिश्चित करना और लोगों को हेलमेट पहनने के लिए जागरूक करना है.

रजरप्पा थाना पुलिस ने स्पष्ट किया है कि यह सख्ती केवल पोस्टर लगाने तक सीमित नहीं है. यदि कोई पेट्रोल पंप संचालक नियम का उल्लंघन करता है और बिना हेलमेट वालों को पेट्रोल देता है, तो उसके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी. यह कदम सड़क सुरक्षा के प्रति पुलिस की गंभीरता को दर्शाता है.

अभियान के तहत सोमवार को रजरप्पा थाना के अवर निरीक्षक रंजीत महतो ने क्षेत्र के सभी पेट्रोल पम्पों में ₹नो हेलमेट, नो फ्यूल₹ पोस्टर चिपकाकर लोगों को जागरूक किया. उन्होंने बताया कि थाना प्रभारी के निर्देश पर यह अभियान पूरे थाना क्षेत्र में लागू किया गया है. इसके माध्यम से आम लोगों में हेलमेट पहनने की आदत को बढ़ावा देने की कोशिश की जा रही है.

थाना अधिकारियों ने कहा कि रजरप्पा थाना क्षेत्र में रोड एक्सीडेंट की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं. इन दुर्घटनाओं में कई लोग अपनी जान गंवा चुके हैं, जिनमें अधिकांश मामले ऐसे हैं जहां सवार हेलमेट नहीं पहन रहे थे. यही कारण है कि इस अभियान को गंभीरता से लागू किया जा रहा है.

अवर निरीक्षक रंजीत महतो ने आम लोगों से अपील की है कि वे सड़क पर अपनी गति को नियंत्रित करें और यातायात नियमों का पालन करें. उन्होंने कहा कि हेलमेट पहनना केवल कानून का पालन करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की जीवन सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है. पुलिस ने बताया कि इस अभियान के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम और पोस्टर भी लगाए जाएंगे.

रजरप्पा थाना पुलिस का यह कदम सड़क दुर्घटनाओं को कम करने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है. पुलिस लगातार इस नियम के पालन और सड़क सुरक्षा को लेकर निगरानी रखेगी.

एक नजर

विवाहिता की गला दबाकर हत्या, पति गिरफ्तार

चतरा । चतरा सदर थाना क्षेत्र के सजना गांव निवासी पूजा देवी (पति-गोलू विश्वकर्मा) का शव संदिग्ध अवस्था में घर में मिला. घटना को लेकर मृतका की मां ने सदर थाना में आवेदन देकर दामाद सहित छह लोगों को आरोपी बनाया है. महिला के अनुसार दहेज की खातिर पुत्री की ससुराल के लोगों ने हत्या कर दी है. इनमें पति के अलावा ससुर मनोज विश्वकर्मा, सास कंचन देवी, देवर छोटू कुमार, ननद माही कुमारी व कुसुम कुमारी शामिल हैं. बताया कि पुत्री की शादी वर्ष 2021 में वशिष्ठ नगर थाना क्षेत्र के जोरी निवासी गोलू विश्वकर्मा से हुई थी. कुछ दिनों तक सब ठीक-ठाक चला. इसके बाद से दहेज को लेकर पुत्री को प्रताड़ित किया जाने लगा. हमेशा बाइक, गहने की मांग की जाती थी. आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहने के कारण वे देने में असमर्थ थे. पुत्री के साथ हमेशा मारपीट किया जाता था. एक बार पुत्री के ऊपर गर्म पानी डाल दिया गया था. समझाने-बुझाने के बाद कुछ दिनों तक ठीक रहा. घटना के दिन उसके साथ मारपीट की गयी और गला दबाया गया, जिससे उसकी मौत हो गयी. बाद में आत्महत्या का रूप देने के लिए शव को फंदे से लटका दिया गया. पुलिस ने शव को कब्जे में कर सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया. इस संबंध में थाना प्रभारी विपिन कुमार ने कहा कि मृतका की मां के आवेदन के आधार पर मामला दर्ज कर पति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया.

धान के बंटवारे को लेकर विवाद, छोटे भाई की मौत

लावालौंग । लावालौंग थाना क्षेत्र के चानी गांव में धान के हिस्से को लेकर दो सगे भाइयों के बीच हुए विवाद ने खतरनाक रूप ले लिया. बड़ी भाई जगदीश भुइयां ने छोटे भाई संतोष भुइयां पर लकड़ी के डंडे से हमला कर दिया, जिससे संतोष गंभीर रूप से घायल हो गया और अस्पताल ले जाते समय उसकी मौत हो गई. घटना की जानकारी उसकी पत्नी ने पुलिस को दी. थाना प्रभारी प्रशांत मिश्रा ने बताया कि यह आपसी विवाद से उत्पन्न मामला है. आरोपी जगदीश घटना के बाद फरार है और उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस कई स्थानों पर छापेमारी कर रही है. घटना के बाद पूरे गांव में शोक और आक्रोश का माहौल है. ग्रामीण और परिवारजन प्रशासन से आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं.

हुसैनाबाद में लावारिस पड़ी सैकड़ों छात्राओं की साइकिलें, विभाग की लापरवाही से योजना ठप

हुसैनाबाद, पलामू । झारखंड सरकार की छात्राओं को निःशुल्क साइकिल देने की योजना हुसैनाबाद में ठप पड़ गई है. पुराने प्रखंड कार्यालय परिसर में सैकड़ों साइकिलें खुले मैदान में लावारिश पड़ी हैं, जिससे करोड़ों रुपए की सरकारी संपत्ति खराब हो रही है. स्थानीय लोगों के अनुसार साइकिलें कई महीने पहले ही पहुंच गई थीं और असेंबलिंग का काम भी पूरा हो गया, फिर भी वितरण नहीं हुआ. विभागीय अधिकारियों द्वारा हर बार नई तिथियां या सूची तैयार होने के बहाने बताये जा रहे हैं. इससे छात्राओं को विद्यालय आने-जाने में सुविधा नहीं मिल पा रही और योजना का उद्देश्य अधूरा रह गया है. शिक्षा विभाग के स्थानीय अधिकारी ने आश्वासन दिया कि सूची तैयार होते ही वितरण शुरू होगा, लेकिन अभिभावकों का कहना है कि पिछले महीनों से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया. हुसैनाबाद की स्थिति प्रशासनिक लापरवाही का उदाहरण है, जिस पर तुरंत कार्रवाई की आवश्यकता है.

बारीडीह में मुखिया मंजीत सिंह की पहल पर ग्रामीणों ने श्रमदान से सड़क की मरम्मत की

मयूरहंड (चतरा) । मंझगावां पंचायत के बाराडीह गांव में मुखिया मंजीत सिंह के नेतृत्व में ग्रामीणों ने श्रमदान कर सड़क की मरम्मती की. यह कार्य पूरी तरह से ग्रामीणों के सहयोग और मुखिया के निजी खर्च से किया गया. सड़क लंबे समय से जर्जर थी, जिससे लोगों को आवागमन में दिक्कत हो रही थी. मुखिया मंजीत सिंह ने जनता की समस्या को समझते हुए सरकारी फंड की परवाह किए बिना स्वयं ग्रामीणों के साथ मिलकर जेसीबी से मिट्टी, मोरम और डस्ट डालकर सड़क को दुरुस्त कराया. ग्रामीणों ने बताया कि मुखिया अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही हर छोटे-बड़े कार्य में जनता के साथ खड़े हैं और उनके उम्मीदों पर खरे उतर रहे हैं. लगभग पांच सौ मीटर सड़क की मरम्मती से अब ग्रामीणों को काफी राहत मिलेगी. इस कार्य में डॉ. अरुण कुमार दांगी, बजरंगी यादव, सूरजदेव पासवान, परुस्तम कुमार, राजकुमार दांगी और अन्य ग्रामीणों का विशेष योगदान रहा.

अज्ञात वाहन की टक्कर से एक युवक की मौत ग्रामीणों ने सड़क पर शव रख कर किया हंगामा

रामगढ़ । रजरप्पा थाना क्षेत्र के बुधबाजार के समीप रविवार देर शाम एक सड़क दुर्घटना में 27 वर्षीय राजकुमार महतो गंभीर रूप से घायल हो गए. उन्हें तुरंत सदर अस्पताल रामगढ़ पहुंचाया गया और बेहतर इलाज के लिए रिम्स रांची रेफर किया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. घटना की जानकारी मिलने पर परिजन और ग्रामीणों ने आक्रोश व्यक्त किया और शव को सड़क पर रखकर रामगढ़–बोकारो मुख्य मार्ग को जाम कर दिया. सैकड़ों लोग सड़कों पर बैठ गए, जिससे यातायात प्रभावित हुआ. रजरप्पा और रामगढ़ थाना प्रभारी मौके पर पहुंचकर समझाने का प्रयास किया, लेकिन ग्रामीण मुआवजे की मांग पर अड़े रहे. काफी समझाने के बाद मुआवजे का आश्वासन मिलने पर शव पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया. मृतक राजकुमार अपने परिवार का एकमात्र कमाऊ था और बुधबाजार में राशन की दुकान चलाकर पत्नी व छह माह की बेटी का पालन-पोषण करता था. मृतक के परिजन अब आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं. सुकरीगढ़ा मुखिया प्रतिनिधि मलेश्वर नायक ने मृतक परिवार को उचित मुआवजा देने की मांग की है.

चितरपुर के विद्यालयों में ओलंपियाड परीक्षा का आयोजन, विद्यार्थियों में दिखा खासा उत्साह

रामगढ़ । चितरपुर प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में सोमवार को बी.आर.एम. फाउंडेशन के तत्वावधान में कैट-लिस्ट ओलंपियाड 2025 का आयोजन किया गया. एपेक्स पब्लिक स्कूल, मैकोज़ पब्लिक स्कूल, मिडिल स्कूल लारी, मिनारा इंटरनेशनल स्कूल सहित अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साह और अनुशासन के साथ परीक्षा में भाग लिया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि, तार्किक क्षमता और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा देना था. एपेक्स पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करते हैं. परीक्षा सफल बनाने में शिक्षकों, समन्वयकों और बी.आर.एम. फाउंडेशन के प्रतिनिधियों का सराहनीय योगदान रहा. प्रतिभागी छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों की सराहना की गई. स्कूल प्रबंधन ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रम जारी रखने की घोषणा की.

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर झारखंड-बिहार सीमा पर बढ़ाई गई सुरक्षा व्यवस्था

चौपारण । बिहार विधान सभा चुनाव के दूसरे और अंतिम चरण का मतदान 11 नवंबर को होना है. इसे लेकर झारखंड-बिहार सीमा पर प्रशासन ने सुरक्षा बढ़ा दी है. सीमावर्ती इलाकों में चेक पोस्ट सक्रिय कर वाहनों और सामानों की सघन जांच की जा रही है ताकि अवैध गतिविधि, धन बल, शराब या असामाजिक तत्वों की प्रवेश को रोका जा सके. अभियान में बरही एसडीओ जोहान टुडू, बरही डीएसपी अजीत कुमार बिमल, चौपारण सीओ संजय कुमार यादव और थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी शामिल हैं. चोरदाहा और सिधुगढ़ चेकपोस्ट पर विशेष रूप से बाइक, कार, बस और मालवाहक वाहनों की जांच की जा रही है. थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी ने बताया कि वाहन जांच, गश्ती और नाकाबंदी दिन-रात जारी रहेगी.

आदिवासी कस्टम से मजबूत होगा गांव व समाजः देवेंद्र उरांव

शुभम संदेश। गुमला

चैनपुर प्रखंड के कुइयो गांव में सोमवार को अतखा पड़हा का गठन किया गया. पड़हा गठन कार्यक्रम की अध्यक्षता मूली पड़हा गुमला के बेल देवराम भगत ने की. बताया कि पड़हा आदिवासियों की प्राचीनतम रूढ़ीवादी परंपरा, धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक न्यायिक व्यवस्था है जिसके आधार पर उरांव बहुल क्षेत्रों में शासन का संचालन होता है. उसी व्यवस्था को सशक्त मजबूत करने के लिए कुइयो गांव में अतखा पड़हा का गठन किया गया. जिसमें कुइयो, कोचागानी और कुराग के आदिवासी शामिल हुए. तीनों गांव के ग्रामीणों ने जिला से उपस्थित हुए अतिथियों का गीत संगीत व नृत्य से स्वागत किया गया. इस अवसर पर जंगल पहाड़ के बीच पड़हा शासन व्यवस्था के सशक्तीकरण की बात की गई और तीनों मौजा के लिए संयुक्त रूप से बेल, देवान, कोटवार, कहतो, रकम उर्वस, करटाहा का चयन कर किया गया. उन्हें दायित्व बोध कराया गया और पद की शपथ दिलायी गई. कोटवार देवेन्द्र लाल उरांव ने कहा कि गांव और समाज की शासन व्यवस्था को सुचारु संचालन का एक सशक्त माध्यम है पड़हा व्यवस्था. सरकार और प्रशासन के भरोसे से गांव सुचारू रूप से नहीं चल सकता है. आदिवासी परंपरा कस्टम और सिस्टम से चलता है. कस्टम व सिस्टम से ही गांव व समाज मजबूत होगा. कार्यक्रम को पूर्व राजी कोटवार सुशील उरांव, मूली पड़हा के बेल देवराम भगत, रकम उर्वस गौरी किन्डो, शान्ति मिंज, फुलमनी उरांव आदि ने संबोधित किया और अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संविधान परक बातों की जानकारी दी. कहा कि देश में लोक सभा और राज्य में विधान सभा की तरह ही गांव में ग्राम सभा है. ग्राम सभा का पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए. उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में चर्चा करते हुए सामाजिक एकता को बनाए रखने की लोगों से अपील की. मौके पर सिनगी देई प्रदेश प्रदेश महिला अध्यक्ष माधुरी भगत परामर्शदात्री सदस्य शान्ति देवी पुष्पा उरांव सुशील उरांव, कैलास उरांव, बिहारी उरांव, इंद्रदेव उरांव आदि उपस्थित थे.

आरसीसी पथ के फ्लैंक से वाहन चालक परेशान

गुमला। पालकोट का गोबर सिल्ली चट्टान पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हो रहा है. जब यह स्थल उपेक्षित था तब भी लोग यहां मनोरंजन के लिए आते थे और अब यह स्थल पर्यटक स्थल के रूप में प्रचारित प्रसारित हो गया और विकास के काम भी होने लगे हैं तब से इस स्थल में प्रतिदिन लोगों की भीड़ पिकनिक मनाने, मनोरंजनार्थ भ्रमण के लिए आते हैं. लेकिन चट्टान के ऊपर बना आरसीसी रोड का किनारा चार पहिया वाहनों के लिए खतरनाक साबित हो रहा है. यह इसलिए कि आरसीसी पुलिया सिंगल रोड बना है और दोनों छोर में एक-एक फीट का गहरा है. फ्लैंक को रोड से नहीं मिला गया है जिस कारण चट्टान में स्थान रहने के बावजूद वाहनों को सड़क से नीचे नहीं उतारा जा सकता है और दोनों तरफ से वाहन के आने के बाद वाहन चालकों को समस्या हो जाती है. रविवार को पिकनिक मनाने गए गुमला के लोगों ने गोबर सिल्ली पर्यटक स्थल का आनंद तो लिया लेकिन फ्लैंक की समस्या के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ा.

शिक्षा जीवन को दिशा देने वाला अस्त्रः डॉ बीएन मिश्रा

गुमला। कार्तिक उरांव महाविद्यालय गुमला के बीएड संकाय में सोमवार को नए सत्र का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर नूतन प्रशिक्षणार्थियों का प्रभारी प्राचार्य डा. बद्री नाथ मिश्रा ने स्वागत करते हुए कहा कि शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक जीवन की दिशा निर्धारित करने वाला अस्त्र है. उन्होंने यह स्पष्ट किया कि एक प्रशिक्षित शिक्षक समाज में सकारात्मक परिवर्तन करने का क्षमता रखता है. नए सत्र का शुभारंभ कार्यक्रम निश्चित रूप से छात्रों और शिक्षकों में नया उत्साह और प्रेरणा भरने का काम करेगा. बीएड संकाय के प्रभारी डॉ. राकेश प्रसाद ने प्रशिक्षणार्थियों को बीएड संकाय से परिचय कराया और मेहनत व लगन से अपनी प्रतिभा को निखारने की बात कही. स्वागत कार्यक्रम में विभाग के अन्य शिक्षकों ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किए और प्रशिक्षणार्थियों को अनुशासन, समय-प्रबंधन और सामाजिक दायित्व का बोध कराया. कहा कि शिक्षण कार्य को केवल एक पेशे के रूप में नहीं, बल्कि एक सेवा के रूप में देखना चाहिए. यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास में सहायक होगा, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करेगा. कार्यक्रम का समापन एक सकारात्मक नोट पर हुआ, जिसमें विभागाध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया और नए सत्र के प्रति आशान्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया.

बड़का टंगरा में धान के गांज में लगी आग, नुकसान

घाघरा। थाना क्षेत्र के हापामुनी गांव स्थित बड़का टंगरा में धान के गांज में लगी आग से किसान को भरी नुकसान का सामना करना पड़ा. जानकारी के अनुसार हापामुनी निवासी जाकिन उरांव ने अपने खेत से कटे हुए धान को रविवार को देर शाम 7 बजे ट्रक से लाकर बड़का टंगरा में परिवार के साथ आया.वहां धान उतारने के बाद बाकी फसल लाने के लिए खेत चला गया. लेकिन रात साढ़े ग्यारह बजे जब वह पुनः धान लेकर लौटा, तो देखा कि टंगरा में रखे धान गांज में भीषण आग लगी हुई है. आग देखकर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और काफी मशक्कत के बाद भी आग पर काबू नहीं पाया जा सका. देखते ही देखते पूरा धान गांज जलकर राख में बदल गया.वही सुबह तक आग जलता रहा. पीड़ित किसान ने बताया कि इस घटना में उसकी सालभर की मेहनत और पूरी फसल बर्बाद हो गई, जिससे परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया है. पीड़ित ने कहा कि आग अज्ञात लोगों द्वारा लगाई गई ही. वहीं पीड़ित जाकिन उरांव ने अंचल प्रशासन से उचित मुआवजे की मांग की है.

मुर्गा बाजार से लौट रहे मजदूर की गला रेत कर हत्या

गुमला। ग्रामीणों की सूचना पर गुमला थाना की पुलिस ने स्थानीय लोगों के सहयोग से झारखंड डीपा लोसई नदी के समीप से डानटोली निवासी 55 वर्षीय मजदूर पप्पू साहु का शव बरामद किया है. शव का गला रेता हुआ है और सिर को पत्थर से कूच दिया है. सूत्रों के अनुसार पप्पू साहु रविवार को अंबेराडीह मुर्गा बाजार गया था और घर नहीं लौटा. परिजन रात से ही पप्पू साहु का खोज बीन कर रहे थे. सोमवार को दोपहर राहगीरों की नजर पड़ी और ग्रामीणों को सूचना दी. ग्रामीणों ने शव की पहचान पप्पू साहु के रूप में की और घटना की जानकारी पंचायत के मुखिया एवं गुमला थाना को दी. गुमला थाना की पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गुमला सदर अस्पताल भेज दिया है. परिजनों ने जमीन विवाद में हत्या की आशंका जाहिर कर रहे हैं.

पांचों पांडव मेले में आदिवासी संस्कृति और परंपरा का अनोखा संगम

खोड़हा नृत्य दल ने लोक संस्कृति की झलक पेश की

शुभम संदेश। गुमला

घाघरा प्रखंड के नौनी गांव में पांचों पांडव मेला समिति द्वारा पारंपरिक उत्साह और उल्लास के साथ मेला का आयोजन किया गया. इस सांस्कृतिक आयोजन का शुभारंभ घाघरा थाना के सब-इंस्पेक्टर मनीष कुमार, राहुल कुमार और पंचायत समिति सदस्य रामरीत उरांव ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर और फीता काटकर किया. इसके साथ ही मेले में उपस्थित लोगों ने आदिवासी परंपरा और सांस्कृतिक उत्सव का आनंद लिया.

मेला परिसर में ग्रामीण क्षेत्र से आए खोड़हा नृत्य दल ने पारंपरिक वेशभूषा में आकर्षक नृत्य और गीत प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया. उनके नृत्य ने पूरे मेले में लोक संस्कृति की जीवंत झलक पेश की. बच्चों और युवाओं के लिए मेले में मिक्की माउस, जंपिंग जोन, बच्चों के खिलौने और मिठाई की दुकानें लगाई गईं, जिसने छोटे-बड़े सभी को आकर्षित किया और उत्सव को और भी मनोरंजक बना दिया. इस अवसर पर सब-इंस्पेक्टर मनीष कुमार ने लोगों से शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील की. उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन समाज को एकजुट करने का कार्य करते हैं. युवा पीढ़ी को अपनी परंपराओं से जुड़कर समाज के विकास में योगदान देना चाहिए.

वहीं, चिंतामणि उरांव ने कहा कि आदिवासी समाज प्रकृति का पूजक है और अपनी संस्कृति, परंपरा और सभ्यता को संजोकर रखना हमारा दायित्व है. उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जो सांस्कृतिक धरोहर हमें दी है, उसे आगे बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है. मौके पर सीआरपीएफ डीआईजी रविंद्र भगत द्वारा उपलब्ध कराए गए पुरस्कार स्वरूप दो-दो ड्राम खोड़हा नृत्य दल को अतिथियों द्वारा वितरित किए गए. मेले में रवि पहान, देव उरांव, कमल कुजूर, संजय उरांव, हरिहर मुंडा, सतन उरांव, देव चंद्र भगत, संतराम उरांव, संजीत उरांव, सुनील उरांव, प्रकाश उरांव, राजेंद्र राम, गीता कुमारी और गुड़िया कुमारी सहित कई महिला, पुरुष और बच्चे उपस्थित रहे. इस मेला ने न केवल ग्रामीण समाज में परंपराओं और लोक संस्कृति को जीवंत रखा, बल्कि बच्चों और युवाओं में सांस्कृतिक उत्साह और आनंद का माहौल भी पैदा किया. आयोजकों का उद्देश्य था कि इस तरह के कार्यक्रम समाज में सौहार्द, भाईचारा और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाएं. पांचों पांडव मेला हर साल की तरह इस वर्ष भी आदिवासी समाज और स्थानीय लोगों के लिए एक उत्सव और समरसता का प्रतीक बनकर सामने आया.

कोलोमडेगा में धूमधाम के साथ मनाया गया ईंद पर्व

सिमडेगा। प्रखंड के कोलोमडेगा पाहनटोली में ईंद पर्व धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी थे, जिन्होंने पारंपरिक रीति से उद्घाटन किया. उन्होंने अपने भाषण में बताया कि लगभग छह सौ साल पहले मुण्डा समुदाय ने घने जंगल, पहाड़ियों और जंगली जानवरों के बीच अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए यहां आकर बसना शुरू किया. उन्होंने कहा कि रीसा मुण्डा की अगुवाई में मुण्डा समुदाय ने अपने अधिकारों और पहचान की रक्षा की. रीसा मुण्डा के पुत्र मदरा मुण्डा ने अपने दत्तक पुत्र फनिमुकट को उत्तराधिकारी बनाया, जिसे समुदाय ने विरोध किया. इसके बाद मनिमुकुट ने मुण्डा समुदाय के साथ मिलकर लकड़ी का खुंटा गाड़कर सिंहासन स्थापित किया और स्वयं को राजा घोषित किया. इसी परंपरा को याद करते हुए आज भी ईंद पर्व के अवसर पर ईंद छतर को पारंपरिक तरीके से गाड़ा जाता है. पर्व के दूसरे दिन ग्रामीण ढोल और मांदर की थाप पर नृत्य-गान किए.

कानून की पढ़ाई कर समाज में प्रताड़ित व कमजोर लोगों की मदद की जा सकती हैः प्रधानाचार्य

शुभम संदेश। लोहरदगा

कुड़ू प्रखंड क्षेत्र के पीएमश्री रा. उ. उच्च विद्यालय जिंगी में चैरिटेबल ट्रस्ट आइडिया के सदस्यों द्वारा 'लॉ चुनो' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं को कानून के क्षेत्र में कैरियर के अवसरों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई. इस मौके पर टीम के सदस्य प्रियांशी गुप्ता, उत्कर्ष जायसवाल, ऐश्वर्या सिंह, सना ठाकुर और अनिशा साहू ने कक्षा नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों को कानून की पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया. आईडिया टीम का विद्यालय पहुंचने पर मुख्य द्वार पर लोटा-पानी और चंदन टीका लगाकर स्वागत किया गया. कार्यक्रम का संचालन सादाब अंसारी ने किया, जबकि धन्यवाद प्रेषण संजय उरांव ने किया. स्वागत भाषण में सहायक शिक्षक आदित्य कुमार वैद्य ने कहा कि क्षेत्र में कानून को कैरियर के रूप में चुनने में पहले रुचि कम थी, लेकिन इस तरह के कार्यक्रमों से बदलाव आएगा. कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को कानून के क्षेत्र में अवसरों से अवगत कराना और 'क्लैट' जैसी प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करना है. विद्यालय के प्रधानाचार्य अलीरजा अंसारी ने कहा कि कानून की पढ़ाई कर समाज में प्रताड़ित और कमजोर लोगों की मदद की जा सकती है. उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग के सहयोग से आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को निःशुल्क शिक्षा के अवसर मिलने से उनके भविष्य के सपनों में नई चमक दिखाई दे रही है. कार्यक्रम में शिक्षक प्रमेश कुमार सिंह, विद्यालय प्र. समिति अध्यक्ष कंचन राम, बीआरपी सुदामा साहू, सीआरपी संजीव कुमार और शिक्षिकाएं खुशमारेन मर्शिला तिर्की, सरिता टोप्पो, समीना खातून, फूलमनी उरांव, चांदो तिर्की, सेतु गाइड हासिम मौजूद थे.

एक नजर

भाजपा जिला कार्यालय में एसटी मोर्चा की बैठक

लोहरदगा। भाजपा जिला कार्यालय में एसटी मोर्चा की बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता जिलाध्यक्ष राकेश रविकांत प्रधान ने की. बैठक में वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर राष्ट्रीय एवं जिला स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा पर चर्चा हुई. उन्होंने बताया कि जिले के सभी मंडलों में भी इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे. पूर्व मंत्री विमला प्रधान ने कहा कि वंदे मातरम गीत का स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा. यह गीत देश की जनता को प्रेरित कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने का उत्साह देता था. उन्होंने बताया कि यह गीत 1875 में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित किया गया था और इसका प्रसिद्ध वाचन 1896 में रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा कोलकाता में किया गया. उन्होंने यह भी बताया कि देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1950 में इसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया. विभाजन और ब्रिटिश शासन के दौरान यह गीत राष्ट्रवाद, एकता और प्रतिरोध का प्रतीक बन गया. ब्रिटिश सरकार ने इसे पूरे देश में प्रतिबंधित कर दिया था. इसके अलावा, यह स्वदेशी आंदोलन का प्रमुख नारा भी रहा. बैठक में निर्णय लिया गया कि वंदे मातरम गीत को गांव-गांव तक पहुंचाया जाएगा. भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मण बड़ाईक ने कहा कि 1 अक्टूबर को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा इस अवसर को देशभर में उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है. मंच संचालन मुनेश्वर तिर्की ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन गजानंद बेसरा ने प्रस्तुत किया. इस अवसर पर युगपुरुष लालकृष्ण आडवाणी का जन्मदिन केक काटकर एवं मिठाई बांटकर मनाया गया. महामंत्री दीपक पूरी, मुकेश श्रीवास्तव, श्रद्धानंद बेसरा, दुर्गविजय सिंहदेव, रामविलास बड़ाईक, प्रणव कुमार, संजय ठाकुर सहित कई पदाधिकारी उपस्थित थे.

एसएसवीएम में हिन्दी आचार्य प्रशिक्षण शुरू

सिमडेगा। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (एसएसवीएम), सलडेगा में रविवार को हिन्दी आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का भव्य शुभारंभ किया गया. उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीहरि वनवासी विकास समिति झारखण्ड के प्रांतीय सहसचिव राजेश अग्रवाल उपस्थित थे. कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती माता, भारत माता और ओउम की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन से की गई. इस प्रशिक्षण वर्ग का उद्देश्य झारखण्ड प्रांत के विभिन्न जिलों में संचालित सरस्वती शिशु विद्या मंदिरों के हिन्दी विषय के आचार्यों एवं आचार्याओं के भाषा आधारित सर्वांगीण विकास और शिक्षण कौशल को बढ़ाना है. कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सत्रों में आचार्यों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम और भाषा शिक्षक के गुणों के विषय में विस्तृत जानकारी दी जाएगी. मुख्य अतिथि राजेश अग्रवाल ने मातृभाषा हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अन्य भाषाओं का सम्मान करते हुए भी हमें हिन्दी सीखने और बोलने का प्रयास अवश्य करना चाहिए. राकेश गुंजन ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व को स्पष्ट करते हुए उपस्थित आचार्यों को शिक्षण में दक्षता बढ़ाने के मार्गदर्शन दिए. विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष हनुमान बोंदिया ने कहा कि हिन्दी भाषा को हमेशा शुद्ध और सही रूप में बोलने का प्रयास होना चाहिए. कार्यक्रम का संचालन जिला निरीक्षक हीरालाल महतो ने किया. इस अवसर पर विद्यालय की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर माहौल को और भी उल्लासपूर्ण बनाया. कार्यक्रम में प्रांत शिक्षा प्रमुख सुभाष चंद्र दुबे, राकेश गुंजन, राजेंद्र बड़ाईक, खेदु नायक, संतोष दास, हीरालाल महतो, हनुमान बोंदिया, विद्या बड़ाईक, हरिश्चंद्र भगत, रामकृष्ण महतो, मुरारी प्रसाद सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे.

कोलेबिरा में अखिल भारतीय रौतिया समाज की बैठक

कोलेबिरा। प्रखंड के लचरागढ़ सामुदायिक भवन में अखिल भारतीय रौतिया समाज विकास परिषद की बैठक प्रखंड अध्यक्ष चैतन्य सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई. बैठक में मुख्य रूप से समाज के प्रदेश अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह और सचिव शालिग्राम सिंह उपस्थित थे. बैठक में समाज के विकास और समाज के लोगों को संगठित करने पर व्यापक चर्चा की गई. बैठक के दौरान समाज के स्वर्ण जयंती स्थापना समारोह को फ़रवरी माह में आयोजित करने का निर्णय लिया गया. इसके तहत समाज के विभिन्न कार्यक्रम और सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित करने की योजना पर भी विचार किया गया. इसके अलावा लचरागढ़ स्थित शहीद बख्तर साय मुंडल सिंह स्मृति भवन के जीर्णोद्धार कार्य को प्रारंभ करने के लिए सभी गांवों और अन्य प्रखंडों से सहयोग लेने की रणनीति बनाई गई. प्रदेश अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह ने उपस्थित सदस्यों से समाज के कार्यों में सक्रिय भागीदारी करने और समाज को एकजुट रखने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि समाज के विकास और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी लोगों का सहयोग आवश्यक है. बैठक में तनु रामधारी सिंह, पुरुषोत्तम सिंह, भुवन सिंह, कलिंदर सिंह, मनबोध सिंह, लालू सिंह, जयप्रकाश सिंह, सुदामा सिंह, लिलंबर सिंह, धर्मवीर सिंह, बालमुकुंद सिंह, लालमोहन सिंह, रोहित कुमार सिंह, दिनेश्वर सिंह, आनंद सिंह सहित कई अन्य सदस्य उपस्थित थे. बैठक में लिए गए निर्णय समाज के संगठित विकास और सांस्कृतिक समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माने जा रहे हैं. समाज के विभिन्न कार्यक्रमों और जीर्णोद्धार कार्य के माध्यम से रौतिया समाज के लोगों को एकजुट करने पर विशेष जोर दिया गया.

राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस पर जागरूकता शिविर

सिमडेगा। राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस के अवसर पर जिला स्तर पर लीगल लिटरेसी क्लबों में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए गए. कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और आमजन को उनके कानूनी अधिकारों तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी देना था, ताकि समाज में विधिक चेतना और न्याय के प्रति विश्वास बढ़ सके. कस्तूरबा स्कूल, सलडेगा में आयोजित शिविर में पीएलएस दीपक कुमार, अजीत केरकेट्टा, रोशन कुल्लू, सुरजीत प्रसाद, पुरुषोत्तम दास, गोवर्धन ठाकुर, रेशमा कुमारी, शीला केरकेट्टा और सोनिया टोप्पो ने छात्राओं को नालसा द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी. शिविर में मुफ्त कानूनी सहायता योजना, महिला एवं बाल सुरक्षा योजना, पीड़ित मुआवजा योजना सहित अन्य सरकारी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई.

मिशन पर्व हॉकी टूर्नामेंट का रोमांचक फाइनल

सिमडेगा। सिमडेगा के बिरनीबेड़ा गांव में मिशन पर्व के अवसर पर आयोजित हॉकी टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला खेला गया. प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक एवं कांग्रेस जिलाध्यक्ष भूषण बाड़ा और विशिष्ट अतिथि के रूप में जिप सदस्य एवं महिला जिलाध्यक्ष जोसीमा खाखा, बांसजोर जिप सदस्य एवं कांग्रेस सेवादल जिलाध्यक्ष समरोम पौल तोपनो तथा मुखिया निराली बरवा उपस्थित थे. प्रतियोगिता का उद्घाटन विधायक भूषण बाड़ा ने अन्य अतिथियों के साथ खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर कर किया.

शिक्षा गुमला जिले में दसवीं और बारहवीं बोर्ड परीक्षा के मॉक टेस्ट का आयोजन

अधिकारियों ने परीक्षा की व्यवस्था का लिया जायजा

शुभम संदेश। गुमला

वर्ष 2026 में होने वाली दसवीं और बारहवीं बोर्ड परीक्षा में बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के उद्देश्य से गुमला जिले के सभी उच्च एवं प्लस-टू विद्यालयों में सोमवार से मॉक टेस्ट का आयोजन किया गया. उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित के निर्देशन में आयोजित इस पूर्वाभ्यास में विद्यार्थियों की तैयारी और परीक्षा प्रक्रिया की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जा रहा है. उप विकास आयुक्त दिलेश्वर महत्तो, अपर समाहर्ता शशिंद्र कुमार बड़ाइक, एलआरडीसी राजीव कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी गुमला राजीव नीरज, चैनपुर पूर्णिमा कुमारी, बसिया जयवंती देवगम, जिला शिक्षा पदाधिकारी कविता खालको, जिला शिक्षा अधीक्षक नूर आलम खां, जिला परिवहन पदाधिकारी ज्ञान शंकर जायसवाल, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी आरती कुमारी तथा जिला कल्याण पदाधिकारी आलोक कुमार ने विभिन्न विद्यालयों का निरीक्षण किया.

निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने परीक्षा की व्यवस्था, विद्यार्थियों की उपस्थिति, प्रश्नपत्र वितरण, अनुशासन और परीक्षा संचालन की पारदर्शिता का जायजा लिया. जिला शिक्षा पदाधिकारी कविता खालको ने बताया कि 10 से 12 नवंबर तक हाई स्कूल और प्लस-टू के सभी विद्यालयों में मॉक टेस्ट आयोजित किए जाएंगे. उनका कहना था कि इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा के पैटर्न से परिचित कराना और उनकी तैयारी का वास्तविक मूल्यांकन करना है. मॉक टेस्ट के परिणामों का विश्लेषण कर विद्यालयों में टास्क फोर्स समिति और अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित की जाएगी. इसके तहत कमजोर विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण सत्र भी आयोजित किए जाएंगे ताकि उनकी पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके. उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित के मार्गदर्शन में जिले में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार, विद्यार्थियों की उपस्थिति वृद्धि और बोर्ड परीक्षा में बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए सभी स्तर पर समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं.

अफीम की अवैध खेती करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें: एसडीएम

शुभम संदेश। राहे

अफीम की अवैध खेती पर नियंत्रण और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से बुंडू एसडीएम किस्टो कुमार बेसरा ने सोमवार को राहे प्रखंड सभागार में ग्राम प्रधान, मुखिया और वार्ड सदस्यों के साथ संयुक्त बैठक की. बैठक में सीओ क्रिस्टीना रिचा इंदवार, बीडीओ अशोक कुमार, उपप्रमुख उमेश महतो, थाना प्रभारी अनगड़ा गौतम रजवार और राहे एसआई जे टुडू भी उपस्थित थे. बैठक में एसडीएम ने अफीम की अवैध खेती करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए. उन्होंने बताया कि इसके लिए गांव-गांव जागरूकता अभियान चलाया जाएगा और लोगों को अफीम की खेती छोड़कर वैकल्पिक कृषि अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा. इसके साथ ही रोजगार के साधन उपलब्ध कराए जाने की भी योजना बनाई जाएगी. एसडीएम ने जनप्रतिनिधियों से अपील की कि वे अपने क्षेत्र में अफीम की अवैध खेती को रोकने में सक्रिय भूमिका निभाएं. उन्होंने बाल विवाह और डायन प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ भी जनजागरण करने की बात कही. बैठक में हर पंचायत के जनप्रतिनिधियों से अवैध अफीम खेती की रोकथाम के लिए सुझाव भी लिए गए. इस पहल का उद्देश्य स्थानीय किसानों को सही दिशा में मार्गदर्शन देना और कानून का पालन सुनिश्चित करना बताया गया. बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने कहा कि गांव-गांव जाकर लोगों को अफीम की हानिकारक प्रभावों और वैकल्पिक कृषि के लाभों के बारे में जानकारी दी जाएगी.

मंथन

घाटशिला उपचुनाव :आज मतदाताओं की बारी है

घाटशिला विधानसभा क्षेत्र में आज उपचुनाव के रूप में लोकतंत्र का पर्व मनाया जा रहा है. मतदाताओं के पास अब अपने क्षेत्र के भविष्य का निर्णय करने का अवसर है. प्रशासन की ओर से मतदान प्रक्रिया को शांतिपूर्ण और निष्पक्ष बनाने के लिए पुख्ता इंतज़ाम किए गए हैं. सुरक्षाबलों की तैनाती, संवेदनशील बूथों पर अतिरिक्त निगरानी और मतदाताओं को सुविधाएं प्रदान करने के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं.घाटशिला क्षेत्र झारखंड की राजनीति में हमेशा से अहम भूमिका निभाता रहा है. यहां के मतदाता सामाजिक मुद्दों, विकास कार्यों और स्थानीय जनसमस्याओं को ध्यान में रखकर मतदान करते हैं. इस बार का उपचुनाव भी विकास बनाम जनभावनाओं की परीक्षा माना जा रहा है. प्रमुख दलों के प्रत्याशी अपने-अपने वादों और योजनाओं के साथ मतदाताओं से समर्थन की अपील कर चुके हैं. अब गेंद पूरी तरह मतदाताओं के पाले में है.राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह उपचुनाव न केवल घाटशिला बल्कि पूरे राज्य की राजनीतिक दिशा तय कर सकता है. मतदाताओं की भागीदारी जितनी अधिक होगी, लोकतंत्र उतना ही मजबूत होगा. ग्रामीण इलाकों से लेकर कस्बों तक मतदान को लेकर उत्साह देखा जा रहा है. युवा, महिलाएं और वरिष्ठ नागरिक सभी मतदान केंद्रों पर पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं.आज का दिन घाटशिला के लिए ऐतिहासिक साबित हो सकता है. जनता के एक-एक वोट में विकास, स्थिरता और बेहतर भविष्य की उम्मीद छिपी है. लोकतंत्र का यही सौंदर्य है कि अंतिम निर्णय जनता के हाथों में होता है. अब देखना यह होगा कि घाटशिला किस दिशा में कदम बढ़ाता है- परिवर्तन की ओर या निरंतरता की उसी पुरानी राह पर.

नजरिया

मौलाना अबुल कलाम आजाद की शिक्षाविद् विरासत को नमन

हर साल 11 नवंबर को देशभर में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया जाता है, वह दिन जो स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती को समर्पित है. आजाद ने स्वतंत्रता के बाद भारत की शिक्षा व्यवस्था की बुनियाद रखने का जो कार्य किया, उसने देश के भविष्य को नई दिशा दी. मौलाना आजाद दूरदर्शी नेता और विद्वान थे. उनका विश्वास था कि शिक्षा हर व्यक्ति का अधिकार है और यही समाज में समानता व प्रगति का आधार बन सकती है. उनके नेतृत्व में ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे संस्थान स्थापित हुए, जिन्होंने भारत को ज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विश्व पटल पर पहचान दिलाई. आज भी उनकी यह सोच उतनी ही प्रासंगिक है जितनी स्वतंत्रता के बाद थी. मौलाना आजाद कहा करते थे — "शिक्षा ही वह साधन है जो समाज में समानता और प्रगति ला सकता है." राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर देशभर के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सेमिनार, निबंध, वाद-विवाद और प्रदर्शनियों के माध्यम से उनके योगदान को याद किया जाता है, ताकि नई पीढ़ी शिक्षा के महत्व को समझे और उनके आदर्शों से प्रेरणा ले सके.

वंदेमातरम् पर कायराना सियासत

अरविंद जयतिलक

चटर्जी द्वारा रचित इस गीत की पंक्तियों में भारतीयता का राष्ट्रप्रेम के प्रति अटूट जज्बा है.

भारतवर्ष वंदेमातरम् के 150 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है. चारों ओर वंदेमातरम् की गूंज से भारतीयता का सनातन भाव गुंजायमान है. लेकिन विडंबना है कि राष्ट्र गीत वंदेमातरम् का उच्चतर भाव कुछ लोगों को रास नहीं आ रहा है. वे कुतर्कों का सहारा लेकर किस्म-किस्म की प्रवंचना से विरोध का प्रस्तावना खींच रहे हैं. यह ठीक नहीं है. उन्हें समझना होगा कि वंदेमातरम् किसी धर्म या मजहब का समर्थन या विरोध का भाव नहीं है. यह मातृभूमि के प्रति समर्पण, त्याग और बलिदान का वह निश्छल भाव है, जिसे विचारों का हथियार बनाकर आजादी के दीवानों ने मातृभूमि को आजाद कराया. राष्ट्रगीत वंदेमातरम केवल शब्द भर नहीं हैं, बल्कि इसमें राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास, कला, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान का वह भाव समाहित है, जो भारत राष्ट्र की निरंतरता और चेतना को उद्घाटित करता है. इसके प्रकटीकरण से राष्ट्र की गरिमा और गौरव में वृद्धि होती है. बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित वंदेमातरम गीत की पंक्तियों में भारतीयता का ओज और राष्ट्रप्रेम के प्रति अटूट जज्बा है. यह गीत अपने आगोश में संपूर्ण भारत की विविधता और विशेषता को समेटे हुए है. इसमें मातृभूमि के प्रति अनुरक्ति, समर्पण और उदात्त भावनाएं निहित हैं. शास्त्रों में माता और मातृभमि को सर्वोपरि माना गया है. कहा गया है कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' यानी माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है. वंदेमातरम में यही भाव निहित है. वंदेमातरम गीत के इतिहास में जाएं तो 7 नवंबर 1876 को बंगाल के कांतल पाड़ा गांव में बंकिम चंद्र चटर्जी ने इस वंदेमातरम गीत की रचना की. 1882 में उनके उपन्यास आनंदमठ में सम्मिलित किया गया. 1896 में रविद्रनाथ टैगोर ने पहली बार वंदेमातरम को बंगाली शैली में लय और संगीत के साथ कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में गाया. मूल रुप से वंदेमातरम के प्रारंभिक दो पद संस्कृत में थे और शेष गीत बांगला में. वंदेमातरम का अंग्रेजी अनुवाद सबसे पहले अरविंद घोष ने किया. दिसंबर 1905 में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में गीत को राष्ट्रगीत का दर्जा प्रदान किया गया और बंगाल विभाजन के समय यह गीत राष्ट्रीय नारा बन गया. 1906 में वंदेमातरम देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया. कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में रविंद्र नाथ टैगोर ने इसका संशोधित रुप प्रस्तुत किया. 1923 में कांग्रेस अधिवेशन में मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा इस्लाम की भावना के विरुद्ध बताकर वंदेमातरम गीत का विरोध किया गया. लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचंद्र बोस, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और आचार्य नरेंद्र देव की समिति ने 28 अक्टुबर 1937 को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पेश अपनी रिपोर्ट में इस राष्ट्रगीत के दो पहले पैराग्राफ को राष्ट्रगीत के रुप में स्वीकृति दे दी. 14 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि में संविधान सभा की पहली बैठक का प्रारंभ वंदेमातरम गीत के साथ और समापन राष्ट्रगान 'जनगणमन' के साथ हुआ. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 1905 में वंदेमातरम गीत के संबंध में लिखा है कि- 'आज लाखों लोग एक बात के लिए एकत्र होकर वंदेमातरम गाते हैं, मेरे विचार से इसने हमारे राष्ट्रीय गीत का दर्जा हासिल कर लिया है. मुझे यह पवित्र, भक्तिपरक और भावनात्मक गीत लगता है. कई अन्य राष्ट्रगीतों के विपरित यह किसी अन्य राष्ट्र-राज्य की नकारात्मकताओं के बारे में शोर-शराबा नहीं करता है.' 1936 में भी गांधी जी ने वंदेमातरम गीत के बारे में कहा कि-'कवि ने हमारी मातृभूमि के लिए जो अनेक सार्थक विशेषण प्रयुक्त किए हैं, वे एकदम अनुकूल हैं, इनका कोई सानी नहीं है. अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम इन विशेषणों को यथार्थ में बदलें. मुझे कभी ख्याल नहीं आया कि यह गीत सिर्फ हिंदुओं के लिए रचा गया है.' ध्यान रखना होगा कि आजादी के दौरान के अलावा 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में जब अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस का अधिवेशन शुरु हुआ तो इस अधिवेशन में श्यामजी वर्मा, मैडम कामा, विनायक सावरकर जैसे क्रांतिकारियों ने भारत की स्वतंत्रता पर संकल्प पारित करने के लिए भाषण से पहले आधुनिक भारत के पहले राष्ट्रीय झंडे को फहराया और इस झंडे के मध्य में देवनागरी लिपि में वंदेमातरम लिखा. यहां ध्यान देना होगा कि 1906 से 1911 तक यह गीत पूरा गाया जाता था. इस गीत में वह ताकत थी कि ब्रिटिश हुकूमत को बंगाल का विभाजन का फरमान वापस लेना पड़ा. क्रांतिकारियों ने इस वंदेमातरम आदर्श नारे को अपने संस्कार में ढ़ाला और गीत के जरिए आजादी की जंग को गति देकर भारतीय जनमानस में जागृति पैदा की. लोगों को लामबंद किया और ब्रिटिश राजसत्ता को उखाड़ फेंका. भगत सिंह, मदनलाल ढींगरा, राजगुरु और बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों ने वंदेमातरम की आवाज लगाकर फांसी के फंदे को चूम लिए. गौर करें तो भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के हर देश में राष्ट्रगीत का गायन होता है. इस्लामी देशों में भी राष्ट्रगीत को समादर प्राप्त है और वह मातृभूमि को समर्पित है. अरबी में मातृभूमि को मादर-ए-वतन कहा जाता है, जिसका मतलब मां से है. फारसी में मातृभूमि की उपमा मां से की गयी है. यमन के राष्ट्रगीत में झरनों की तुलना मां के दूध से गयी है. मिश्र के राष्ट्रगीत में मातृभूमि की तुलना मां से की गयी है. इसी तरह मलेशिया, सूडान, अरब, जार्डन सभी देशों में राष्ट्रगीत की परंपरा है और उसे किसी न किसी रुप में मातृभूमि और मां से जोड़ा गया है. तो क्या फिर यह समझा जाए कि ये मुस्लिम देश इस्लाम की भावना का अनादर कर रहे हैं? बिल्कुल ही नहीं. फिर आज वंदेमातरम के 150 वर्ष के जश्न पर ऐतराज और काली सियासत क्यों? क्यों न माना जाए कि कुछ मुट्ठी भर लोग वंदेमातरम गीत पर सवाल खड़ा करके क्रांतिकारियों का अपमान कर रहे हैं? उन्हें समझना होगा कि वंदेमातरम गीत राष्ट्रीयता का स्वर है. साथ ही क्रांतिकारियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी. इसका विरोध आजादी के दिवानों का विरोध है. साथ ही राष्ट्रीयता की भावना पर कुठाराघात भी. यह ठीक नहीं है कि कुछ सियासी दल और तथाकथित संगठन अपने राजनीतिक फायदे के लिए वंदेमातरम गीत को राजनीतिक संकीर्णता के दायरे में रखकर इस्लाम की मान्यताओं के खिलाफ प्रचारित कर रहे हैं. भला इस गीत से किसी मजहब और संप्रदाय को किस तरह चोट पहुंच सकता है? उचित होगा कि वे संकीर्णताओं के केंचूल से बाहर निकलकर राष्ट्रगीत वंदेमातरम पर काली सियासत न करें. इससे राष्ट्र का नुकसान होता है. सामाजिक वातावरण विषाक्त बनता है.

आज का इतिहास

1781 : अंग्रेजों ने नागापट्टनम पर क़ब्ज़ा किया.
1847: ब्रिटेन के चिकित्सक सर जेम्स यंग सिंप्सन ने बेहोशी की दवा के रूप में पहली बार क्लोरोफार्म का प्रयोग किया.
1918: ऑस्ट्रिया एक गणतंत्र बना.
1925 : अमेरिका और इटली ने शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये.
1930 : लंदन में पहली बार गोलमेज सम्मेलन की शुरुआत इसमें 56 भारतीय और 23 ब्रिटिश प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया लेकिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कोई सदस्य शामिल नहीं हुआ.
1936 : केरल के मंदिर सभी हिंदुओं के लिए खुले.
1953 : इजराइल के प्रधानमंत्री डेविड बेन गुरियन ने अपने पद से इस्तीफा दिया.
1956 : मोरक्को, सूडान और ट्यूनिशिया संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुए.
1963 : जापान में ट्रेन दुर्घटना में 164 लोग मारे गये.

इंतज़ार था जिन ख़ुशियों का, वो खुशी क्या है

चिंतन

डिंग रुइलिन और उसका पति एक कारोबार शुरू करने और उसे चलाने के लिये दिन-रात मेहनत करते हैं ताकि पैसा कमाकर, एक अच्छी ज़िंदगी जी सकें. लेकिन सीसीपी सरकार के शोषण और बुरे बर्ताव के चलते, वे कर्ज़ में बुरी तरह डूब जाते हैं. विदेश जाकर काम करने के अलावा, उनके पास और कोई विकल्प नहीं बचता. अधिक पैसा कमाने की गरज़ से, डिंग रुइलिन दो-दो काम पकड़ लेती है. काम के भारी बोझ और आस-पास के लोगों की बेरुख़ी से, उसे पीड़ा और पैसा कमाने की बेबसी का एहसास होता है. अपनी पीड़ा और उलझन के मध्य, डिंग रुइलिन की मुलाकात अपनी हाई स्कूल की एक सहपाठी लिन झिशिन से हो जाती है. बातचीत के दौरान डिंग रुइलिन को पता चलता है कि परमेश्वर में आस्था रखने की वजह से लिन झिशिन में बहुत-सी बातों की समझ आ गई है. परमेश्वर की उपस्थिति में, उसे आध्यात्मिक शांति और आनंद प्राप्त हो रहा है. वह सुकून और सहजता का जीवन जी रही है. इससे डिंग रुइलिन के मन में भी परमेश्वर में विश्वास रखने की भावना प्रबल होती है. जल्दी-जल्दी और अधिक पैसा कमाने के विचार से, डिंग रुइलिन और उसका पति एक रेस्टॉरेंट का अधिग्रहण कर लेते हैं. लेकिन लगातार काम और थकान की वजह से, डिंग रुइलिन एक गंभीर बीमारी का शिकार हो जाती है. उसे लकवा होने का ख़तरा बढ़ जाता है. बीमारी की यंत्रणा के दौरान डिंग रुइलिन को आत्म-चिंतन का अवसर मिलता है. लोग किसलिये जीते हैं? क्या महज़ धन-दौलत और शोहरत के लिये जीवन गँवा देना सही है? क्या धन से इंसान अपने ख़ालीपन और दुखों से छुटकारा पा सकता है? क्या धन इंसान को मौत के मुँह में जाने से बचा सकता है? परमेश्वर के वचनों पर बहन लिन झिशिन की सहभागिता से, डिंग रुइलिन को जीवन के बारे में इन प्रश्नों के उत्तर साफ़ तौर पर मिलने लगते हैं. उसमें यह भी समझ आती है कि वह कौन-सी सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है जिसका इंसान को अनुसरण करना चाहिये. अंततः, उसे आध्यात्मिक मुक्ति मिल जाती है. परमेश्वर के वचनों के मार्गदर्शन से, आख़िरकार डिंग रुइलिन जीवन में आनंद की खोज कर लेती है...

इंडिया पर ट्रेंडिंग

#ArrestAmitBaghel
#WorldScienceDay
#Faridabad
AK-47 18K
#SIGMA
#AndeSri
कश्मीर पुलिस
J&K Police
Punjab 33K
भारतीय मजदूर संघ

बहुरंग

बॉक्स ऑफिस पर इमरान हाशमी की 'हक' का जलवा, 'जटाधरा' रही फीकी

अभिनेता इमरान हाशमी और यामी गौतम की फिल्म 'हक' इस साल 2025 की सबसे चर्चित फिल्मों में से एक बन चुकी है. फिल्म की कहानी और सामाजिक संदेश ने दर्शकों का दिल जीता है, वहीं इमरान और यामी की ऑन-स्क्रीन जोड़ी को खूब सराहा जा रहा है. 7 नवंबर को रिलीज हुई इस फिल्म ने पहले दिन मामूली ओपनिंग के बाद वीकेंड पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली है. इसके विपरीत, सोनाक्षी सिन्हा अभिनीत 'जटाधरा' को दर्शकों का प्यार नहीं मिल पा रहा है. इंदौर के चर्चित शाह बानो केस से प्रेरित फिल्म 'हक' ने धीरे-धीरे अपनी पकड़ बनानी शुरू कर दी है. सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म ने रविवार (तीसरे दिन) को 3.75 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया. पहले दिन 1.75 करोड़ रुपये की ओपनिंग लेने के बाद, फिल्म ने तीन दिनों में कुल 8.85 करोड़ की कमाई कर ली है. समीक्षकों की मानें तो फिल्म के दमदार विषय और कलाकारों के प्रदर्शन ने वीकेंड पर दर्शकों को सिनेमाघरों की ओर खींचा है. वहीं, सोनाक्षी सिन्हा, सुधीर बाबू और शिल्पा शिरोडकर अभिनीत फिल्म 'जटाधरा' को बॉक्स ऑफिस पर भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है. 7 नवंबर को रिलीज हुई इस फिल्म ने पहले और दूसरे दिन केवल 1.07 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था. तीसरे दिन इसकी कमाई घटकर मात्र 99 लाख रुपये रह गई. तीन दिनों में फिल्म का कुल कलेक्शन सिर्फ 3.13 करोड़ रुपये हुआ है, जो इसे साल की फ्लॉप फिल्मों की सूची में डाल सकता है. सुपर्ण वर्मा के निर्देशन में बनी 'हक' शाह बानो केस से प्रेरित एक संवेदनशील फिल्म है, जो महिलाओं के अधिकार और न्याय की लड़ाई को आधुनिक संदर्भ में दर्शाती है. फिल्म के दमदार संवाद, यामी गौतम का सशक्त अभिनय और इमरान हाशमी का संतुलित प्रदर्शन दर्शकों को बांधे रखते हैं. ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि यदि फिल्म वर्ड ऑफ माउथ का फायदा उठाती रही, तो यह आने वाले दिनों में और मजबूत पकड़ बना सकती है.

थलापति विजय के बेटे जेसन की डेब्यू फिल्म का नाम आया सामने

साउथ सुपरस्टार थलापति विजय के बेटे जेसन संजय ने अपने निर्देशन करियर की शुरुआत कर दी है. उनकी पहली फिल्म को लेकर लंबे समय से चल रही चर्चाओं पर अब विराम लग गया है, क्योंकि निर्माताओं ने फिल्म का शीर्षक और पहला पोस्टर जारी कर दिया है. जेसन की इस डेब्यू फिल्म का नाम 'सिग्मा' रखा गया है. फिल्म का निर्माण साउथ के प्रतिष्ठित लाइका प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले किया गया है. पोस्टर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर जेसन को बधाइयों की बाढ़ आ गई है. लोग थलापति विजय के बेटे की डेब्यू फिल्म देखने के लिए बेहद उत्साहित हैं. 'सिग्मा' के पोस्टर में अभिनेता संदीप किशन सोने की ईंटों और पैसों के ढेर पर बैठे नजर आ रहे हैं. उनके हाथ पर बंधी पट्टी और गहन एक्सप्रेशन उनके किरदार की इंटेंस और एक्शन-पैक्ड झलक पेश करते हैं. पोस्टर जारी करते हुए संदीप ने लिखा, "जेसन 01 – सिग्मा को आपके प्यार और आशीर्वाद की जरूरत है." थलापति विजय के बेटे के निर्देशन डेब्यू की खबर सुनते ही साउथ इंडस्ट्री के कई सितारों और फैंस ने सोशल मीडिया पर उन्हें शुभकामनाएं दी हैं. 'सिग्मा' को लेकर अब दर्शकों में जबरदस्त उत्साह है.

फिल्म को एक स्टाइलिश एक्शन-ड्रामा बताया जा रहा है, जो विजय के परिवार की सिनेमाई विरासत को आगे बढ़ाएगी. फिल्म की रिलीज डेट फिलहाल सामने नहीं आई है, लेकिन मेकर्स के मुताबिक 'सिग्मा' को 2026 की शुरुआत में बड़े पैमाने पर रिलीज किया जाएगा.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

मेष : परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए. कल का परिश्रम आज लाभ देगा. आलस्य का त्याग करें. कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा. यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा. शुभांक-3-5-7

वृष : जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी. महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. आय-व्यय समान रहेगा. कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी. बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा. सुख-आनंद कारक समय है. अपने काम पर ध्यान दीजिए. अंधविश्वासी न बनें. शुभांक-5-7-9

मिथुन : लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. शुभांक-6-7-9

कर्क : किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा. बुद्धि और धन का दुरूपयोग न करें व्यर्थ के आडम्बरों से बचें. अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें. परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता हैं. मानसिक तनाव में बढ़ोतरी होगी. पुराने मित्र से मिलन होगा. शुभांक-4-6-8

सिंह : भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है. शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है. स्वास्थ्य मध्यम रहेगा. जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा. व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी. कार्यसिद्धि में देर नहीं लगेगी. आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा. ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा. यात्रा का योग. शुभांक-6-8-9

कन्या : शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी. परिवार में कोई मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं. मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा. कारोबारी काम में प्रगति रहेगी. लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे. शुभांक-5-7-9

तुला : लाभ में आशातीत वृद्धि तय हैं मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं. किसी पुराने संकल्प को पुरा कर लेने का दिन हैं. 'आगे-आगे गौरख जागे वाली कहावत चरितार्थ होगी. निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा. ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. शुभांक-5-7-9

वृश्चिक :कामकाज की अधिकता रहेगी. लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी. व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी. कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा. धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी. मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी. शुभांक-3-6-8

धनु : कुछ पिछले संकट अब सिर उठा सकते हैं. निकट जनों के लिए अर्थव्यवस्था हेतु जोड़-तोड़ करना पड़ेगा. अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे. विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्ध होंगे. नौकरी में अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा. आध्यात्मिक रुचि बनेगी. शुभांक-2-3-5

मकर : सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा. किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी. अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा. कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा. आर्थिक ड्क्षचताएं कम होगी. नियोजित धन से लाभ होने लगेगा. शुभांक-2-5-7

कुंभ : विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है. शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग जनों से मतभेद रहेगा. भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी. जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है. आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी. बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. शुभांक-3-5-8

मीन : कार्य साधक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ. विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें. राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें. मान-सम्मान को ठेस लग सकती है. जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें. नये आगंतुकों से लाभ होगा. व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी. संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी. शुभांक-3-5-7

'पंचायत' के अभिषेक बनेंगे कबूतरबाज

'पंचायत' वेब सीरीज से अपार लोकप्रियता हासिल करने वाले अभिनेता जितेंद्र कुमार अब एक बिल्कुल अलग किरदार में नजर आने वाले हैं. अपनी सादगी और दमदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीतने वाले जितेंद्र इस बार 'कबूतरबाजी' यानी पारंपरिक पक्षी प्रतियोगिता पर आधारित एक अनोखी कहानी में दिखाई देंगे. खास बात यह है कि इस फिल्म में उनके साथ पूजा भट्ट भी नजर आएंगी, जो जितेंद्र की मां का किरदार निभाएंगी. रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म भारत की सदियों पुरानी कबूतरबाजी की परंपरा पर आधारित एक दिल को छू लेने वाली कहानी पेश करेगी. इसमें भावनाओं, परंपरा और आधुनिक सोच के टकराव को दिखाया जाएगा. फिल्म का निर्माण ख्याति मदान के नॉट आउट एंटरटेनमेंट बैनर तले किया जा रहा है, जबकि बिलाल हसन इसके निर्देशक हैं और हितेश केवल्य सह-निर्माता के रूप में जुड़े हैं. निर्माताओं ने फिलहाल फिल्म का शीर्षक तय नहीं किया है. माना जा रहा है कि फिल्म की शूटिंग अगले साल 2026 की शुरुआत में शुरू की जाएगी. कहानी का केंद्र पारिवारिक रिश्तों और पारंपरिक कबूतरबाजी के जुनून के इर्द-गिर्द घूमता है. काम की बात करें तो जितेंद्र कुमार आखिरी बार वह 'भागवत : चैप्टर वन राक्षस' में नजर आए थे.

महाकाल के दरबार में पहुंचीं अभिनेत्री दिव्या दत्ता, बोलीं -आत्मा तृप्त हो गई

बॉलीवुड की बेहतरीन अभिनेत्री दिव्या दत्ता हाल ही में उज्जैन पहुंचीं, जहां उन्होंने महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए. अपनी शानदार अभिनय यात्रा और विनम्र स्वभाव के लिए जानी जाने वाली दिव्या दत्ता बाबा महाकाल के दरबार में पहुंचकर भक्ति भाव में लीन नजर आईं. महाकालेश्वर मंदिर के सहायक प्रशासक आशीष फलवाडिया ने बताया कि अभिनेत्री ने पूरे श्रद्धाभाव से पूजन-अर्चन किया और भगवान शिव की आराधना में समय बिताया. दिव्या दत्ता इस दौरान पारंपरिक साड़ी पहने हुए बेहद सादगीपूर्ण अंदाज में दिखाई दीं. उन्होंने कभी ध्यान लगाया, कभी तालियां बजाईं और बार-बार "ॐ नमः शिवाय" का जाप करती रहीं. बाबा महाकाल के दर्शन के बाद उन्होंने नंदी जी के कानों में अपनी मनोकामना भी कही. दर्शन और पूजन के पश्चात उन्होंने भगवान कोटेश्वर का जलाभिषेक कर उनका विशेष आशीर्वाद प्राप्त किया. मीडिया से बातचीत में दिव्या दत्ता ने कहा कि बाबा महाकाल के दिव्य दर्शन ने उनके हृदय को प्रसन्न कर दिया है. उन्होंने बताया, "जैसे ही मैंने बाबा की आरती देखी, लगा कि वे मेरे बिल्कुल करीब हैं. ऐसा अद्भुत अनुभव पहले कभी नहीं हुआ. आत्मा तृप्त हो गई." उन्होंने सभी के मंगल की कामना करते हुए कहा कि बाबा महाकाल का आशीर्वाद सब पर बना रहे. अभिनेत्री ने यह भी बताया कि वे खुद को धन्य मानती हैं कि बाबा महाकाल के आंगन में होने वाले लाइट एंड साउंड शो में उनकी आवाज गूंजती है. उन्होंने कहा, "यह मेरे लिए गर्व और भक्ति का विषय है कि मेरी आवाज के माध्यम से बाबा की सेवा हो रही है." दिव्या दत्ता ने महाकाल मंदिर की दर्शन व्यवस्था और प्रबंध समिति की कार्यप्रणाली की भी प्रशंसा की. उन्होंने कहा कि बाबा महाकाल के दरबार में सभी समान हैं.

प्रेग्नेंसी के दौरान भी दिखेंगी स्टाइलिश, ट्राई करें ये ट्रेंडी सूट डिजाइन

प्रेग्नेंसी में कम्फर्टेबल कपड़े पहनना हम सभी को पसंद होता है। आप भी अगर सूट के अलग-अलग डिजाइन को सर्च कर रही हैं, तो इसके लिए आर्टिकल में बताए गए डिजाइन को ट्राई कर सकती हैं।

प्रेग्नेंसी टाइम हर महिला के लिए बेहद खास होता है। लेकिन इसमें सबसे ज्यादा उलझन कपड़ों को लेकर होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि हर किसी का मन करता है कि हम ऐसे कपड़ों को स्टाइल करें जो कम्फर्टेबल हो। इसके लिए महिलाएं अक्सर सूट को स्टाइल करना सबसे ज्यादा पसंद करती हैं। लेकिन सूट डिजाइन को लेने में हम हमेशा कनफ्यूज्ड रहते हैं कि किस तरह के सूट को वियर करें। इसके लिए आप आर्टिकल में बताए गए डिजाइन को ट्राई कर सकती हैं।

अनारकली सूट करें स्टाइल

अगर आपको खुला-खुला सूट पहनना पसंद है, तो इसके लिए आप अनारकली सूट के इस डिजाइन को ट्राई कर सकती हैं। रिया बत्रा ने हैवी अनारकली सूट को वियर किया है। आप इसमें चाहें तो प्रिंटेड या मोटा पट्टी वर्क वाले सूट को स्टाइल कर सकती हैं। मार्केट में इस तरह के सिंपल सूट आपको 500 रुपये में मिल जाएंगे। साथ ही इसे आप कहीं बाहर जाकर भी पहनकर जा सकती हैं। यह लुक को और अच्छा लगता है।

काफ्तान सूट करें स्टाइल

प्रेग्नेंसी में कम्फर्टेबल रहने के लिए आप काफ्तान सूट को स्टाइल कर सकती हैं। यह खुला-खुला होता है। साथ ही इसके साथ प्लाजो और पैंट आते हैं। जिसे वियर करके आप लुक को कम्फर्टेबल फील कर सकती हैं। इसमें आपको डिजाइन में अलग-अलग ऑप्शन मिल जाएंगे। साथ ही आप इसे अलग से भी खरीद सकती है और जींस के साथ पहन सकती हैं। इस तरह के सूट आप ऑफिस पहनकर भी जा सकती हैं। मार्केट में इस तरह के सूट आपको 250 से 500 रुपये में मिल जाएंगे।

प्लाजो सूट सेट

अगर आप कहीं बाहर जाने का प्लान कर रही है, और पूरे दिन कम्फर्टेबल रहना चाहती हैं, तो इसके लिए आप प्लाजो सूट को स्टाइल कर सकती हैं। इसमें आपको कट डिजाइन और स्लिट कट डिजाइन वाला सूट मिल जाएगा। जिसे आप आराम से पहनकर जा सकती है। इसमें आपको प्रिंट छोटे और बड़े दोनों मिल जाएंगे। मार्केट से खरीदने पर आपको इसमें वर्क भी अलग-अलग मिल जाएंगे। इससे आपका लुक अच्छा लगेगा। यह सूट आप बजार से 500 रुपये में कॉटन फैब्रिक में खरीद सकती हैं।

प्रेग्नेंसी में खूबसूरत और कम्फर्टेबल दिखने के लिए आप इन सूट को स्टाइल कर सकती हैं। इसमें आपका लुक अच्छा लगेगा। साथ ही, आप अलग नजर आएंगी।

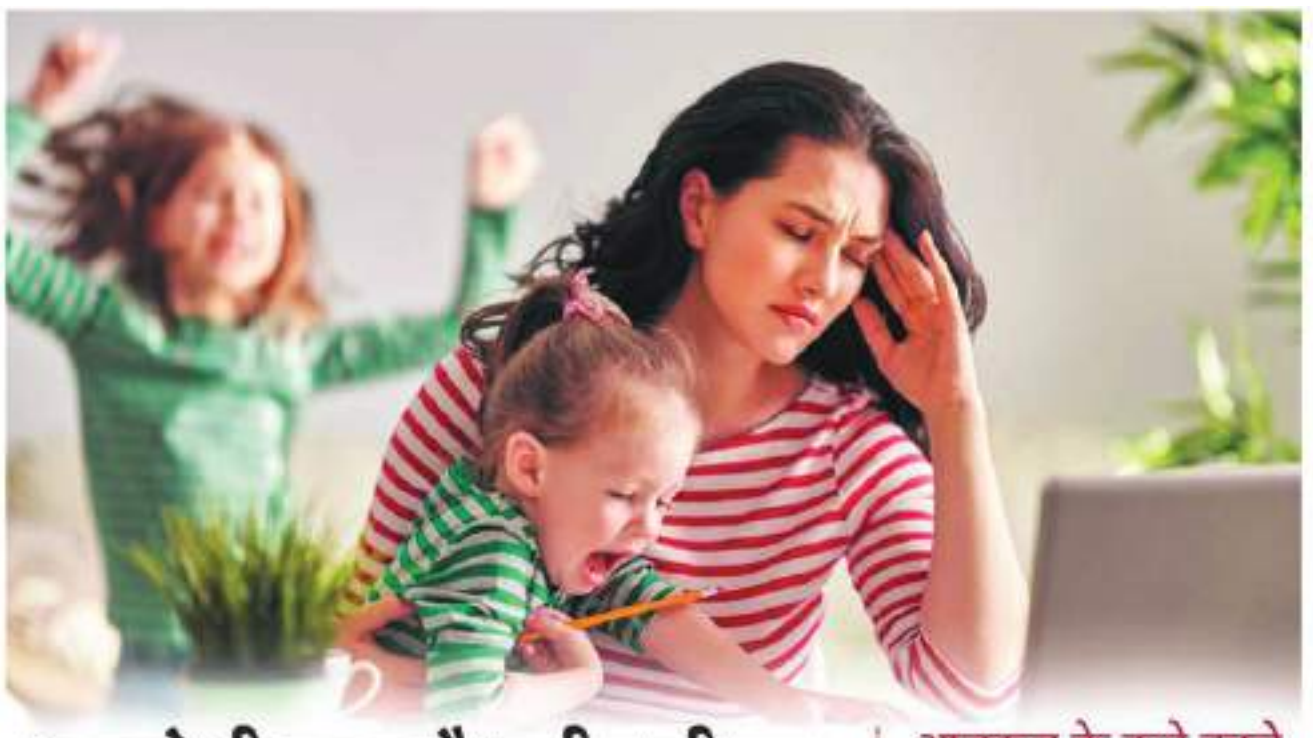

आपको भी लगता है स्क्रीन की लत ने बच्चों को बना दिया है बदतमीज? पेरेंट्स जरूर करें ये काम

आजकल के बच्चे इतने जिद्दी और बदतमीज हो गए हैं कि वे एक सेकंड भी बिना स्क्रीन देखे नहीं रह सकते हैं। कुछ माता-पिता की यह भी शिकायत है कि स्क्रीन टाइम के कारण उनके बच्चे बदतमीज होते जा रहे हैं। आइए इनके कारणों और निवारण के बारे में आज हम आपको बताते हैं।

स्क्रीन टाइम यानी स्मार्टफोन को देखने में बीतने वाला वक्त न केवल बच्चों के लिए शारीरिक समस्याएं पैदा करता है, बल्कि उनके व्यवहार पर भी दुष्प्रभाव डाल रहा है। कुछ माता-पिता की यह भी शिकायत है कि स्क्रीन टाइम के कारण उनके बच्चे बदतमीज होते जा रहे हैं। इसके कारणों को समझना और बचाव के तरीकों को लेकर समय रहते कदम उठाना बहुत जरूरी है।

स्क्रीन की लत से बच्चे के व्यवहार पर पड़ता है ऐसा असर

बहुत ज्यादा समय स्मार्टफोन पर बिताने से बच्चे सेंसरी ओवरलोड का शिकार हो जाते हैं। इससे उन्हें किसी बात पर फोकस करने में मुश्किल होने लगती है और मानसिक ऊर्जा में कमी का अनुभव होता है। इससे उनमें गुस्सा बढ़ता है। स्मार्टफोन पर ज्यादा समय बिताने वाले बच्चों और उनके माता-पिता के बीच संवाद कम होता है। घर में लोगों के साथ कम समय बिताने के कारण बच्चे सामाजिक एवं व्यावहारिक रूप से कटा-कटा अनुभव करते हैं, जिससे उनमें गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ता है। आजकल वीडियो गेम से लेकर कार्टून सीरियल्स और फिल्मों तक हर जगह हिंसा का बोलबाला है। लगातार इन्हें देखने वाले बच्चों के मन में हिंसा के प्रति आकर्षण पैदा होने लगता है। यही आकर्षण उन्हें शारीरिक एवं शाब्दिक हिंसा के लिए प्रेरित करता है और बच्चे बदतमीज हो जाते हैं।

छोटे बच्चे वर्चुअल दुनिया और रियलिटी में बहुत ज्यादा फर्क करना नहीं जानते हैं। इसी कारण से स्मार्टफोन पर देखी गई बातें उनके व्यवहार पर असर डालती हैं।

पेरेंट्स सतर्कता से उठाएं कदम

अगर आपके बच्चे के व्यवहार में भी इस तरह के बदलाव आ रहे हैं, तो सतर्क हो जाएं। इससे पहले कि बच्चे के व्यवहार पर स्थायी प्रभाव पड़ने लगे, उसके स्क्रीन टाइम को कम करने की दिशा में प्रयास करें। इसके लिए आपको कुछ नियम तय करने पड़ सकते हैं। बच्चे कब, कितनी देर और क्या देखेंगे, इसे लेकर स्पष्ट रहना जरूरी है। इस संबंध में आपको शुरुआत से ही सख्ती रखनी चाहिए। बच्चे देखकर ही सीखते हैं। इसलिए स्वयं भी स्क्रीन टाइम कम रखें, जिससे बच्चा आपको देखकर प्रेरित हो और स्मार्टफोन पर कम समय बिताए।

व्यवहार पर नजर रखना भी जरूरी है। बच्चे के व्यवहार में अचानक से होने वाले किसी भी बदलाव के प्रति सतर्क रहें और उसके कारण को दूर करने का प्रयास करें।

बच्चे को किताबें पढ़ने के लिए और बाहर खेलने के लिए प्रोत्साहित करें। साथ ही उसे कुछ क्रिएटिव करने के लिए भी प्रेरित करें। घर में एक टेक-फ्री जोन बनाएं। वहां बच्चे के खेलने और मनोरंजन के लिए किसी तरह का इलेक्ट्रॉनिक गैजेट न रहे। बच्चे के साथ वहां कुछ समय बिताएं।

इन चीजों के मामले में बच्चे को दें पूरी आजादी, सख्त पैरेंटिंग से बिगड़ सकता है भविष्य

बच्चे के साथ हर समय सख्ती से पेश आना विपरीत परिणाम दे सकता है। इसका असर बच्चों के भविष्य पर पड़ सकता है, जिससे बाद में आपको भी परेशानी हो सकती है। आइए एक्सपर्ट से जानते हैं कि बच्चे को किन मामलों में आजादी देना जरूरी होता है।

बच्चों को समझाना और समझाना कतई बच्चों का खेल नहीं है। हर कदम पर सतर्कता बरतने की जरूरत होती है। हालांकि इसी सतर्कता के चक्कर में कई बार माता-पिता बहुत ज्यादा सख्त हो जाते हैं। यह बच्चों के विकास के लिए घातक है। बच्चों को आगे बढ़ने और सफल होने के लिए नियम-अनुशासन के साथ-साथ थोड़ी आजादी की भी जरूरत होती है। आजादी और सतर्कता के बीच संतुलन से आप बच्चों का विकास एवं उनकी सुरक्षा दोनों सुनिश्चित कर सकते हैं।

निर्धारित करें सीमा

स्कूल से आने के बाद बच्चों का थोड़ा खेलने-कूदने का मन कर सकता है। अगर उन्हें सख्त पैरेंटिंग के चक्कर में आप घर से भी बाहर नहीं निकलने देंगे, तो उनका विकास अवरुद्ध होगा। आप बच्चे के साथ सहमति के आधार पर कुछ सीमाएं बना सकते हैं। जैसे बच्चे को बताइए कि वह किस गली तक या किसके घर तक और कितने बजे तक अकेले खेलने जा सकता है। साथ ही उसे प्यार से यह भी समझाइए कि यह सीमा उसकी सुरक्षा के लिए तय की गई है और जब भी उसे इससे आगे जाना हो तो वह घर पर पूछकर ऐसा करे।

खुद से कुछ करने का मौका दें

किशोर होते बच्चे अकेले कुछ काम करना चाहते हैं। उन्हें इसका मौका दें। उनकी जरूरत की और स्टेशनरी की हर चीज उन्हें खरीदकर मत दें। अगर आसपास कोई दुकान है, तो उन्हें वहां जाकर खुद अपनी जरूरत की चीज खरीदने को कहें। इससे उनमें आत्मविश्वास भी आएगा और वे हिसाब-किताब भी समझेंगे। ऐसा करना उन्हें लोगों से संवाद करने में भी सहज बनाएगा।

बच्चों से कुछ काम करवाएं

किशोर होते बच्चों में जिम्मेदारी और समयबद्धता की भावना जगाने के लिए उनसे कुछ काम भी करवाना चाहिए। जैसे अगर घर में कोई अन्य छोटा बच्चा है, तो उसे घुमाने की जिम्मेदारी घर के बड़े बच्चे को दे सकते हैं। बच्चे को घर के कामों में भी थोड़ा-बहुत योगदान देने के लिए प्रेरित करें। इससे वह स्वयं का महत्व समझता है और उसमें जिम्मेदारी की भावना आती है।

हस्तक्षेप न करें

पैरेंटिंग का सबसे मुश्किल पहलू है हस्तक्षेप न करना। एक बार जब बच्चे के साथ आप किसी सीमा को तय कर लें, तो उसे उस सीमा तक आजादी से रहने दें। इसमें बहुत धैर्य की जरूरत होती है। कभी लगे कि बच्चा कोई काम बिगाड़ देगा, तब भी अगर बहुत बड़ा नुकसान नहीं होने जा रहा है, तो उसे मत टोकें। उसे अपनी समझ और आजादी के साथ काम करने दें। गलती का स्वयं आभास होने दें। बाद में भी उसे डांटने के बजाय सिखाने का प्रयास करें, जिससे भविष्य में गलती न हो।

स्कूल के मामले में भी आजादी जरूरी

स्कूल से जुड़े मामलों में भी बच्चों को आजादी की जरूरत होती है। स्कूल में कोई प्रोग्राम होना है, तो बच्चे को उसमें हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करें, लेकिन किस प्रतियोगिता में भाग लेना है, इसका निर्णय उसे स्वयं करने दें। हर बात में अपनी राय न थोपें। हो सकता है कि आप उसे मैथ्स के ओलंपियाड में हिस्सा दिलाना चाहते हों, लेकिन उसकी रुचि हिंदी में हो। उसे अपने निर्णय लेने दें। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह बेहतर निर्णय लेने में भी सक्षम बनेगा।

कुछ ही दिनों में खराब हो जाएगा स्नेक प्लांट, अगर रखेंगी इन जगहों पर

स्नेक प्लांट एक लो मेंटेनेंस पौधा है और इसलिए लोग इसे अपने घर में जगह देना पसंद करते हैं। लेकिन फिर भी ऐसी कई जगहें होती हैं, जहां पर आपको स्नेक प्लांट को नहीं रखने से बचना चाहिए।

अपने घर को सजाने के लिए हम सभी कई चीजों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन पौधे ना केवल आपके घर को खूबसूरत बनाते है, बल्कि इनके अन्य भी कई फायदे मिलते है। यूं तो घरों में हम सभी अपने स्पेस व जरूरत के अनुसार प्लांट लगाते हैं, लेकिन स्नेक प्लांट एक ऐसा पौधा है, जिसे हम घर की कई अलग-अलग जगहों पर रखना पसंद करते है। यह सबसे कम देखभाल वाला हाउसप्लांट है। साथ ही साथ, यह घर के अंदर की हवा को भी प्योरिफाई करने में मदद करते है। चूंकि इन्हें बहुत अधिक केयर की जरूरत नहीं होती है, इसलिए इन्हें एक बिगनर भी अपने घर में जगह दे सकता है। दरअसल, स्नेक प्लांट को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप उन्हें पानी देना भूल गए हैं या आपकी लाइटिंग सही नहीं है। वे जल्दी खराब नहीं होते हैं। वे आपके लिविंग रूम से लेकर आपके ऑफिस डेस्क तक लगभग किसी भी जगह में फिट हो सकते है और इसे स्टाइलिश भी बना सकते है। अमूमन लोग इन्हें कहीं पर भी रख देते है। हालांकि, ऐसी कुछ जगहें होती हैं, जहां पर स्नेक प्लांट को रखने से बचना चाहिए, क्योंकि इससे उन्हें नुकसान हो सकता है। तो चलिए जानते हैं ऐसी ही कुछ जगहों के बारे में-

सीधी धूप में ना रखें

आपको अपने घर में स्नेक प्लांट को ऐसी किसी भी जगह पर नहीं रखना चाहिए, जहां से सीधी धूप आती हो। स्नेक प्लांट धूप को सहन कर सकते हैं, लेकिन बहुत ज्यादा सीधी धूप उनकी पत्तियों को झुलसा सकती है। अगर आपका स्नेक प्लांट सनबर्न से पीड़ित है, तो आपको ब्राउन, क्रिस्पी और फेडेड पीले पत्ते दिखाई दे सकते हैं। कोशिश करें कि आप स्नेक प्लांट को इनडायरेक्ट सनलाइट में रखें।

ह्यूमिडिफायर के ठीक बगल में ना रखें

हम सभी अपने घर में ह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करना पसंद करते है, लेकिन आपको कभी भी स्नेक प्लांट को ह्यूमिडिफायर के ठीक बगल में रखने की गलती नहीं करनी चाहिए। दरअसल, स्नेक प्लांट अपनी पत्तियों में पानी जमा करते हैं और सूखी हवा पसंद करते हैं। उन्हें ह्यूमिडिफायर के पास रखने से अत्यधिक नमी हो सकती है, जिससे रूट रॉट या फिर फंगल की समस्या हो सकती है। इसलिए, अपने ह्यूमिडिफायर को कहीं और रखें या पौधे के लिए कम नमी वाली जगह चुनें।

हीटर के पास ना रखें

ह्यूमिडिफायर की तरह ही स्नेक प्लांट को हीटर के करीब भी रखने से बचना चाहिए। ठंड के मौसम में हम हीटर का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन अगर स्नेक प्लांट को इसके करीब रखा जाता है तो पौधे को नुकसान उठाना पड़ सकता है। हीटर गर्म और रूखी हवा फेंकते हैं, जो आपके स्नेक प्लांट की मिट्टी और पत्तियों से नमी को सोख सकते हैं। इसकी वजह से आपका प्लांट सूख जाता है। कोशिश करें कि आप स्नेक प्लांट को हीटर सहित अन्य हीट सोर्स से कुछ फीट दूर रखें।

मैनचेस्टर सिटी ने लिवरपूल को 3-0 से पराजित किया

मैनचेस्टर । मैनचेस्टर सिटी ने मैनेजर पेप गार्डियोला के करियर के 1000वें मैच में लिवरपूल को 3-0 से मात देकर इतिहास रचा. इस जीत के साथ सिटी ने प्रीमियर लीग तालिका में आर्सेनल से केवल चार अंकों की दूरी बनाए रखी. मैच में पहले हाफ में एर्लिंग हॉलैंड ने 29वें मिनट में मैथ्यूस नूनेस के क्रॉस पर हेडर से गोल किया. हाफ टाइम से ठीक पहले निको गोंजालेज़ का शॉट वैन डाइक से टकराकर गोलपोस्ट में गया और सिटी 2-0 से आगे हो गई. दूसरे हाफ में जेरेमी डोकू ने व्यक्तिगत कौशल दिखाते हुए 63वें मिनट में तीसरा गोल दागा. सिटी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ मुकाबला समाप्त किया. इस जीत के साथ सिटी दूसरे स्थान पर पहुंच गई, जबकि लिवरपूल आठवें स्थान पर खिसक गया. गार्डियोला ने अपने 1000वें मैनेजमेंट मैच में 716वीं जीत दर्ज की, जिनमें 388 सिटी के साथ हैं. हॉलैंड ने लगातार तीसरे होम मैच में लिवरपूल के खिलाफ गोल दागा और अब तक इस सीज़न 14 गोल कर चुके हैं.

'शुक्रगुजार हूं गोवा के छोटे गांव में रहता हूं', मेरे घर में सूर्यास्त कुछ ऐसा दिखता है

दिल्ली की आबोहवा से परेशान हुए जोंटी रोड्स

- रांची जाते हुए दिल्ली से गुजर रहा हूं और हमेशा की तरह यहां की खराब वायु गुणवत्ता देखकर दुख होता है.

एजेंसियां । नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली की जहरीली हवा ने न केवल स्थानीय लोगों, बल्कि विदेशी हस्तियों को भी परेशान कर दिया है. साउथ अफ्रीका के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर जोंटी रोड्स ने दिल्ली की खराब वायु गुणवत्ता पर चिंता जाहिर करते हुए कहा है कि वे खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि गोवा जैसे स्वच्छ वातावरण में रहते हैं. उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, "मैं शुक्रगुजार हूं कि मैं दक्षिण गोवा के एक छोटे से गांव में रहता हूं, जहां मेरे बच्चे समुद्र किनारे खुले वातावरण में फुटबॉल खेल सकते हैं, जबकि दिल्ली में बच्चों को घरों में ही रहने की सलाह दी जा रही है."

पूर्व क्रिकेटर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर एक सुंदर सूर्यास्त की तस्वीर साझा की और लिखा, "मेरे घर में सूर्यास्त कुछ ऐसा दिखता है, और हां, ये मेरे बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं. दिल्ली में तो इस वक्त घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है." रोड्स हाल ही में दिल्ली से रांची की उड़ान पर थे. उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान राजधानी की वायु गुणवत्ता पर टिप्पणी करते हुए लिखा, "आज शाम रांची जाते हुए दिल्ली से गुजर रहा हूं और हमेशा की तरह यहां की खराब वायु गुणवत्ता देखकर दुख होता है. मैं वास्तव में आभारी हूं कि मैं गोवा के छोटे से गांव में रहता हूं, जहां हवा ताजी और साफ है." दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति लगातार भयावह होती जा रही है. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, सोमवार सुबह 7 बजे दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 372 दर्ज किया गया, जो 'गंभीर' श्रेणी में आता है. यह स्तर सांस लेने में कठिनाई, आंखों में जलन, और गले में खुजली जैसी स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर रहा है.

डॉक्टरों के मुताबिक, इस स्तर का प्रदूषण अस्थमा और श्वसन रोगों से पीड़ित मरीजों के लिए बेहद खतरनाक है. विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि अगर प्रदूषण का स्तर ऐसा ही बना रहा तो फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों के मामले बढ़ सकते हैं. लोगों को सलाह दी गई है कि वे घर से बाहर निकलने से बचें, विशेषकर सुबह और शाम के समय जब प्रदूषण का स्तर सबसे अधिक होता है.

दिल्ली सरकार ने दावा किया है कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए युद्धस्तर पर उपाय किए जा रहे हैं, जिनमें निर्माण कार्यों पर रोक, वाहन प्रतिबंध और एंटी-स्मॉग गन जैसे कदम शामिल हैं. हालांकि, नागरिकों का कहना है कि हर साल सर्दियों में यह स्थिति दोहराई जाती है और स्थायी समाधान की कमी बनी हुई है. जोंटी रोड्स का यह बयान सिर्फ उनकी व्यक्तिगत परेशानी नहीं दर्शाता, बल्कि दिल्ली की बिगड़ती आबोहवा पर एक वैश्विक चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है. उनका यह संदेश यह याद दिलाता है कि स्वच्छ हवा अब विलासिता नहीं, बल्कि जीवन की मूलभूत आवश्यकता बन गई है.

अरुण बने झारखंड अंडर-19 क्रिकेट टीम के मैनेजर

शुभम संदेश । चाईबासा

झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (जेएससीए) ने चाईबासा के वरिष्ठ खेल प्रबंधक और पूर्व क्रिकेटर अरुण मूंधड़ा (जिप्पी) को बीसीसीआई द्वारा आयोजित कूच बिहार ट्रॉफी के लिए झारखंड अंडर-19 टीम का मैनेजर नियुक्त किया है. उनकी नियुक्ति पश्चिमी सिंहभूम जिले के लिए गर्व का बात मानी जा रही है. चाईबासा के यूरोपियन क्वार्टर निवासी मूंधड़ा लंबे समय से क्रिकेट से जुड़े हैं और पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ तथा झारखंड राज्य क्रिकेट संघ के आजीवन सदस्य हैं. मूंधड़ा को क्रिकेट प्रशासन और प्रबंधन का व्यापक अनुभव है. उन्होंने कई वर्षों तक जिला क्रिकेट संघ के संयुक्त सचिव के रूप में कार्य किया और जिले में क्रिकेट के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई. यह दूसरी बार है जब जेएससीए ने उन्हें अंडर-19 टीम का मैनेजर नियुक्त किया है. इससे पहले वर्ष 2009-10 में वे विवेक सिंह की कप्तानी वाली झारखंड अंडर-16 टीम के मैनेजर रह चुके हैं, और उस समय टीम ने शानदार प्रदर्शन किया था. नियुक्ति पर पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा और महासचिव असीम कुमार सिंह ने उन्हें बधाई दी और इसे पूरे जिले के लिए सम्मान का विषय बताया. अरुण मूंधड़ा 13 नवम्बर को रांची से हवाई मार्ग से राजकोट के लिए रवाना होंगे, जहां झारखंड टीम 16 नवम्बर से सौराष्ट्र के खिलाफ पहला मुकाबला खेलेगी. लगभग एक माह तक चलने वाली ट्रॉफी में टीम सौराष्ट्र, हैदराबाद, बड़ौदा, केरल और पंजाब के खिलाफ खेलेगी. इस बार झारखंड अंडर-19 टीम में पश्चिमी सिंहभूम के दो प्रतिभाशाली खिलाड़ी साकेत कुमार सिंह और गौरव सिंह भी शामिल हैं.

आईपीएल 2026 : अभय बन सकते हैं एलएसजी के नये फील्डिंग कोच

एजेंसियां । नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 सीजन के लिए लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) अपनी तैयारी नए अंदाज़ में कर रही है. टीम प्रबंधन कोचिंग स्टाफ में बड़े बदलाव की योजना पर काम कर रहा है. पिछले सीजन में टीम के मेंटर रहे जहीर खान अब एलएसजी से अलग हो चुके हैं, जबकि आने वाले सीजन के लिए एक नए फील्डिंग कोच की नियुक्ति लगभग तय मानी जा रही है. रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत की अंडर-19 टीम के पूर्व फील्डिंग कोच अभय शर्मा को लखनऊ सुपर जायंट्स के फील्डिंग कोच के रूप में शामिल किया जा सकता है. अभय शर्मा का कोचिंग अनुभव काफी समृद्ध रहा है. वह युगांडा की राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच रह चुके हैं और भारतीय महिला क्रिकेट टीम के साथ भी काम कर चुके हैं. उनकी कोचिंग में कई युवा खिलाड़ी जैसे शुभमन गिल, अर्शदीप सिंह, ध्रुव जुरेल, अवेश खान और यशस्वी जायसवाल निखरकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचे हैं.

एलएसजी ने हाल ही में अपने प्रबंधन में भी अहम बदलाव किए हैं. टीम ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कोच टॉम मूडी को क्रिकेट निदेशक नियुक्त किया है, जबकि न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान केन विलियमसन को रणनीतिक निदेशक की जिम्मेदारी सौंपी गई है. विलियमसन, जो अभी भी सक्रिय क्रिकेटर हैं, पिछले सीजन में नीलामी में नहीं बिके थे. अब वे पर्दे के पीछे से टीम की रणनीति और दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. पिछले दो सीजन में एलएसजी का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है. आईपीएल 2025 में टीम ने ऋषभ पंत पर बड़ा दांव लगाया था, लेकिन उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं मिले. ऐसे में आगामी सीजन के लिए टीम प्रबंधन नए कोचिंग स्टाफ और रणनीति के साथ मैदान में उतरने की तैयारी में है, ताकि टीम को विजेता की राह पर वापस लाया जा सके.

टी-20 विश्व कप 2026 : आईसीसी ने आठ वेन्यू को चुना

कोलकाता व अहमदाबाद में हो सकते हैं सेफा. मुकाबले

- भारत में चुने गए पांच स्थानों में मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, अहमदाबाद और कोलकाता शामिल हैं.
- अगर पाकिस्तान और श्रीलंका दोनों टीमें सेमीफाइनल में नहीं पहुंचती हैं, तो दोनों सेमीफाइनल मुकाबले भारत में ही खेले जाएंगे.

एजेंसियां । नई दिल्ली

भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में अगले साल आयोजित होने वाले टी-20 विश्व कप 2026 के सेमीफाइनल मुकाबले अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम और कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेले जा सकते हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने इस टूर्नामेंट के लिए कुल आठ वेन्यू को चुना है जिनमें भारत के पांच और श्रीलंका के तीन शहर शामिल हैं. भारत में चुने गए पांच स्थानों में मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, अहमदाबाद और कोलकाता शामिल हैं. वहीं श्रीलंका में कोलंबो के दो स्टेडियम और कैंडी को मेजबानी का मौका दिया गया है. फाइनल मैच कहां खेला जाएगा, यह अभी तय नहीं हुआ है, हालांकि संभावना जताई जा रही है कि फाइनल मुकाबला भी अहमदाबाद में ही आयोजित किया जा सकता है.

टी-20 विश्व कप 2026 का आयोजन फरवरी-मार्च के बीच होने की योजना है. सूत्रों के अनुसार, सेमीफाइनल मुकाबलों की मेजबानी के लिए अहमदाबाद और कोलकाता शीर्ष दावेदार बने हुए हैं. हालांकि, अंतिम फैसला टीमों के क्वालीफाई करने की स्थिति पर निर्भर करेगा.

अगर पाकिस्तान और श्रीलंका दोनों टीमें सेमीफाइनल में नहीं पहुंचती हैं, तो दोनों सेमीफाइनल मुकाबले भारत में ही खेले जाएंगे. लेकिन यदि पाकिस्तान क्वालीफाई करता है, तो उसका मुकाबला श्रीलंका में आयोजित किया जाएगा. इसी तरह अगर श्रीलंका सेमीफाइनल में पहुंचता है, तो उसका मैच कोलंबो में खेला जा सकता है.

आईसीसी के 17 अक्टूबर को जारी बयान के अनुसार, इस बार 20 टीमें टी-20 विश्व कप में हिस्सा लेंगी. इन्हें चार ग्रुपों में पांच-पांच टीमों में बांटा जाएगा. ग्रुप चरण के बाद सुपर-8 राउंड खेला जाएगा, जिससे चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी. दिलचस्प बात यह है कि इस बार यूरोपीय टीम इटली टी-20 विश्व कप में अपना डेब्यू करेगी. वहीं, भारत मौजूदा चैंपियन है जिसने 2024 के टी-20 विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका को हराकर खिताब अपने नाम किया था.

क्रिकेट विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में सेमीफाइनल और संभवतः फाइनल मुकाबलों का आयोजन होने से दर्शकों की भारी भीड़ देखने को मिलेगी, जिससे टूर्नामेंट का रोमांच और भी बढ़ जाएगा. आईसीसी जल्द ही टी-20 विश्व कप 2026 का विस्तृत शेड्यूल जारी करने वाली है, जिसके बाद वेन्यू और तारीखों की औपचारिक घोषणा की जाएगी.

एटीपी फाइनल्स 2025

ज्वेरेव ने शेल्टन को हराकर की शानदार शुरुआत

एजेंसियां । ट्यूरिन

एटीपी फाइनल्स 2025 में जर्मनी के स्टार टेनिस खिलाड़ी अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने अपने अभियान की शानदार शुरुआत की है. टूर्नामेंट के पहले मैच में ज्वेरेव ने अमेरिकी युवा खिलाड़ी बेन शेल्टन को 6-3, 7-6(6) से हराया. इस जीत के साथ ज्वेरेव ने शेल्टन के खिलाफ एटीपी हेड-टू-हेड रिकॉर्ड 5-0 कर लिया. दो बार के एटीपी चैंपियन ज्वेरेव ने दूसरे सेट के टाई-ब्रेक में शेल्टन के 6/4 की बढ़त और दो सेट प्वाइंट का सामना करते हुए अपने संयम का परिचय दिया. आठ दिन पहले पेरिस मास्टर्स के सेमीफाइनल में जैनिक सिनर से हार का सामना करने के बाद ज्वेरेव पहली बार प्रतिस्पर्धा कर रहे थे, और इस मैच में वे बेहद तरोताजा नजर आए. उन्होंने पहला सेट 6-3 से आसानी से अपने नाम किया.

दूसरे सेट में ज्वेरेव लगातार दबाव में आए, लेकिन 2-2 के स्कोर पर दो ब्रेक प्वाइंट बचाने में सफल रहे. इसके बाद उन्होंने शेल्टन को टाई-ब्रेक के लिए मजबूर किया. टाई-ब्रेक में शेल्टन ने 4/0 की बढ़त हासिल की और 6/4 पर दो सेट प्वाइंट भी बनाए. लेकिन ज्वेरेव ने संयम बनाए रखा और 7-6(6) से सेट जीतकर मैच अपने नाम किया. इस

जीत के बाद ज्वेरेव ने शेल्टन की खूबियों की तारीफ की. उन्होंने कहा, "वह अविश्वसनीय रूप से आक्रामक खिलाड़ी हैं. शायद दुनिया के सबसे आक्रामक खिलाड़ियों में से एक हैं. टाई-ब्रेक में उन्होंने शानदार शुरुआत की. मैंने एक-दो सर्व मिस किए और उनका पासिंग शॉट (5/4 पर) शानदार था. मैंने उन चीजों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्हें मैं नियंत्रित कर सकता था. टाई-ब्रेक के अंत में अच्छा प्रदर्शन कर मैच जीतना बेहद संतोषजनक है."

इस जीत से ज्वेरेव ने न केवल आत्मविश्वास हासिल किया बल्कि टूर्नामेंट में आगे बढ़ने के लिए अच्छी शुरुआत भी की. उनका अगला मुकाबला निर्णायक साबित हो सकता है, और उन्होंने संकेत दिया है कि वे अपनी आक्रामक शैली और संयम के दम पर इस एटीपी फाइनल्स में शीर्ष प्रदर्शन के लिए तैयार हैं.

18 साल बाद खिताब जीतना एक अधूरी कहानी का अंत था : मयंक अग्रवाल

एजेंसियां । बेंगलुरु

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के बल्लेबाज मयंक अग्रवाल ने हाल ही में टीम के आधिकारिक पॉडकास्ट 'आरसीबी पॉडकास्ट' में अपने अनुभव साझा किए. उन्होंने आईपीएल नीलामी में अनसोल्ड रहने से लेकर आरसीबी के साथ 18 साल बाद खिताब जीतने तक के सफर के बारे में खुलकर बात की. नीलामी के बाद मयंक ने कहा, "मैंने खुद को 6-8 घंटे का समय दिया. हां, विचार आए कि मैं नहीं बिका, लेकिन मैंने खुद से कहा—हां, तुम्हें नहीं चुना गया. इसका मतलब है कि कुछ सुधार करने की जरूरत है. मैंने अपने बल्लेबाजी कोच के साथ बैठकर सुधार के बिंदु लिखे और तुरंत काम शुरू किया."

उन्होंने खुद के लिए सख्त रूटीन अपनाया—सुबह 5 बजे उठना, ट्रेनिंग और स्किल सेशन करना, दोपहर तक खत्म करना, परिवार के साथ समय बिताना और रात में अगले दिन की योजना बनाना. मयंक ने कहा, "अगर मैं दोपहर 3

या 3:30 तक योजना पूरी कर लेता, तो खुद को थोड़ा आराम देता, लेकिन अगले दिन की चेकलिस्ट हमेशा तैयार रहती."

आरसीबी ट्रायल्स के दौरान उन्हें असली मैच जैसा दबाव महसूस हुआ. मयंक ने कहा, "एंडी (आरसीबी कोच) ने कहा, 'ये सिलेक्शन मैच है, या तो बनाओ या बिगाड़ो.' मुझे ये चुनौती पसंद आई. अच्छा प्रदर्शन करने के बाद मुझे टीम में जगह मिली, और ओपन नेट्स और प्रैक्टिस गेम्स में बुलाया गया." फाइनल मुकाबले को लेकर मयंक ने कहा, "क्वालिफायर में काइल जैमीसन ने मेरे खिलाफ अच्छा ओवर डाला था. फाइनल में विराट ने कहा, 'वो बाउंस और शेप ले रहा है, इसलिए स्क्वेयर शॉट्स खेलो.' पहले बाउंड्री के बाद आत्मविश्वास लौटा और हमने दबाव पलट दिया. फिल सॉल्ट की आक्रामकता ने शुरुआत दी और मेरा काम लय बनाए रखना था."

भावुक होकर मयंक ने कहा, "आरसीबी के साथ मेरा पहला साल 2011 था जब फाइनल हारे थे. अब जीतना सिर्फ खुशी नहीं, बल्कि 2011 की कहानी को खत्म करना था. आईपीएल का हिस्सा न होने से लेकर 18 साल बाद खिताब जीतने वाली टीम का हिस्सा बनने तक का सफर ऐतिहासिक था. उस पल की भावनाओं को शब्दों में बयां करना मुश्किल है." अंत में उन्होंने कहा, "अब ध्यान रणजी ट्रॉफी पर है. कर्नाटक ने काफी समय से खिताब नहीं जीता. हम अच्छी क्रिकेट खेल रहे हैं, लेकिन फाइनल लाइन पार नहीं कर पाए. इस बार हम सब कुछ झोंक देंगे ताकि कर्नाटक और उसके फैन्स के लिए ट्रॉफी जीत सकें."

मेलबर्न स्टार्स बनाम एडिलेड स्ट्राइकर्स मैच बारिश में धुला

एजेंसियां । मेलबर्न

विमेंस बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) 2025 में सोमवार को मेलबर्न स्टार्स और एडिलेड स्ट्राइकर्स के बीच खेला गया चौथा मुकाबला बारिश के चलते बेनतीजा रहा. इस परिणाम के साथ दोनों टीमों ने 1-1 अंक साझा किए. यह दोनों टीमों का इस सीजन पहला मुकाबला था. जंक्शन ओवल में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर बल्लेबाजी करने उतरी मेलबर्न स्टार्स ने निर्धारित 20 ओवरों में 5 विकेट खोकर 184 रन बनाए. मेग लैनिंग ने रिस मैककेना के साथ 4.3 ओवरों में 38 रन की साझेदारी कर टीम को मजबूत शुरुआत दी. मैककेना 13 गेंदों में 16 रन बनाकर आउट हुईं.

इसके बाद लैनिंग ने एमी जोन्स के साथ दूसरे विकेट के लिए 25 रन जोड़कर टीम को संभाला. जोन्स 13 रन बनाकर पवेलियन लौटीं. 63 रन पर दो विकेट गिरने के बाद, लैनिंग ने कप्तान एनाबेल सदरलैंड के साथ तीसरे विकेट के लिए 52 रन जोड़े. लैनिंग 41 गेंदों में 1 छक्का और 9 चौकों की मदद से 60 रन बनाकर आउट हुईं.

सदरलैंड ने डेनियल गिब्सन के साथ पांचवें विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी कर टीम को विशाल स्कोर तक पहुंचाया. सदरलैंड 39 गेंदों में 1 छक्का और 7 चौकों की मदद से नाबाद 54 रन रही, जबकि गिब्सन ने 31 रन जोड़े. एडिलेड की ओर से अमांडा-जेड वेलिंगटन ने सर्वाधिक 2 विकेट लिए, जबकि डार्सी ब्राउन और सोफी एक्लेस्टोन को 1-1 सफलता मिली. जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी एडिलेड स्ट्राइकर्स ने 4.2 ओवरों में 1 विकेट खोकर 32 रन बनाए, लेकिन इसके बाद बारिश ने खेल रोक दिया और मुकाबला दोबारा शुरू नहीं हो सका. टैमू ब्यूमोंट ने कोई रन नहीं बनाया, जबकि लौरा वोल्वार्ड्ट 10 और मैडलिन पेन्ना 22 रन नाबाद रहीं. इस पारी में एकमात्र सफलता मारिजन कप्प को मिली.

जापान ओपन: लक्ष्य सेन और एचएस प्रणय करेंगे लय वापस पाने की कोशिश

एजेंसियां । कुमामोटो (जापान)

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन और एचएस प्रणय मंगलवार से शुरू होने वाले 4,75,000 अमेरिकी डॉलर इनामी कुमामोटो मास्टर्स जापान सुपर 500 टूर्नामेंट में अपनी खोई हुई लय वापस पाने की कोशिश करेंगे. उभरते भारतीय खिलाड़ी अपने प्रदर्शन से उम्मीदों को हकीकत में बदलने की तैयारी में हैं. लक्ष्य सेन ने लंबे समय के फीके प्रदर्शन के बाद हाल ही में शानदार वापसी की है. उन्होंने हांगकांग ओपन में उपविजेता रहकर आत्मविश्वास हासिल किया और उसके बाद डेनमार्क व हायलो ओपन में क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे. 24 वर्षीय सेन, जो पेरिस ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहे थे, अब इस लय को जारी रखना चाहेंगे. सातवीं वरीयता प्राप्त लक्ष्य सेन का पहला मुकाबला जापान के विश्व नंबर 25 कोकी वातानाबे से होगा, जिसे चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है.

वहीं, 33 वर्षीय एचएस प्रणय, जिन्होंने 2023 विश्व चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता था, पिछले समय में

फिटनेस समस्याओं से जूझ रहे हैं. पेरिस ओलंपिक से पहले चिकनगुनिया ने उनकी तैयारी पर असर डाला था, लेकिन दर्द के बावजूद वे ओलंपिक में खेले. अब चोट से उबरने के बाद वे वापसी कर रहे हैं. प्रणय का पहला मुकाबला मलेशिया के जुन हाओ लियोंग के खिलाफ होगा. उन्होंने कोरिया ओपन में इंडोनेशिया के चिको ऑरा द्वी वार्डोयो के खिलाफ रिब की चोट के कारण मैच बीच में छोड़ दिया था. करीब एक महीने के आराम के बाद प्रणय अब कोर्ट पर लौटने को तैयार हैं.

अगली पीढ़ी के खिलाड़ियों में आयुष शेठी पर सबकी नजरें रहेंगी. उन्होंने यूएस ओपन जीता था और हायलो ओपन में पूर्व विश्व चैम्पियन लो कियान यू को हराया था. उनका पहला मुकाबला शीर्ष वरीयता प्राप्त थाईलैंड के कुनलावत वितिदसार्न से होगा. इसके अलावा थरुन मन्नेपल्ली, जिन्होंने मकाऊ ओपन सुपर 300 में सेमीफाइनल तक पहुंचकर प्रभावित किया था, कोरिया के जियॉन ह्योक जिन से भिड़ेंगे, जबकि किरण जॉर्ज का सामना पहले दौर में एक क्वालिफायर से होगा. मिक्स्ड डबल्स में भारत की जोड़ी रोहन कपूर और रुथविका शिवानी गड्डे अमेरिका की जोड़ी प्रेस्ली स्मिथ और जेनी गैई से भिड़ेगी. अन्य श्रेणियों में इस बार भारत की कोई भागीदारी नहीं होगी. इस टूर्नामेंट में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर सभी की नजरें रहेंगी, खासकर लक्ष्य सेन और प्रणय की लय और फिटनेस पर, जो आगामी अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के लिए महत्वपूर्ण संकेत देंगे.

चयन ज्योति संभालेंगी कप्तानी, 25 नवंबर से 13 दिसंबर तक चिली में खेला जाएगा-

एफआईएच महिला जू. हॉकी वर्ल्ड कप, भारतीय टीम घोषित

एजेंसियां । नई दिल्ली

हॉकी इंडिया ने सोमवार को एफआईएच महिला जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप 2025 के लिए 20 सदस्यीय भारतीय टीम की घोषणा कर दी है. यह टूर्नामेंट 25 नवंबर से 13 दिसंबर 2025 तक सैंटियागो (चिली) में खेला जाएगा. टीम में 18 खिलाड़ी और दो वैकल्पिक खिलाड़ी शामिल हैं. इस प्रतियोगिता में भारत को पूल-सी में रखा गया है, जहां उसका सामना जर्मनी, आयरलैंड और नामीबिया जैसी टीमों से होगा.

भारत अपना पहला मैच 1 दिसंबर को नामीबिया के खिलाफ खेलेगा, इसके बाद 3 दिसंबर को जर्मनी और 5 दिसंबर को आयरलैंड से भिड़ेगा. पूल चरण की शीर्ष टीमें 7 से 13

दिसंबर के बीच खेले जाने वाले नॉकआउट मुकाबलों में जगह बनाएंगी. इस बार टीम की कप्तानी ज्योति सिंह के हाथों में होगी, जबकि टीम के मुख्य कोच तुषार खांडेकर रहेंगे. कोच तुषार खांडेकर ने कहा, "हमने टीम चयन में अनुशासन और संतुलन को प्राथमिकता दी है. बीते कुछ महीनों में खिलाड़ियों ने रक्षा और फिनिशिंग दोनों क्षेत्रों में जबरदस्त सुधार दिखाया है. अब वे अधिक आत्मविश्वास के साथ खेल रही हैं. हमारी तैयारियां बहुत मजबूत हैं और पूरा दल चिली में शानदार प्रदर्शन के लिए उत्साहित है."

उन्होंने आगे कहा, "टीम का जोश, फिटनेस और मानसिक दृढ़ता इस बार पहले से बेहतर है. हमें भरोसा है कि लड़कियां वर्ल्ड कप में देश का नाम रोशन करेंगी." टीम संयोजन की बात करें तो, गोलकीपर के रूप में निधि और एंगिल हर्षा रानी मिन्ज को शामिल किया गया है. डिफेंस लाइन में मनीषा, लल्थनलुआलांगी, साक्षी शुक्ला, पूजा साहू और नंदिनी टीम का हिस्सा हैं. मिडफील्ड में कप्तान ज्योति सिंह के साथ साक्षी राणा, ईशिका, सुनेलिता टोप्पो, खैदेम शिलैमा चानू और बिनिमा धान को जगह मिली है. फॉरवर्ड लाइन में सोनम, पूर्णिमा यादव, कनिका सिवाच, हिना बानो और सुखवीर कौर टीम की आक्रामक रणनीति को मजबूती देंगी. वैकल्पिक खिलाड़ियों के रूप में प्रियंका यादव और पार्वती टोप्पो को शामिल किया गया है.

भारतीय जूनियर टीम ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी फिटनेस, रणनीति और मानसिक मजबूती के दम पर विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है. कोचिंग स्टाफ को उम्मीद है कि यह युवा और ऊर्जावान टीम सैंटियागो में देश को गौरवान्वित करेगी और पदक के लिए प्रबल दावेदारी पेश करेगी.

न्यूजीलैंड बनाम वेस्टइंडीज : चौथा टी20 बारिश में धुला, न्यूजीलैंड 2-1 से आगे

एजेंसियां । नई दिल्ली

न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच नेल्सन में खेले गए चौथे टी20 मैच में बारिश ने खेल को बाधित कर दिया और मुकाबला बेनतीजा रहा. इस मैच में केवल 6.3 ओवरों का ही खेल संभव हो पाया. पांच मैचों की सीरीज में इस परिणाम के बाद न्यूजीलैंड 2-1 से आगे बना हुआ है.

इस मुकाबले में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर वेस्टइंडीज को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया. वेस्टइंडीज ने संभली हुई शुरुआत की. आमिर जंगू और एलिक एथनाज ने पहले विकेट के लिए 5.2 ओवरों में 30 रन की साझेदारी की. एथनाज 18 गेंदों में 2 छक्के और 1 चौका लगाकर 21 रन बनाकर आउट हुए. इसके बाद आमिर जंगू ने कप्तान शाई होप

के साथ मोर्चा संभाला. दोनों खिलाड़ियों ने दूसरे विकेट के लिए केवल 8 रन जोड़ पाए, तभी बारिश ने खेल रोक दिया. इस दौरान आमिर 18 गेंदों में नाबाद 12 रन बनाकर आउट नहीं हुए, जिसमें 2 चौके शामिल थे, जबकि शाई होप ने टीम के खाते में 3 रन जोड़े. विपक्ष की ओर से जेम्स नीशम इकलौते सफल गेंदबाज रहे. उन्होंने 1 ओवर में 5 रन देकर 1 विकेट हासिल किया. इस सीरीज की शुरुआत ऑकलैंड में हुई थी. पहले मैच को वेस्टइंडीज ने 7 रन से अपने नाम किया था. सीरीज का दूसरा मैच भी इसी मैदान पर खेला गया, जिसमें न्यूजीलैंड ने 3 रन से जीत दर्ज करते हुए सीरीज में 1-1 की बराबरी हासिल की. तीसरा मुकाबला नेल्सन में खेला गया, जिसे न्यूजीलैंड ने 9 रन से जीत कर सीरीज में बढ़त बना ली थी.

चौथा मैच बेनतीजा रहने के बाद अब सीरीज का अंतिम और निर्णायक मैच 13 नवंबर को यूनिवर्सिटी ओवल में खेला जाएगा. इस मैच में वेस्टइंडीज जीत दर्ज करके सीरीज को बराबरी पर लाना चाहेगी, जबकि न्यूजीलैंड अपनी बढ़त बरकरार रखने का प्रयास करेगी. टी20 सीरीज के बाद दोनों देशों के बीच तीन वनडे और तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला भी आयोजित की जाएगी.

न्यूज अपडेट

कैमूर में चुनावी ड्यूटी के दौरान पुलिस हेड कॉन्स्टेबल की मौत

कैमूर। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण से पहले कैमूर जिले के रामगढ़ थाना क्षेत्र से दुखद खबर सामने आई है. चुनावी ड्यूटी पर मौजूद कर्नाटक पुलिस के हेड कॉन्स्टेबल राजकुमार की हार्ट अटैक से मौत हो गई. सूत्रों के अनुसार, राजकुमार और उनकी टीम रामगढ़ हाई स्कूल परिसर में चुनाव ड्यूटी के लिए ठहरे हुए थे. सुबह साथी जवानों ने उन्हें जगाने की कोशिश की, तो वह बेहोशी की हालत में मिले. तुरंत उन्हें रामगढ़ रेफरल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. रामगढ़ बीडीओ जितेंद्र कुमार ने बताया कि प्रारंभिक जांच में मौत हार्ट अटैक से होने की बात सामने आई है. शव को पोस्टमार्टम के लिए भभुआ सदर अस्पताल भेजा गया है.

पुलिस ने फुलकाहा के नवाबगंज से साढ़े छह किलो गांजा किया जब्त

अररिया। जिले की फुलकाहा थाना पुलिस ने एसएसबी के साथ सोमवार को कार्रवाई करते हुए साढ़े छह किलो गांजा बरामद किया. बरामदगी फुलकाहा थाना क्षेत्र के तोप नवाबगंज से हुआ. हालांकि, तस्कर जवानों को देख कर मौके से भागने में सफल रहा. एसएसबी के फुलकाहा बीओपी प्रभारी असिस्टेंट कमांडेंट राणा कुमार के नेतृत्व में यह कार्रवाई गुप्त सूचना के आधार पर की गई. जवानों ने जांच-पड़ताल कर गांजे की यह खेप जब्त की और उसे सुरक्षित तरीके से कब्जे में ले लिया. बीओपी प्रभारी सहायक कमांडेंट रामकुमार ने बताया कि जब्त किए गए गांजे की कागजी कार्रवाई पूरी कर ली गई है और इसे फुलकाहा थाना पुलिस को सौंप दिया गया. उन्होंने कहा कि इस कार्रवाई का उद्देश्य क्षेत्र में नशे की तस्करी को रोकना और युवाओं को सुरक्षित रखना है.

परिवार पर लाठी-डंडों से हमला, 5 घायल

भोजपुर। जिले के सिकरहटा थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव से एक मारपीट का वीडियो सामने आया है, जिसमें आपसी रंजिश के चलते एक ही परिवार के पाँच लोगों को बेरहमी से पीटा गया. वीडियो में हमलावरों को हाथों में लाठी-डंडे लेकर लोगों पर हमला करते हुए देखा जा सकता है. स्थानीय ग्रामीणों की त्वरित मध्यस्थता से मामला शांत कराया गया. घायल सभी लोगों का इलाज आरा सदर अस्पताल में जारी है. फतेहपुर गांव के रहने वाले राकेश कुमार, मनोज कुमार सिंह, शत्रुघ्न सिंह, इंद्रजीत सिंह और बेदामो देवी इस हमले में घायल हुए हैं. पीड़ित मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मतदान से पहले कुछ लोगों ने उन्हें एक विशेष पार्टी को वोट न देने का दबाव बनाया था. जब उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन से वोट देगा, तब विवाद बढ़ गया.

टीचर ने फंदे पर लटक कर दी जान

पटना। एएनएम टीचर अपने बॉयफ्रेंड से वीडियो कॉल पर बात की और फिर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. मामला शास्त्रीनगर थाना क्षेत्र स्थित आदर्श कॉलोनी का है. जानकारी अनुसार सुकन्या एएनएम ट्रेनिंग स्कूल की शिक्षिका ज्योति कुमारी जो समस्तीपुर की रहने वाली थी. उन्होंने अपने कमरे में फंदे से लटककर आत्महत्या कर ली. घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची. मिली जानकारी के अनुसार, ज्योति ने आत्महत्या से कुछ देर पहले एक युवक से वीडियो कॉल पर बातचीत की थी. बातचीत खत्म होने के बाद वह अपने कमरे में चली गईं और दरवाजा बंद कर लिया.

नीतीश कुमार ने स्वास्थ्य और उम्र पर उठे सवालों का विपक्ष को दिया करारा जवाब

84 रैलियां कर चुनावी प्रचार में दिखाया दम

शुभम संदेश। पटना

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर विपक्ष द्वारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की उम्र और स्वास्थ्य को लेकर उठाए गए सवालों का सीधा जवाब नीतीश कुमार ने अपने चुनावी प्रचार के जरिए दिया है. विपक्ष ने दावा किया था कि सीएम बुजुर्ग हो गए हैं, थक गए हैं और बीमार हैं, इसलिए बिहार का प्रशासन संभालना उनके लिए मुश्किल है. इस पर नीतीश कुमार ने अपने अंदाज में जवाब देते हुए सक्रिय चुनावी अभियान चलाया और खुद को राज्य का सबसे सक्रिय स्टार प्रचारक साबित किया. इस बार नीतीश कुमार ने कुल 84 रैलियां कीं, जिनमें से 11 रैलियां सड़क मार्ग से की गईं. पहले चरण के चुनाव से पहले बारिश और खराब मौसम ने कई नेताओं की रैलियों को प्रभावित किया था. तेजस्वी यादव सहित कुछ नेता हेलीकॉप्टर से रैलियों में शामिल नहीं हो सके और उन्होंने जनता को केवल फोन के माध्यम से संबोधित किया. वहीं, नीतीश कुमार ने हेलीकॉप्टर पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं समझी और सड़क मार्ग से जनसभाओं में पहुंचे. नीतीश कुमार ने कुल 1000 किलोमीटर की सड़क यात्रा कर जनता से सीधा संवाद किया. इसके अलावा, उन्होंने 73 रैलियां हवाई मार्ग से पूरी की. केवल मंच पर भाषण देने तक सीमित न रहते हुए सीएम ने आठ विधानसभा क्षेत्रों में जनता से आमने-सामने बात की और उनके सवालों का जवाब दिया. इस दौरान उन्होंने खुद को थके और बीमार बताने वाले आरोपों को पूरी तरह गलत साबित किया.

मुख्यमंत्री ने चुनावी सभाओं में लालू-राबड़ी के शासन काल पर जमकर निशाना साधा और जनता को एनडीए एवं जद(यू) समर्थित प्रत्याशियों के पक्ष में वोट देने का आग्रह किया. रविवार को रोहतास जिले के गढ़ नोखा में आयोजित विशाल जनसभा में सीएम ने उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया और बिहार की विकास यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए जनता से समर्थन मांगा. चुनावी रणनीति के तहत सीएम ने जनता के बीच अपने कदम रखा और विपक्ष के आरोपों को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती दी. इस बार की रैलियों में उन्होंने यह संदेश देने की कोशिश की कि उनकी ऊर्जा और सक्रियता अब भी चुनावी मैदान में पूरी तरह मौजूद है. बिहार विधानसभा चुनाव का प्रचार अब अंतिम चरण में है. दूसरे चरण का प्रचार रविवार शाम 6 बजे समाप्त हो गया. इस चरण में 20 जिलों की 122 विधानसभा सीटों पर 11 नवंबर को मतदान होगा. कुल 1,302 उम्मीदवार मैदान में हैं, जिनमें 1,165 पुरुष, 136 महिलाएं और 1 तृतीय लिंग प्रत्याशी शामिल हैं.

राज्यभर में प्रति बूथ औसतन लगभग 815 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे. इस चुनावी दौड़ में नीतीश कुमार ने यह साबित कर दिया कि उम्र और स्वास्थ्य के सवाल उनके प्रचार और जनसंपर्क में बाधक नहीं हैं. सड़क और हवाई मार्ग से किए गए उनके सक्रिय प्रचार ने विपक्ष के आरोपों को खारिज कर दिया और उन्हें चुनावी स्टार प्रचारक के रूप में स्थापित किया.

अधिकारियों पर बनाया जा रहा है दबाबः तेजस्वी यादव

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान के पूर्व नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बड़ा आरोप लगाया है. एक वीडियो संदेश जारी कर उन्होंने कहा है कि प्रथम चरण के बाद एनडीए खेमे में भारी गमगीन माहौल है. उन्होंने आरोप लगाया कि हार के ख़ौफ़ से गृहमंत्री अधिकारियों से मिलकर एवं फ़ोन पर धमकी दे रहे है. जहां ठहरते है उस होटल के सीसीटीवी बंद करा देर रात्रि अधिकारियों को बुलाते है. साथ ही अभी मुख्यमंत्री आवास से बिना मुख्यमंत्री की जानकारी के भूंजा पार्टी की मित्र मंडली के ईडी के चंगुल में फंसे महाभ्रष्ट अधिकारी फ़ोन कर अधिकारियों को महागठबंधन के कार्यकर्ताओं को पुलिस के द्वारा वोटिंग के दिन तक डिटेन करने, महागठबंधन समर्थित मजबूत बूथों को डिस्टर्ब करने संबंधित निर्देश दिए जा रहे है. संबंधित रेंज के अधिकारी बैठक कर रहे है. उन्होंने कहा कि बदलाव निश्चित है इसलिए अधिकारी फ़ोन करने वाले का स्क्रीनशॉट तक हमें भेज रहे है. बिहार सरकार के ईमानदार अधिकारी बिना रिटायर्ड अधिकारियों के दबाव में आए संविधान सम्मत अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें. उन्होंने कहा कि दो गुजराती येनकेन प्रकारेण बिहार पर कब्जा करना चाहते है. वो बिहार को अपना उपनिवेश बनाना चाहते है. बिहार की जनता संविधान विरोधी कार्य करने वाले बेगैरत बे-ज़मीर सत्ताधारी नेताओं को कड़ा सबक सिखाने के लिए एक पैर पर खड़ी है. गणतंत्र की जननी बिहार में इनकी वोट चोरी हरगिज नहीं चलेगी. जनता हर प्रकार से यानि हर प्रकार से इनकी वोट चोरी और लोकतंत्र की डकैती रोकने के लिए तैयार है

पूर्वी चंपारण हमेशा से एनडीए का गढ़ माना जाता रहा है

इस बार चुनावी समीकरण बदलते दिख रहे हैं

शुभम संदेश। पूर्वी चंपारण

पूर्वी चंपारण हमेशा से एनडीए का गढ़ माना जाता रहा है. 2020 के विधानसभा चुनाव में 12 सीटों में से नौ पर एनडीए और तीन पर राजद का कब्जा था. लोकसभा चुनाव में भी एनडीए गठबंधन ने ही जीत दर्ज की थी. लेकिन इस बार स्थिति कुछ बदलती नजर आ रही है. दोनों गठबंधन—एनडीए और महागठबंधन—ने वैश्य समाज पर भरोसा जताते हुए लगभग आधा दर्जन सीटों पर वैश्य उम्मीदवार उतारे हैं. 2020 में भाजपा के प्रमोद सिन्हा ने कांग्रेस के रामबाबू यादव और राजद के बागी सुरेश यादव को हराया था. इस बार कांग्रेस ने पूर्व मंत्री बृजबिहारी प्रसाद के भाई श्याम बिहारी प्रसाद को उम्मीदवार बनाया है.

भाजपा के पूर्व विधायक अजय सिंह बागी होकर महागठबंधन उम्मीदवार की मदद कर रहे हैं. जनसुराज ने जेडीयू के पूर्व जिलाध्यक्ष भुवन पटेल को उतारा है, जिससे कांग्रेस को फायदा दिख रहा है. हरसिद्धि में भाजपा के मंत्री कृष्णनंदन पासवान फिर से मैदान में हैं. उनके खिलाफ राजद और जनसुराज के उम्मीदवार हैं. स्थानीय नाराजगी और विधायक-महेश्वर सिंह की अदावत मुकाबले को प्रभावित कर सकती है. गोविंदगंज में एनडीए के भीतर टिकट बंटवारे को लेकर खींचतान रही. भाजपा के सुनील मणि तिवारी और लोजपा (आर) के राजू तिवारी के बीच मुकाबला है. कांग्रेस के शशिभूषण राय और जनसुराज के कृष्णकांत मिश्रा भी मैदान में हैं.

केसरिया में जेडीयू की शालिनी मिश्रा और महागठबंधन के कई उम्मीदवारों के बीच मुकाबला है, जिससे जेडीयू को फायदा दिख रहा है. कल्याणपुर में भाजपा प्रत्याशी के अश्लील ऑडियो-वीडियो वायरल होने से मुकाबला दिलचस्प हो गया है. पिपरा, मधुबन और चिरैया में वैश्य और यादव वोटों के बिखराव से भाजपा और जेडीयू को लाभ मिलने की संभावना है. मुस्लिम बहुल सीट पर जनसुराज ने वैश्य चिकित्सक डॉ. लालबाबू प्रसाद को उतारा है, जिससे मुकाबला रोमांचक बन गया है. नरकटिया में वैश्य वोटों को एकजुट करने की रणनीति दिखाई दे रही है. मोतिहारी में भाजपा के प्रमोद कुमार लगातार पांचवीं बार मैदान में हैं. राजद ने बाहुबली नेता देवा गुप्ता को उम्मीदवार बनाया है. भाजपा वोटों के बिखराव से राजद को फायदा मिल सकता है. पूर्वी चंपारण की यह चुनावी तस्वीर दर्शाती है कि पारंपरिक समीकरण अब चुनौतीपूर्ण हो गए हैं. वैश्य और यादव वोटों की रणनीति और बागी उम्मीदवारों की भूमिका इस बार परिणाम को प्रभावित कर सकती है.

गायघाट क्षेत्र में मौत विराग ने डीएम की रिपोर्ट खारिज कर दी

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट विधानसभा क्षेत्र में एक व्यक्ति की मौत ने राजनीतिक चर्चा तेज कर दी है. जिला प्रशासन ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर स्पष्ट किया कि मृतक की मौत का चुनाव या मतदान प्रक्रिया से कोई संबंध नहीं है. इस मामले पर लोजपा (रा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने ट्वीट कर डीएम की रिपोर्ट को खारिज कर दिया और इसे राजनीतिक हत्या करार दिया. चिराग पासवान ने आरोप लगाया कि गायघाट के सखौरा पटसारा गांव में राजद समर्थकों ने शंकर पासवान की हत्या की और इसे चुनावी हार की हताशा का परिणाम बताया. उन्होंने इसे 'जंगलराज की मानसिकता' की वापसी कहा और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की. कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया था कि व्यक्ति को गलत जगह वोट डालने पर सजा दी गई, जिसके बाद उसकी मौत हुई. डीएम कार्यालय ने इसे पूरी तरह भ्रामक और बताया. प्राथमिक जांच में पता चला कि विवाद की शुरुआत जलेबी के पेड़ से पत्ता तोड़ने को लेकर हुई.

बिहार में महागठबंधन की सरकार बनी तो महिलाओं को ढाई हजार रुपये की सहायताः जयराम रमेश

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण से पहले कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने कहा है कि इस बार बिहार में महागठबंधन की सरकार बनना तय है. सत्ता में आते ही बिहार के लिए महागठबंधन की पांच साल की बीस सूत्री गारंटी लागू की जाएगी, जिसमें हर घर से एक सदस्य को सरकारी नौकरी, महिलाओं को हर महीने ढाई हजार रुपये सहायता और दो सौ यूनिट तक मुफ्त बिजली जैसी तमाम सुविधाएं दी जाएंगी. कांग्रेस नेता रमेश ने अपने एक्स पोस्ट में कहा कि महागठबंधन की गारंटी में पांच सौ रुपये में गैस सिलेंडर, महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा, जीविका दीदियों को तीस हजार रुपये वेतन, वृद्धजनों को पंद्रह सौ रुपये पेंशन और दिव्यांगों को तीन हजार रुपये मासिक पेंशन देने का वादा किया गया है. इसके अलावा किसानों को उपज पर समर्थन मूल्य की गारंटी, चौबीस घंटे मुफ्त बिजली और सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना लागू करने की बात भी शामिल है.

सरकारी स्कूलों में अटेंडेंस के लिए अब टैबलेट का उपयोग, सामूहिक फोटो से होगी उपस्थिति दर्ज

पटना। सरकारी स्कूलों में दशकों से चली आ रही एटेंडेंस रजिस्टर प्रणाली अब बदलने जा रही है. पटना जिला शिक्षा कार्यालय ने स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति डिजिटल माध्यम से दर्ज करने का निर्णय लिया है. इस योजना के तहत प्रत्येक क्लास में क्लास टीचर के पास टैबलेट रहेगा. टीचर रोजाना अपने क्लास के बच्चों की सामूहिक तस्वीर खींचकर अपनी लॉगिन आईडी से ई-शिक्षा कोष पोर्टल पर उपस्थिति अपलोड करेंगे. तस्वीरें वर्ग के चारों ओर से ली जाएंगी ताकि हर बच्चे का चेहरा स्पष्ट दिखाई दे. जिले के प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों को दो-दो टैबलेट उपलब्ध कराए गए हैं. कुछ स्कूलों में बच्चों की संख्या के आधार पर तीन टैबलेट भी दिए गए हैं. एक टैबलेट का उपयोग बच्चों की उपस्थिति, स्कूल में हो रही गतिविधियों, नियमित क्लास और मध्याह्न भोजन में शामिल बच्चों की जानकारी दर्ज करने के लिए होगा. वहीं दूसरा टैबलेट शिक्षक अपनी उपस्थिति दर्ज करने में इस्तेमाल करेंगे. विशेष रूप से प्रारंभिक स्कूलों में यह प्रक्रिया अनिवार्य होगी.

कारोबार

भारत की हाउसिंग सेल्स वैल्यू वित्त वर्ष 26 में 6.65 लाख करोड़ रुपए पहुंचने का अनुमान

नई दिल्ली। भारत के बड़े शहरों में प्राइमरी हाउसिंग मार्केट की सेल्स वैल्यू वित्त वर्ष 26 में सालाना आधार पर 19 प्रतिशत बढ़कर 6.65 लाख करोड़ रुपए पहुंचने की उम्मीद है. इसकी वजह लग्जरी और अल्ट्रा-लग्जरी घरों की मजबूत मांग होना है. यह जानकारी सोमवार को जारी हुई एक रिपोर्ट में दी गई. रियल एस्टेट सर्विसेज फर्म एनारॉक की रिपोर्ट में कहा गया कि वैश्विक स्तर पर तनाव के बावजूद भी शीर्ष सात भारतीय शहरों में सेल्स वॉल्यूम स्थिर बनी हुई है और वित्त वर्ष 26 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में इन शहरों में 1.93 लाख यूनिट्स से अधिक की ब्रिकी हुई है. सेल्स वैल्यू में वृद्धि मुख्य रूप से विभिन्न शहरों में अधिक कीमत वाले घरों की बिक्री के कारण हो रही है,क्योंकि लग्जरी और अल्ट्रा-लग्जरी आवास की मांग अन्य सभी सेगमेंट्स से अधिक बनी हुई है. आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 26 की पहली छमाही में कुल सेल्स वैल्यू 2.98 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गई है जो वित्त वर्ष 2025 की कुल सेल्स वैल्यू 5.59 लाख करोड़ रुपए का 53 प्रतिशत है. एनारॉक ग्रुप के कार्यकारी निदेशक और रिसर्च एवं एडवाइजरी प्रमुख प्रशांत ठाकुर ने कहा, "कुल बेचे गए घरों की सेल्स वैल्यू बढ़ रही है. वित्त वर्ष 2025 में सेल्स वॉल्यूम में सालाना आधार पर 14 प्रतिशत की गिरावट देखी गई थी, जबकि सेल्स वैल्यू 6 प्रतिशत बढ़कर 5,59,290 करोड़ रुपए हो गई, जो वित्त वर्ष 2022 के बाद से सबसे अधिक है." शहर-वार विश्लेषण से पता चला है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) और चेन्नई ने वित्त वर्ष 2026 की पहली छमाही में अन्य शहरों को पीछे छोड़ दिया.

बजट 2026-27 की तैयारी शुरू

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों के साथ की पहली प्री-बजट चर्चा

एजेंसियां। नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को आगामी केंद्रीय बजट 2026-27 की तैयारियों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों के साथ पहली प्री-बजट चर्चा की. यह बैठक नई दिल्ली में हुई, जिसमें मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी. अनंत नागेश्वरन, आर्थिक मामलों के विभाग (डीईए) के सचिव और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए.

वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर जानकारी साझा करते हुए कहा, "केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री निर्मला सीतारमण ने नई दिल्ली में आगामी केंद्रीय बजट 2026-27 के संबंध में प्रमुख अर्थशास्त्रियों के साथ पहली प्री-बजट चर्चा की अध्यक्षता की." मंत्रालय के अनुसार, बैठक में डीईए के वरिष्ठ अधिकारियों और कई अनुभवी अर्थशास्त्रियों ने हिस्सा लिया और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए अपने सुझाव दिए.

प्री-बजट चर्चाओं का उद्देश्य सरकार को आगामी बजट के लिए आवश्यक इनपुट उपलब्ध कराना है. इन चर्चाओं में टैक्स सुधार, व्यापार सुगमता (Ease of Doing Business), निवेश को प्रोत्साहन और राजकोषीय संतुलन जैसे मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया जा रहा है. सरकार विभिन्न उद्योग संगठनों, कारोबारी प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों के साथ क्रमिक बैठकों के माध्यम से व्यापक परामर्श प्रक्रिया चला रही है.

बीते महीने पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) के अधिकारियों ने राजस्व सचिव अरविंद श्रीवास्तव से मुलाकात की थी. बैठक के बाद पीएचडीसीसीआई के सीईओ और महासचिव डॉ. रणजीत मेहता ने बताया कि बातचीत अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष कर प्रणाली को सरल बनाने और उद्योग जगत की जरूरतों के अनुरूप ढालने पर केंद्रित थी. उन्होंने कहा कि "एमएसएमई सेक्टर की लिक्विडिटी की समस्या दूर करने के लिए भी सरकार को सुझाव दिए गए हैं. सरकार का रुख इन सुझावों के प्रति काफी सकारात्मक रहा है."

वहीं पीएचडीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष साकेत डालमिया ने कहा कि "नए कानूनों के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों को लेकर भी चर्चा हुई, जिसे सरकार ने गंभीरता से सुना और सकारात्मक प्रतिक्रिया दी." इन प्रारंभिक चर्चाओं से यह स्पष्ट है कि केंद्र सरकार आगामी बजट को न केवल विकासोन्मुखी बल्कि उद्योग, रोजगार और सामाजिक कल्याण को प्रोत्साहित करने वाला बनाना चाहती है. वित्त मंत्रालय का लक्ष्य है कि 2026-27 का बजट आम नागरिक तक आर्थिक लाभ पहुंचाने के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था को गति दे.

मेट्रो शहरों से परे अब 9 उभरते बाजार दे रहे हैं कॉरपोरेट माइग्रेशन को नई दिशा

एजेंसियां। मुंबई

देश में अब मेट्रो शहरों से हटकर नौ नए उभरते बाजार कॉरपोरेट माइग्रेशन को गति दे रहे हैं. एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की 10 लाख करोड़ रुपए की अर्थव्यवस्था में ये शहर लगभग 70 मिलियन वर्ग फीट ग्रेड-ए ऑफिस स्पेस और 80 मिलियन वर्ग फीट लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर का संचालन कर रहे हैं.

जेएलएल की रिपोर्ट बताती है कि जयपुर अब आईटी कंपनियों के लिए एक नए टेक्नोलॉजी डेस्टिनेशन के रूप में उभर रहा है. दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे और इंटरनेशनल एयरपोर्ट से बेहतर कनेक्टिविटी, साथ ही मजबूत टैलेंट पूल ने शहर को तेजी से विकसित किया है.

लखनऊ अपने उन्नत इंफ्रास्ट्रक्चर और डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग निवेश के कारण तेजी से इंडस्ट्रियल हब बन रहा है. अगले तीन से चार वर्षों में यहां मजबूत कमर्शियल इन्वेंट्री की उम्मीद है.

कोयंबटूर राज्य में चेन्नई के बाद दूसरा सबसे बड़ा औद्योगिक और आईटी केंद्र बन चुका है. यह सुरक्षित कार्य वातावरण और विविध सेक्टर्स के लिए उपलब्ध टैलेंट के कारण निवेशकों को आकर्षित कर रहा है.

कोच्चि अपने इंटरनेशनल अंडर-सी केबल सिस्टम के कारण देश का प्रमुख इंटरनेट गेटवे है, जो कम लागत पर हाई-स्पीड कनेक्टिविटी प्रदान करता है. वहीं, भुवनेश्वर अपनी स्मार्ट सिटी पहल और बेहतर गवर्नेंस से निवेश का केंद्र बन रहा है.

पूर्वोत्तर में गुवाहाटी भारत-आसियान व्यापार कॉरिडोर का प्रमुख द्वार बनकर उभरा है. भारतमाला प्रोजेक्ट और लॉजिस्टिक्स पार्क विकास ने इसे क्षेत्रीय वेयरहाउसिंग हब में बदल दिया है.

भारत में ऊर्जा क्षेत्र में निवेश में तेजी, पांच वर्षों में पूंजीगत व्यय 280 अरब डॉलर के पार जाने की उम्मीद : जेफरीज

एजेंसियां। मुंबई

भारत में ऊर्जा क्षेत्र पर पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) अगले पांच वर्षों में दोगुना से अधिक बढ़कर 280 अरब डॉलर के पार पहुंचने की उम्मीद है. यह अनुमान वैश्विक ब्रोकरेज फर्म जेफरीज ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में व्यक्त किया है. रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2025 से 2030 के बीच भारत का ऊर्जा क्षेत्र में पूंजीगत निवेश वित्त वर्ष 2019-2024 के मुकाबले 2.2 गुना बढ़ जाएगा.

जेफरीज का कहना है कि ऊर्जा क्षेत्र में यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से बड़े ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट्स, सरकारी नीतिगत समर्थन और ग्रिड इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार के कारण संभव हो रही है. फर्म का आकलन है कि पावर सेक्टर का इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश इस वृद्धि का प्रमुख चालक रहेगा, जो लगभग 21 प्रतिशत कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (सीएजीआर) से बढ़ रहा है. इसके मुकाबले, समग्र औद्योगिक और इन्फ्रास्ट्रक्चर कैपेक्स वित्त वर्ष 2024 से 2027 के बीच 11 प्रतिशत सीएजीआर से बढ़ने की संभावना है.

रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025 में लगभग 1.6 लाख करोड़ रुपये के ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट्स की बोलियां पहले ही प्रदान की जा चुकी हैं, जबकि वित्त वर्ष 2024 में यह आंकड़ा 39,500 करोड़ रुपये था. यह संकेत देता है कि आने वाले वर्षों में भारत का ऊर्जा ढांचा तेजी से विस्तार करेगा.

जेफरीज ने अपनी रिपोर्ट में यह भी कहा कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा और ग्रिड के आधुनिकीकरण पर बढ़ते फोकस से पावर इक्विपमेंट निर्माताओं के लिए जबरदस्त अवसर पैदा होंगे. रिपोर्ट के अनुसार, मजबूत एग्जीक्यूशन, बढ़ते ऑर्डर इनफ्लो और बेहतर मार्जिन से सेक्टर की अग्रणी कंपनियों को महत्वपूर्ण लाभ मिलने की संभावना है.

ब्रोकरेज फर्म ने यह भी जोड़ा कि "भारत के मौजूदा पूंजीगत व्यय चक्र में पावर ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन सेगमेंट सबसे आकर्षक औद्योगिक क्षेत्रों में से एक बने हुए हैं."

सरकार की नीति भी इस दिशा में साफ है. केंद्र सरकार पारंपरिक ऊर्जा के साथ-साथ स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) पर तेजी से फोकस बढ़ा रही है. बीते महीने सरकार ने बताया था कि भारत के कुल बिजली उत्पादन में ग्रीन एनर्जी की हिस्सेदारी बढ़कर 51 प्रतिशत हो चुकी है. इसमें रिन्यूएबल, हाइड्रो और न्यूक्लियर स्रोतों से मिलने वाली ऊर्जा शामिल है.

यह रुझान इस बात का संकेत है कि आने वाले वर्षों में भारत का ऊर्जा क्षेत्र न केवल अधिक टिकाऊ बनेगा बल्कि आर्थिक विकास की गति को भी नई दिशा देगा.

'वर्ल्ड साइंस डे' पर केंद्रीय मंत्रियों ने कहा

भारत अपनी वैज्ञानिक प्रगति से दुनिया को कर रहा प्रेरित

नई दिल्ली। 'वर्ल्ड साइंस डे' के अवसर पर केंद्रीय मंत्रियों ने कहा कि भारत अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों और ज्ञान-आधारित नवाचारों से दुनिया को प्रेरित कर रहा है और आगे भी विज्ञान के माध्यम से वैश्विक प्रगति में योगदान देता रहेगा. केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने कहा कि 'भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नेतृत्व की दिशा में बढ़ रहा है, जहां इनोवेशन प्राचीन ज्ञान से जुड़कर विकास को नई दिशा देता है. विश्वगुरु बनने के विजन के साथ भारत विज्ञान के माध्यम से उद्देश्यपूर्ण और स्थायी भविष्य का निर्माण करेगा.' वहीं, नितिन गडकरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'विज्ञान हमें हमारे ग्रह की बड़ी चुनौतियों के समाधान की ओर मार्गदर्शन करता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए समानता और प्रगति को बढ़ावा देता है.'

अक्टूबर में खुले 30 लाख से अधिक डीमैट खाते, 10 महीनों का उच्चतम स्तर दर्ज

मुंबई। अक्टूबर माह में देशभर में 30 लाख से अधिक नए डीमैट खाते खोले गए, जो पिछले 10 महीनों का सबसे ऊंचा स्तर है. डिपॉजिटरी डेटा के अनुसार, सितंबर में 24.6 लाख नए खाते खुले थे, जबकि अक्टूबर में यह आंकड़ा तेजी से बढ़कर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया. विशेषज्ञों का कहना है कि डीमैट खातों में यह उछाल इक्विटी बाजार की रिकवरी, विदेशी निवेशकों की वापसी और बड़े आईपीओ के आने से जुड़ा है. इस महीने के अंत तक देश में डीमैट खातों की कुल संख्या 21 करोड़ को पार कर गई, जो सितंबर में 20.7 करोड़ थी. अक्टूबर में भारतीय प्राइमरी मार्केट ने जोरदार प्रदर्शन किया. महीने भर में 10 आईपीओ लॉन्च हुए, जिन्होंने मिलकर करीब 44,930 करोड़ रुपये जुटाए — जो अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है. शेयर बाजार के बेहतर प्रदर्शन ने भी निवेशकों की दिलचस्पी बढ़ाई है. अक्टूबर में सेंसेक्स और निफ्टी ने क्रमशः 3 प्रतिशत रिटर्न दिया.

इस सप्ताह खुलेंगे 6 नए आईपीओ, सात कंपनियों की होगी शेयर बाजार में लिस्टिंग

नई दिल्ली। इस सप्ताह प्राइमरी मार्केट में निवेशकों के लिए बड़ा अवसर आने वाला है. सोमवार से शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह में छह कंपनियां अपने आईपीओ लॉन्च कर रही हैं, जिनमें चार मेनबोर्ड और दो एसएमई सेगमेंट के इश्यू शामिल हैं. इसके अलावा सात कंपनियों की शेयर बाजार में लिस्टिंग भी तय है. 11 नवंबर को एमवी फोटोवोल्टिक लिमिटेड का 2,900 करोड़ का आईपीओ खुलेगा, जबकि फिजिक्स वाला 3,480 करोड़ का आईपीओ लॉन्च करेगा. इसी दिन वर्कमेट्स कोर-2-क्लाउड और महामाया लाइफसाइंसेज लिमिटेड के एसएमई आईपीओ भी सब्सक्रिप्शन के लिए उपलब्ध होंगे. 12 नवंबर को टेनेको क्लीन एयर 3,600 करोड़ का आईपीओ लाएगी और 13 नवंबर को फूजियामा पावर सिस्टम्स का इश्यू खुलेगा.

न्यूज अपडेट

असम मंत्रिमंडल ने बहुविवाह निषेध विधेयक-2025 को दी मंजूरी

गुवाहाटी। राज्य मंत्रिमंडल ने असम बहुविवाह निषेध विधेयक-2025 को मंजूरी दे दी. इसे राज्य में बहुविवाह प्रथा को समाप्त करने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रही है. यह निर्णय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा की अध्यक्षता में रविवार रात लोक सेवा भवन में मंत्रिपरिषद की बैठक में लिया गया. बैठक में और भी कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए. मंत्रिमंडल ने उत्तर गुवाहाटी के रंगमहल में स्टेट ऑफ द आर्ट ज्यूडिशियल टाउनशिप के पहले चरण के निर्माण को प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की. इस परियोजना की अनुमानित लागत 478.78 करोड़ रुपये होगी. हाई कोर्ट कॉम्प्लेक्स डेवलपमेंट के अंतर्गत आधुनिक न्यायिक परिसर का निर्माण किया जाएगा.

दक्षिण कोरिया: पूर्व राष्ट्रपति यून सुक पर मुकदमे की मिली मंजूरी

सियोल। दक्षिण कोरिया में पूर्व राष्ट्रपति यून सुक योल और उनकी सरकार के दो शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा अब और सख्त हो गया है. आरोप है कि योल ने दोनों कोरियाओं के बीच तनाव भड़काने और देश में मार्शल लॉ लगाने का बहाना जुटाने के उद्देश्य से उत्तर कोरिया के ऊपर ड्रोन उड़वाए थे. इसके चलते देश के वर्तमान राष्ट्रपति ली जे म्युंग ने इस मुकदमे की मंजूरी दे दी है. योल पर यह भी आरोप है कि उन्होंने दिसंबर में संसद के खिलाफ सैनिक भेजकर मार्शल लॉ लागू कराने की कोशिश की, जिसे संसद ने निरस्त कर दिया था. ओलीयुक्त उनकी पूर्व रक्षा मंत्री किम योंग ह्यून और पूर्व मिलिट्री खुफिया सर्विस कमांडर यिओ इन ह्युंग भी इस मामले में आरोपी हैं. इससे योल का समूचा राजनीतिक भविष्य संकट में है.

आचार संहिता उल्लंघन पर मिजोरम के सीएम को ईसी ने लगाई फटकार

आईजोल। मिजोरम के सीएम लालदुहोमा को आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में चुनाव आयोग ने फटकार लगाई है. कार्रवाई डम्पा विधानसभा उपचुनाव के दौरान प्रचार भाषण में दिए गए उनके बयानों को लेकर की गई. आयोग ने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी से प्राप्त रिपोर्ट और सत्तारूढ़ जोरोम पीपुल्स मूवमेंट (जेडपीएम) के अध्यक्ष लललियानसावता के स्पष्टीकरण की समीक्षा के बाद कहा कि पार्टी का जवाब अस्वीकार्य है. आयोग ने मिजोरम के सीईओ को भेजे पत्र में मुख्यमंत्री के बयान को "निंदनीय" बताया.

मधेश प्रदेश की राज्यपाल सुमित्रा भंडारी पद से बर्खास्त

काठमांडू। नेपाल सरकार ने मधेश प्रदेश की प्रदेश प्रमुख सुमित्रा सुवेदी भंडारी को पद से हटा दिया है. प्रधानमंत्री सुशीला कार्की की अध्यक्षता में सोमवार को हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में उन्हें पदमुक्त करने का निर्णय लिया गया. सरकार के प्रवक्ता एवं सूचना तथा संचार मंत्री जगदीश खरेल ने बताया, "मधेश प्रदेश में हाल में घटित घटनाक्रमों के आधार पर सरकार ने उन्हें पद से हटाने का निर्णय लिया है." रविवार को नेपाली कांग्रेस समेत सात दलों ने राज्यपाल भंडारी का ध्यान आकर्षित करते हुए संविधान की धारा 168 के उपधारा (2) के अनुसार सरकार गठन का आह्वान करने की मांग की थी.बताया गया है कि राज्यपाल भंडारी स्वास्थ्य खराब होने का हवाला देते हुए जनकपुर से काठमांडू के लिए रवाना हुई थीं.

बीबीसी 'छेड़छाड़' स्कैंडल के बीच डोनाल्ड ट्रंप ने दी कड़ी चेतावनी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रिटिश सार्वजनिक प्रसारक बीबीसी पर 2021 में उनके द्वारा दिए गए भाषण को गलत तरीके से संपादित कर प्रसारित करने का आरोप लगाते हुए तीखा विरोध जताया है. ट्रम्प ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ सोशल पर लिखा कि बीबीसी के शीर्ष लोग, जिनमें कार्यकारी प्रमुख टिम डेवि और अन्य शामिल हैं, या तो इस्तीफा दे चुके हैं या उन्हें सस्पेंड कर दिया गया है क्योंकि उन्होंने 6 जनवरी के मेरे अच्छे भाषण में छेड़छाड़ की. इन भ्रष्ट पत्रकारों का भंडाफोड़ करने के लिए टेलीग्राफ का धन्यवाद. इन बेईमान लोगों ने राष्ट्रपति चुनाव में दखल देने की कोशिश की. सबसे बड़ी बात, ये लोग उस देश से हैं, जो हमारा सबसे करीबी सहयोगी है. लोकतंत्र के लिए यह कितनी भयावह बात है. यह विवाद तब सामने आया जब नवंबर 2025 में बीबीसी को आरोपों का सामना करना पड़ा.

स्लोवाकिया में दो ट्रेनों की टक्कर में दर्जनों घायल यात्री अस्पताल में

ब्राटिस्लावा। स्लोवाकिया में रविवार शाम दो ट्रेनों की टक्कर में दर्जनों यात्रियों के घायल होने की खबर है. देश के आंतरिक मंत्री माटुस सुताज एस्टोक ने यह जानकारी दी. एस्टोक ने दुर्घटनास्थल पर बताया कि यह दुर्घटनाघटना उस समय हुई जब पहले से ही खड़ी एक ट्रेन में एक अन्य ट्रेन ने पीछे से आकर टक्कर मार दी. बाद में उन्होंने टेलीविजन पर प्रसारित एक संक्षिप्त प्रेस वार्ता में कहा कि दुर्घटना राजधानी ब्राटिस्लावा और उसके 20 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित पेजिनोक के बीच के 'कॉरिडोर' में हुई. बताया कि इस दौरान दर्जनों लोग घायल हुए हैं जिसमें से 11 को अस्पताल ले जाया गया है. हालांकि उन्होंने दुर्घटना में किसी की मृत्यु होने के घायल होने से इंकार किया है.

न्यूयार्क के प्रसिद्ध टाइम्स स्क्वायर पर हिंदू संगठनों का विरोध प्रदर्शन

न्यूयॉर्क। अमेरिका में न्यूयार्क के प्रसिद्ध टाइम्स स्क्वायर पर कुछ हिंदू संगठनों ने भारत के मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई, पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ एवं कुछ अन्य न्यायाधीशों के हिन्दू विरोधी रवैये और बयानबाज़ी के खिलाफ शनिवार को प्रदर्शन किया तथा उनसे हिंदुओं से माफ़ी मांगने और इस्तीफ़ा देने की मांग की. इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने उनके अल्प वस्त्रों वाले चित्रों और उनके विरुद्ध कटाक्ष वाले बयानों के बड़े बड़े कट आउट प्रदर्शित किये. भारी तादाद में जुटे प्रदर्शनकारियों ने कहा कि गवई को उनकी हिंदू विरोधी टिप्पणियों के लिए दुनिया भर के हिंदुओं से माफी मांगनी चाहिए. उन्होंने कहा, ₹ हम ऐसे न्यायाधीशों के इस्तीफे की मांग करते हैं.₹ प्रदर्शनकारियों ने उनकी जिन टिप्पणियों पर आपत्ति जताई है, उसमें 'लिंग' को 'पुरुष जननांग'के रूप में निरूपित करना भी शामिल है. रैली में ऐसे ही अन्य हिंदू-विरोधी और भ्रष्ट न्यायाधीशों के खिलाफ भी कड़ी कार्रवाई करने की मांग की गई. उन्होंने आरोप लगाया कि एक इस्लामी संगठन की याचिका पर, उच्चतम न्यायालय ने न्यायपालिका की भागीदारी के बिना सरकार को सरकारी ज़मीन पर दावा करने से भी रोक लगा दी है. यह मूल रूप से वक्फ अधिनियम की जगह ले रहा है. प्रदर्शनकारियों ने ऐसे न्यायाधीशों को खतरनाक 'माफिया' करार देते हुए आरोप लगाया कि ये सभी हिंदू धर्म को निशाना बना रहे हैं. उन्होंने जोर देकर कहा कि वर्तमान न्यायपालिका के साथ राष्ट्र की प्रगति असंभव है. देश में कुल पांच करोड़ से ज़्यादा मामले लंबित हैं और अकेले उच्चतम न्यायालय में ही सात लाख मामले लंबित हैं फिर भी ये न्यायाधीश तीन महीने की छुट्टी लेते है.

इजरायली सेना के सामने हमास के 200 लड़ाके नहीं करेंगे आत्मसमर्पण

इजरायल ने हमास के बंकर को सील करना शुरू किया

एजेंसी। तेलअवीव

गाजा के राफा क्षेत्र में हमास और इजरायल के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ गया है. हमास की सशस्त्र शाखा इज़्ज़ेदिन अल-क़स्साम ब्रिगेड ने रविवार को घोषणा की कि राफा के एक बंकर में फंसे उसके लगभग 200 लड़ाके इजरायली सेना के सामने आत्मसमर्पण नहीं करेंगे. संगठन ने कहा है कि वह मध्यस्थों से इस संकट का कोई वैकल्पिक समाधान खोजने की उम्मीद करता है, ताकि करीब एक महीने पहले लागू हुए युद्धविराम को खतरा न हो. रिपोर्टों के अनुसार, इजरायली सेना ने राफा के उस बंकर को सील करना शुरू कर दिया है, जिसमें हमास के ये लड़ाके फंसे हुए हैं. इससे उनके जीवन पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है. समाचार एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि बंकर में फंसे लड़ाकों को बाहर निकालने के लिए मध्यस्थ लगातार बातचीत कर रहे हैं. सूत्रों के मुताबिक, मध्यस्थों ने एक प्रस्ताव रखा है जिसके तहत हमास के लड़ाके यदि अपने हथियार डाल दें तो उन्हें गाजा के किसी अन्य क्षेत्र में सुरक्षित निकलने की अनुमति दी जा सकती है. लेकिन हमास ने इस प्रस्ताव को सख्ती से ठुकरा दिया है. हमास के प्रवक्ता ने कहा, "दुश्मन को यह पता होना चाहिए कि आत्मसमर्पण और खुद को सौंपने की अवधारणा अल-क़स्साम ब्रिगेड के डिक्शनरी में मौजूद ही नहीं है. हमारे लड़ाके अपने बचाव के लिए डटे रहेंगे." इस बयान से स्पष्ट है कि संगठन किसी भी तरह के समझौते के बजाय संघर्ष को जारी रखने के पक्ष में है. इस बीच, तुर्की ने दावा किया है कि वह गाजा में सुरंगों में फंसे लगभग 200 'नागरिकों' की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है. तुर्की के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रॉयटर्स को बताया कि अंकारा ने इससे पहले भी इजरायल और हमास के बीच मानवीय मध्यस्थता में भूमिका निभाई थी. अधिकारी ने कहा कि तुर्की ने करीब 11 साल पुराने एक मामले में, जिसमें इजरायली सैनिक हदर गोल्डिन की मृत्यु हुई थी, उसके अवशेषों की वापसी में सहयोग किया था. उन्होंने कहा, "हम अब गाजा में फंसे लोगों की सुरक्षित निकासी के लिए भी प्रयास कर रहे हैं."

वहीं, मिस्र के मध्यस्थों ने भी एक नया प्रस्ताव रखा है. उनके अनुसार, यदि राफा में फंसे हमास के आतंकवादी मिस्र को अपने हथियार सौंप दें और वहां मौजूद सुरंगों की जानकारी दें, तो उन्हें सुरक्षित मार्ग दिया जा सकता है. मिस्र चाहता है कि इन सुरंगों को नष्ट कर भविष्य में हथियारों की तस्करी और सैन्य गतिविधियों को रोका जा सके. अमेरिका भी इस स्थिति पर करीबी नजर रखे हुए है. अमेरिकी विशेष दूत स्टीव विटकॉफ ने कहा कि राफा में फंसे लगभग 200 आतंकवादियों के लिए प्रस्तावित समझौता गाजा में हमास बलों को निरस्त्र करने की व्यापक प्रक्रिया का एक "टेस्ट केस" साबित हो सकता है. उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि अगर यह संकट नहीं सुलझा, तो इससे मौजूदा युद्धविराम खतरे में पड़ सकता है. हालांकि, अल-क़स्साम ब्रिगेड ने राफा में चल रही मध्यस्थता पर कोई सीधी टिप्पणी नहीं की, लेकिन अपने बयान में संकेत दिया कि मौजूदा गतिरोध युद्धविराम की स्थिरता को प्रभावित कर सकता है. इस पूरे घटनाक्रम से गाजा में शांति प्रक्रिया एक बार फिर अस्थिर स्थिति में पहुंच गई है और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंता बढ़ गई है.

शहरी सहकारी बैंक बनें आकांक्षी युवाओं और निम्न वर्ग के सशक्तीकरण का आधार: अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि देश के शहरी सहकारी बैंक अब आकांक्षी युवाओं, छोटे व्यापारियों और निम्न वर्ग के लोगों के सशक्तीकरण के लिए अग्रणी भूमिका निभाएं. उन्होंने कहा कि नैफकब और अन्य शहरी सहकारी संगठन एक 'नैतिक दिशानिर्देश जारी करें, जिसके आधार पर प्रत्येक बैंक अपने वित्तीय ढांचे को पुनः डिज़ाइन कर सके. शाह यहां राष्ट्रीय शहरी सहकारी बैंक एवं ऋण समिति महासंघ (नैफकब) और सहकारिता मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'को-ऑप कुंभ 2025' को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि शहरी सहकारी बैंक और ऋण समितियां हाल के वर्षों में नए उत्साह और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ी हैं. उन्होंने अमूल और इफ्को को अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन द्वारा विश्व रैंकिंग में क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर बधाई दी. शाह ने कहा कि यह दर्शाता है कि सहकारिता की अवधारणा आज भी उतनी ही प्रासंगिक और जीवंत है.

संसद पुनर्स्थापना मुद्दे पर नेपाली कांग्रेस में गहराया मतभेद, महासचिव ने जताई आपत्ति

काठमांडू। नेपाल की संसद- प्रतिनिधि सभा के पुनर्स्थापना के मुद्दे पर नेपाली कांग्रेस के भीतर आंतरिक मतभेद उजागर हो गये हैं. पार्टी अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा निवर्तमान संसद की पुनर्बहाली के पक्ष में लामबंदी कर रहे हैं जबकि पार्टी के महासचिव गगन थापा के अगले वर्ष चुनाव कराने के पक्ष में आवाज़ मुखर कर रहे हैं. पार्टी के अध्यक्ष शेरबहादुर देउबा के निर्देशन में, जो इस समय सिंगापुर में हैं, नेपाली कांग्रेस ने रविवार से सांसदों के हस्ताक्षर कराने की प्रक्रिया शुरू की. मुख्य सचेतक श्याम धिमिरे ने देउबा के आदेश पर इस हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत की, ताकि 12 सितम्बर को सुशीला कार्की के नेतृत्व में गठित अंतरिम सरकार के बाद भंग की गई संसद को पुनर्स्थापित किया जा सके. इस कदम के साथ, नेपाली कांग्रेस और नेकपा (एमाले) दोनों ही संसद पुनर्स्थापना के पक्ष में खड़ी हो गई हैं. हालांकि, नेपाली कांग्रेस के महासचिव गगन थापा ने इस कदम का सार्वजनिक रूप से विरोध किया है. उनका कहना है कि आगामी 5 मार्च को निर्धारित आम चुनाव नियत समय पर ही कराए जाने चाहिए.

श्रीलंका की कैद से मछुआरों की रिहाई के लिए सीएम स्टालिन ने केंद्रीय विदेश मंत्री को लिखा पत्र

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि वे श्रीलंकाई नौसेना की कैद से सभी मछुआरों को रिहा करने के लिए हस्तक्षेप करें. साथ ही मछुआरों की मछली पकड़ने वाली नावों को भी वापस दिलाने का प्रयास करें. इस संबंध में मुख्यमंत्री स्टालिन ने अपने पत्र में लिखा कि भारतीय मछुआरों और उनकी मछली पकड़ने वाली नावों को श्रीलंका की नौसेना सैनिकों के पकड़ने की घटनाएं लगातार हो रही हैं. इसी माह 9 नवंबर 2025 की रात को मयिलादुथुराई जिले के 14 मछुआरों और उनकी मोटरबोटों को श्रीलंकाई नौसेना ने पकड़ लिया है. इन मछुआरों को पकड़ना बेहद चिंताजनक है. मुख्यमंत्री ने अपने पत्र में लिखा कि इसके अलावा, ₹2024 में पकड़े किए गए कई मछुआरे अभी भी वहां की हिरासत में हैं. तमिलनाडु के 128 मछुआरे भी श्रीलंकाई जेलों में हैं. साथ ही, तमिलनाडु के मछुआरों की 248 मछली पकड़ने वाली नावें भी श्रीलंका नौ सेना के कब्जे में हैं.

गुवाहाटी के आसमान में वायुशक्ति का भव्य प्रदर्शन

गुवाहाटी। भारतीय वायुसेना के 93वें स्थापना दिवस समारोह के तहत रविवार को असम की राजधानी गुवाहाटी के आसमान में वायुशक्ति का भव्य प्रदर्शन हुआ. ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे, प्रसिद्ध अहोम सेनानी लचित बोरफुकन की प्रतिमा के पास आयोजित इस शानदार फ्लाई पास्ट ने पूरे क्षेत्र में रोमांच भर दिया. यह आयोजन न केवल भारतीय वायुसेना की ताकत और तकनीकी कौशल का परिचायक रहा, बल्कि देश के दुश्मनों को भी सख्त संदेश देने वाला साबित हुआ. मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने इस अवसर पर कहा कि "गुवाहाटी के आसमान में गर्जना करते ये जेट हमारे दुश्मनों की नींद उड़ा देंगे." उन्होंने यह भी कहा कि "चिकन नेक" जैसे रणनीतिक रूप से संवेदनशील इलाके में आयोजित यह फ्लाई पास्ट भारत की तैयारी और सामरिक क्षमता का प्रतीक है. इस हवाई प्रदर्शन में तेजस, राफेल, सुखोई-30 एमकेआई, मिग-29, जगुआर और मिराज जैसे अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों ने आसमान में गगनभेदी गर्जना की. वहीं, परिवहन और सहयोगी विमानों में सी-17, सी-130जे सुपर हरक्यूलिस, सी-295, एएन-32, आईएल-78 और एईडब्ल्यूएंडसी जैसे विमान शामिल थे.

पीआईए की उड़ानें लगातार छठे दिन भी बाधित रहीं

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में विमान इंजीनियरों की जारी हड़ताल के कारण पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस (पीआईए) की उड़ानें सोमवार को लगातार छठवे दिन भी बाधित रही जिसके कारण यात्रियों को असुविधा का सामना करना पड़ा. सोसाइटी ऑफ एयरक्राफ्ट इंजीनियर्स ऑफ पाकिस्तान (एसएईपी) के सदस्य वेतन असमानता और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को लेकर हड़ताल पर हैं, जिसके कारण नौ उड़ानें रद्द हो गईं और 18 अन्य में तीन से दस घंटे तक की देरी हुई. पीआईए प्रबंधन और इंजीनियरों के बीच विवाद चार नवंबर को उस समय चरम पर पहुंच गया, जब इंजीनियरों ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए विमानों के 'एयरवर्थनेस' प्रमाणपत्र जारी करने से इनकार कर दिया. इससे देश भर में पीआईए की कई उड़ानें ठप हो गईं. इस बीच आज रद्द हुई उड़ानों में आबू धाबी से पेशावर, दुबई से कराची, फैसलाबाद से दुबई, दुबई से फैसलाबाद, पेशावर से दुबई जैसी अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शामिल हैं, जबकि घरेलू स्तर पर गिलगित-इस्लामाबाद और स्कार्दू-इस्लामाबाद की आने जाने वाली उड़ानें प्रभावित हुईं हैं. देरी से उड़ान भरने वाली उड़ानों में में इस्लामाबाद से अल ऐन को करीब 10 घंटे की देरी का सामना करना पड़ा, जबकि लाहौर से मदीना, इस्लामाबाद से जेद्दा, कराची से जेद्दा और अन्य रूट्स पर भी व्यवधान हुआ. रिपोर्टों के मुताबिक यात्रियों ने हवाई अड्डों पर लंबे इंतजार की शिकायत की, जिसमें उड़ानों में होने वाली देरी के कारण कईयों को होटलों में ठहरना पड़ा.

ट्रंप ने बेलारूस के लिए विशेष दूत नामित किया, अधिक कैदियों की रिहाई की मांग की

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को घोषणा की कि उन्होंने जॉन कोएल को बेलारूस के लिए विशेष दूत के रूप में नामित किया है. कोएल ने हाल ही में बेलारूस से बंदियों की रिहाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. ट्रंप ने कहा कि वे अब अधिक कैदियों की रिहाई के लिए प्रयास जारी रखेंगे. ट्रंप प्रशासन ने हाल के महीनों में बेलारूस के साथ राजनयिक संपर्कों में तेजी लाई है और इस वर्ष मिन्स्क में कई अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल भेजे हैं. बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्ज़ेंडर लुकाशेंको रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के करीबी सहयोगी माने जाते हैं. सितंबर में, ट्रंप की अपील के बाद बेलारूस ने 52 कैदियों को रिहा किया था. ट्रंप ने इससे पहले लुकाशेंको से 1,400 बंदियों की रिहाई की मांग की थी, जिन्हें उन्होंने "बंधक" कहा था. ट्रंप ने अपने 'ट्रुथ सोशल' नेटवर्क पर पोस्ट करते हुए लिखा, "जॉन कोएल अब तक 100 बंदियों की रिहाई सफलतापूर्वक करा चुके हैं और अब 50 और लोगों की रिहाई के लिए प्रयास कर रहे हैं." उन्होंने आगे कहा, "मैं बेलारूस के अत्यंत सम्मानित राष्ट्रपति अलेक्ज़ेंडर लुकाशेंको का अग्रिम धन्यवाद करता हूं, जो अतिरिक्त बंदियों की रिहाई पर विचार कर रहे हैं." सितंबर में हुई यह रिहाई लुकाशेंको द्वारा अब तक की सबसे बड़ी कैदी माफी थी. विशेषज्ञों का मानना है कि लुकाशेंको अमेरिका के साथ संबंध सुधारने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं, ताकि वर्षों से चले आ रहे अलगाव और प्रतिबंधों से राहत मिल सके.

बेंगलुरु हवाई अड्डे पर सामूहिक नमाज पर भाजपा ने जताई नाराजगी, हवाई प्रशासन मौन

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सामूहिक नमाज अदा करने वाला एक वीडियो ने बड़ी सार्वजनिक बहस छेड़ दी है. इसे लेकर तमाम तरह की चर्चा हो रही है. इस बीच प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने तो राज्य सरकार के खिलाफ इसे लेकर अपना गुस्सा भी जाहिर किया है. बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के टर्मिनल-2 का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. वीडियो में कुछ लोग खुले में नमाज अदा करते नजर आ रहे हैं. इस वीडियो के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर बड़ा विवाद छिड़ गया है. विपक्षी दलों ने राज्य सरकार पर धार्मिक गतिविधियों को लेकर दोहरे रवैये का आरोप लगाया है. वीडियो सामने आने के बाद भाजपा के नेता विजय प्रसाद ने एक्स पर राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री प्रियांक खरगे से सवाल किया . उन्होंने लिखा, ₹बेंगलुरु एयरपोर्ट के टी-2 टर्मिनल में यह कैसे अनुमति दी गई? क्या इन लोगों ने नमाज पढ़ने के लिए पहले से कोई अनुमति ली थी? यह एक हाई-सिक्योरिटी जोन है₹ उन्होंने आगे लिखा, ₹सरकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की पथ संचलन जैसी गतिविधियों पर रोक लगाती है, लेकिन ऐसी घटनाओं पर आंख मूंद लेती है. यह गंभीर सुरक्षा चिंता का विषय है₹ वायरल वीडियो में जो लोग नमाज पढ़ते दिख रहे हैं, वे मक्का जाने वाले यात्रियों के परिजन बताए जा रहे हैं.

कबाड़ से कमाई : केंद्र सरकार के दफ्तरों में अक्टूबर महीने में चले स्वच्छता अभियान से बड़ी उपलब्धि हासिल

कबाड़ बेचकर 800 करोड़ रुपये से ज्यादा की हुई कमाई

एजेंसी। नयी दिल्ली

केंद्र सरकार के दफ्तरों में अक्टूबर महीने के दौरान चले एक महीने के विशेष स्वच्छता अभियान ने इस बार बड़ी उपलब्धि हासिल की है. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, इस अभियान के तहत कबाड़ बेचकर 800 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई हुई है. इतना ही नहीं, देशभर के मंत्रालयों और सरकारी दफ्तरों में करीब 233 लाख वर्ग फुट जगह भी खाली कराई गई है. यह रकम इतनी है कि इससे सात वंदे भारत ट्रेनें खरीदी जा सकती हैं. केंद्रीय कार्मिक मंत्री जितेंद्र सिंह ने बताया कि बीते पांच विशेष स्वच्छता अभियानों के दौरान सरकार ने कबाड़ बेचकर कुल 4,100 करोड़ रुपये जुटाए हैं. उनका कहना है कि यह राशि किसी बड़े अंतरिक्ष मिशन या कई चंद्रयान अभियानों के बजट के बराबर है. उन्होंने कहा कि इन अभियानों के जरिए न केवल जगह खाली हुई है, बल्कि सरकारी कामकाज में पारदर्शिता और दक्षता भी बढ़ी है.

जितेंद्र सिंह ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर पोस्ट कर बताया कि पिछले पांच सालों में इन अभियानों के जरिए 923 लाख वर्ग फुट जगह खाली कराई गई है. उन्होंने कहा कि यह इतनी बड़ी जगह है कि उस पर एक बड़ा मॉल या कोई विशाल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट खड़ा किया जा सकता है. सरकार ने 2021 से यह नियम तय किया है कि हर साल 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक स्वच्छता का यह विशेष अभियान चलाया जाएगा. इस अभियान का समन्वय प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग करता है, जिसमें 84 केंद्रीय मंत्रालय और विभाग मिलकर भाग लेते हैं. अभियान के दौरान न केवल दफ्तरों की सफाई पर जोर दिया गया, बल्कि पुरानी और अनुपयोगी फाइलों को भी हटाया गया. मंत्रालयों में लंबित मामलों को कम करने, फाइलों के निपटान और कबाड़ को राजस्व में बदलने पर खास ध्यान दिया गया. केंद्रीय मंत्रियों ने खुद अधिकारियों से मुलाकात कर अभियान की प्रगति की समीक्षा की, जबकि सचिवों और महानिदेशकों को हर हफ्ते स्थिति की रिपोर्ट देनी थी. केंद्रीय लोक निर्माण विभाग को सरकारी दफ्तरों के बाहर की जगहों की सफाई और कर्मचारियों को जुटाने की जिम्मेदारी दी गई थी.

अधिकारियों का कहना है कि सामान्य तौर पर हर मंत्रालय को साफ-सफाई का ध्यान रखना होता है, लेकिन अक्टूबर का यह विशेष अभियान स्वच्छता, कार्यकुशलता और कबाड़ से कमाई—तीनों मोर्चों पर एक साथ काम करने का अवसर देता है. इस बार की उपलब्धियों ने साफ कर दिया है कि "कबाड़ से कमाई" का यह मॉडल न सिर्फ दफ्तरों को साफ-सुथरा बना रहा है, बल्कि सरकारी खजाने में भी अरबों की आमदनी जोड़ रहा है.

स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 (***पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार**).
आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.